

फागुन - १

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३१, अङ्क २१

२०७९ फागुन १-१५

पूर्णाङ्क ७३५



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext. २२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्स: ४२००७४९, पो.ब.नं. २०४३८

Email: [info@supremecourt.gov.np](mailto:info@supremecourt.gov.np), [admin@supremecourt.gov.np](mailto:admin@supremecourt.gov.np) / Web: [www.supremecourt.gov.np](http://www.supremecourt.gov.np)

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

|  |              |
|--|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री टंकबहादुर मोक्तान, सर्वोच्च अदालत                              | - अध्यक्ष    |
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत                                | - सदस्य      |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री लालबहादुर कुँवर, सर्वोच्च अदालत                                | - सदस्य      |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पदमप्रसाद पाण्डेय, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य      |
| रजिस्ट्रार श्री निर्मला पौडेल, सर्वोच्च अदालत  | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन                              | - सदस्य      |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरिशंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन            | - सदस्य      |
| डा.कृष्णप्रसाद बस्याल, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय                      | - सदस्य      |
| सहरजिस्ट्रार श्री हरिराज कार्की, सर्वोच्च अदालत                                      | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री नगेन्द्रकेशरी पोखरेल

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत  
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री दिपक पोखरेल  
शाखा अधिकृत श्री योमा मुलपती  
शाखा अधिकृत श्री नरेश कार्की  
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे  
नायब सुब्बा श्री रेखा दाहाल  
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा  
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी  
कम्प्युटर अपरेटर श्री मञ्जु खडका  
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युत दाहाल

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखा

नायब सुब्बा श्री पुष्पा पराजुली

मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

मुद्रण अधिकृत श्री कान्छा श्रेष्ठ  
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल  
नायब सुब्बा श्री शिवहरि अधिकारी  
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल  
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी  
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति  
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल  
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले  
सिनियर कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी  
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर  
बुकबाइन्डर श्री सुमन राजथला  
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमिल्सिना  
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला  
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी  
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी  
कार्यालय सहयोगी श्री मोतीलाल चौधरी

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा

प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

|              |           |              |   |
|--------------|-----------|--------------|---|
| इजलास नं. १  | ११        | इजलास नं. ७  | ७ |
| इजलास नं. २  | ५         | इजलास नं. ८  | ३ |
| इजलास नं. ३  | ५         | इजलास नं. ९  | ७ |
| इजलास नं. ४  | ७         | इजलास नं. १० | ५ |
| इजलास नं. ५  | ११        |              |   |
| इजलास नं. ६  | ४         |              |   |
| <b>जम्मा</b> |           | <b>२२</b>    |   |
| <b>जम्मा</b> | <b>४३</b> |              |   |

कूल जम्मा ४३ + २२ = ६५

# नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)  
हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)

मा जानुहोला ।

## खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम [www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np) लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

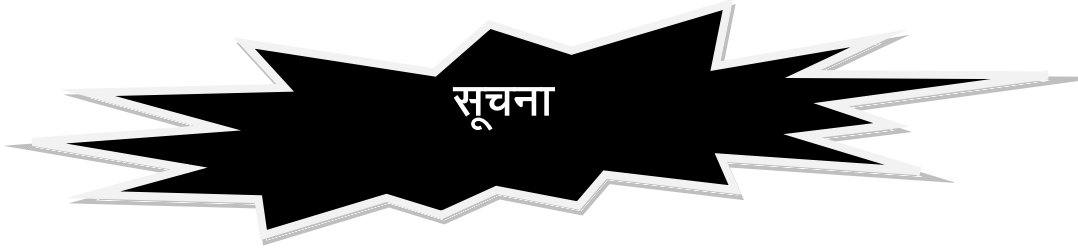
यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः

सअ बुलेटिन, २०७९, ... .. – १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०७९, फागुन – १, पृष्ठ १

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०



"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन" को "वार्षिक ग्राहक" बन्न चाहनेका लागि २०७६ वैशाख अङ्कदेखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई नेपाल कानून पत्रिका रु.७५ र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रु.४० कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

---

मूल्य रु.४०।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना

## विषयसूची

| क्र.सं.            | विषय                       | पक्ष / विपक्ष  | पृष्ठ          |
|--------------------|----------------------------|--|----------------|
| <b>इजलास नं. १</b> |                            |  | <b>१ - १३</b>  |
| १.                 | अंश सम्बन्ध विच्छेद        | अर्पणा गुरुड वि.<br>तिलकबहादुर गुरुड<br>भन्ने ओमप्रसाद गुरुड                               | १              |
| २.                 | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश     | मानबहादुर कडायत वि.<br>हेभी इक्युपमेन्ट<br>डिभिजन गोदावरी,<br>कैलालीसमेत                   | २              |
| ३.                 | जबरजस्ती करणी              | आशिष दर्नाल वि.<br>नेपाल सरकार, सचिन<br>भट्टराई वि. नेपाल<br>सरकार                         | ३              |
| ४.                 | उत्प्रेषण परमादेशसमेत      | अमिताभकुमार दास वि.<br>संस्कृति, पर्यटन तथा<br>नागरिक उड्डयन<br>मन्त्रालयसमेत              | ५              |
| ५.                 | लागु औषध (डाइजेल्याब समेत) | नेपाल सरकार वि.<br>मोहम्मद साजिद<br>अलीसमेत  | ६              |
| ६.                 | बन्दी प्रत्यक्षीकरण        | भिमसेन घिमिरेको<br>हकमा सरस्वती सञ्जेल<br>वि. महानगरीय प्रहरी<br>परिसर, टेकुसमेत           | ७              |
| ७.                 | उत्प्रेषण परमादेशसमेत      | डा. चन्द्रप्रसाद<br>रिसालसमेत वि. लोक<br>सेवा आयोग, केन्द्रीय<br>कार्यालय,<br>अनामनगरसमेत  | ८              |
| <b>इजलास नं. २</b> |                            |  | <b>१३ - १८</b> |
| ८.                 | निर्णय बदर                 | ऊर्जा मन्त्रालय, विद्युत्<br>विकास विभाग वि.<br>म्यादींखोला हाइड्रोपावर<br>कम्पनी प्रा.लि. | १०             |
| ९.                 | बन्दी प्रत्यक्षीकरण        | राजकुमार सिंह वि.<br>काठमाडौं जिल्ला<br>अदालत, तहसिल<br>शाखासमेत                           | ११             |
| १०.                | बन्दी प्रत्यक्षीकरण        | पूर्णप्रसाद शिवाकोटी वि.<br>झापा जिल्ला अदालत,<br>तहसिल शाखासमेत                           | १२             |
| ११.                | उत्प्रेषणसमेत              | श्यामपरी साह वि. उच्च<br>अदालत विराटनगर<br>मोरङसमेत  | १२             |
| १२.                | निषेधाज्ञा                 | प्रयाग सुतिहार वि.<br>ललितादेवी सुतिहार  | १३             |
| १३.                | जबरजस्ती करणी              | नेपाल सरकार वि. बुच्चु<br>भन्ने अहमद चुरौटे  | १४             |
| १४.                | जबरजस्ती करणी र डाँका      | सन्तोष खाँण भन्ने<br>लोकबहादुर खाँण वि.<br>नेपाल सरकार                                     | १५             |
| १५.                | बन्दी प्रत्यक्षीकरण        | रामफल सोनाहा वि.<br>प्रमुख बर्दिया राष्ट्रिय<br>निकुञ्ज कार्यालयसमेत                       | १६             |
| १६.                | उत्प्रेषण                  | गणेश उराव वि.<br>गंगाप्रसाद लिम्बूसमेत   | १७             |

| इजलास नं. ३ |                           |  | १८ - २३ |
|-------------|---------------------------|--|---------|
| १७.         | बन्दी प्रत्यक्षीकरण       | विवेक कुमालको हकमा हंश कुमाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलालीसमेत        | १८      |
| १८.         | मानव अपहरण तथा शरीर बन्धक | नेपाल सरकार वि. रीता गुरुडसमेत   | १९      |
| १९.         | उत्प्रेषण / परमादेश       | क्षेत्रबहादुर बुढाथापा वि. सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयसमेत | २०      |
| २०.         | उत्प्रेषण                 | विराटनगर अस्पताल प्रा.लि. वि. श्रम अदालतसमेत                               | २१      |
| २१.         | कर्तव्य ज्यान             | नेपाल सरकार वि. शंकरकुमार थापामगर  | २२      |
| इजलास नं. ४ |                           |  | २३ - २८ |
| २२.         | फैसला बदर                 | गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय वि. कान्छी मानन्धरसमेत                     | २३      |
| २३.         | निर्णय बदर                | सेमन्तराज चापागाईसमेत वि. चैत नारायण महर्जनसमेत                            | २४      |
| २४.         | निषेधाज्ञा                | मोहन महर्जनसमेत वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयसमेत                    | २४      |
| २५.         | उत्प्रेषण / परमादेशसमेत   | राजाराम लोनिया वि. पुनरावेदन अदालत बुटवलसमेत                               | २५      |

| २६.         | सम्बन्ध विच्छेद              | निरु महर्जन प्रजापति वि. महेश महर्जन, महेश महर्जन वि. निरु महर्जन प्रजापति  | २५      |
|-------------|------------------------------|---|---------|
| २७.         | ज्यान मार्ने उद्योग          | नेपाल सरकार वि. प्रमोदप्रसाद काहार  | २६      |
| २८.         | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार    | नेपाल सरकार वि. टंकमाया वि.क. भन्ने टंकमाया कामीसमेत, नेपाल सरकार वि. बुच्ची भन्ने लोचनदेवी वि.क., टंकमाया कामी वि. नेपाल सरकार | २७      |
| इजलास नं. ५ |                              |   | २८ - ३९ |
| २९.         | बन्दी प्रत्यक्षीकरण          | परिवर्तित नाम दरबारमार्ग ४(०७७/०७८) को हकमा कृष्ण तिमल्सिना वि. उच्च अदालत पाटनसमेत   | २८      |
| ३०.         | सरकारी छाप दस्तखत किले र ठगी | बसन्तराज स्याङ्तान वि. नेपाल सरकार  | २९      |
| ३१.         | जबरजस्ती करणी                | दुर्गाबहादुर निरोला वि. नेपाल सरकार   | २९      |
| ३२.         | बन्दी प्रत्यक्षीकरण          | हसन अंसारीको हकमा कृष्ण मुरारी रौनियार वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत बबरमहलसमेत   | ३१      |

|                    |   |  |                |
|--------------------|---|--|----------------|
| ३३.                | स्ववासी घर<br>जग्गा दर्ता हक<br>कायम  | शशिकुमार बिन्दुकारको<br>हकमा शान्ति बिन्दुकार<br>वि. रामबहादुर डङ्गोल                  | ३२             |
| ३४.                | कर्तव्य ज्यान   | नेपाल सरकार वि.<br>माइतीश्वरी राई  | ३३             |
| ३५.                | उत्प्रेषण   | डा.अनु शाक्य वि. लोक<br>सेवा आयोग, केन्द्रीय<br>कार्यालय,<br>अनामनगरसमेत               | ३५             |
| ३६.                | लिखत बदर<br>दर्ता बदर दर्ता   | सरस्वतीदेवीसमेत वि.<br>रामलोचन राय<br>यादवसमेत   | ३५             |
| ३७.                | निषेधाज्ञा  | शान्ती बस्नेतसमेत वि.<br>सीतादेवी श्रेष्ठ  | ३६             |
| ३८.                | अवैध टहरा र<br>इँट्टासमेतको<br>अवरोध हटाई,<br>हटक खिचोला<br>मेटाई चलन<br>चलाइपाउँ | रामङ्गोल महर्जनसमेत<br>वि. सचिन शाक्य  | ३७             |
| ३९.                | उत्प्रेषण   | डा. गजेन्द्रप्रसाद<br>रौनियार वि. प्रधानमन्त्री<br>तथा मन्त्रिपरिषद्को<br>कार्यालयसमेत | ३७             |
| <b>इजलास नं. ६</b> |   |  | <b>३९ – ४२</b> |
| ४०.                | जबरजस्ती<br>करणी  | प्रेमबहादुर बस्नेत वि.<br>नेपाल सरकार, कमल<br>थापा वि. नेपाल सरकार                     | ३९             |

|                    |                                       |  |                |
|--------------------|---------------------------------------|--|----------------|
| ४१.                | लिखत बदर,<br>दर्ता बदर,<br>दर्ता कायम | शाआवती राजवंशी वि.<br>अगमलाल राजवंशी,<br>प्रविणा श्रेष्ठ वि.<br>अगमलाल<br>राजवंशीसमेत    | ३९             |
| ४२.                | उत्प्रेषण                             | केदार खत्री क्षेत्रीसमेत<br>वि. कर्जा सूचना केन्द्र<br>कमलादी,<br>काठमाडौंसमेत           | ४०             |
| ४३.                | उत्प्रेषणयुक्त<br>परमादेश             | अध्यक्ष किशोर<br>श्रेष्ठसमेत वि.<br>प्रधानमन्त्री तथा<br>मन्त्रिपरिषद्को<br>कार्यालयसमेत | ४१             |
| <b>इजलास नं. ७</b> |                                       |  | <b>४२ – ४८</b> |
| ४४.                | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर                | नेपाल सरकार वि.<br>गोपालबहादुर<br>बुढाक्षेत्रीसमेत                                       | ४२             |
| ४५.                | जबरजस्ती<br>चोरी                      | नेपाल सरकार वि.<br>धनलाल थोकरसमेत  | ४३             |
| ४६.                | लागुऔषध<br>(ब्राउन सुगर)              | नेपाल सरकार वि. शंकर<br>पाण्डेसमेत   | ४३             |
| ४७.                | नकबजनी<br>चोरी                        | नेपाल सरकार वि.<br>दीपक नेपालीसमेत   | ४४             |
| ४८.                | जबरजस्ती<br>करणी                      | नेपाल सरकार वि.<br>विशाल थापा  | ४६             |
| ४९.                | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर                | नेपाल सरकार वि.<br>विमल विश्वकर्मा   | ४६             |

|             |   |  |         |
|-------------|---|--|---------|
| ५०.         | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                      | क्षेत्रप्रताप रावत वि.<br>उच्च अदालत सुर्खेत,<br>जुम्ला इजलाससमेत                            | ४७      |
| इजलास नं. ८ |   |  | ४८ - ५० |
| ५१.         | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                      | चक्रबहादुर खत्रीको<br>हकमा प्रतिक चन्द वि.<br>जिल्ला प्रहरी कार्यालय,<br>खोटाङसमेत           | ४८      |
| ५२.         | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                      | कैलाश भन्ने हिरालाल<br>पुनसमेत वि. ललितपुर<br>जिल्ला अदालतसमेत                               | ४९      |
| ५३.         | जबरजस्ती<br>करणी                            | चुडादेव तामाङ वि.<br>नेपाल सरकार   | ४९      |
| इजलास नं. ९ |   |  | ५० - ५५ |
| ५४.         | घर जग्गा<br>खिचोला<br>मेटाई चलन<br>चलाइपाउँ | हरिराज सिंहसमेत वि.<br>बलीभद्र भट्ट  | ५०      |
| ५५.         | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                      | होमबहादुर खड्काको<br>हकमा सुरेसराज सेढाई<br>वि. इलाका प्रहरी<br>कार्यालय, गजुरी<br>धादिङसमेत | ५१      |
| ५६.         | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                      | रामलाल विश्वकर्माको<br>हकमा सुदिप ढकाल वि.<br>जिल्ला प्रहरी कार्यालय,<br>चितवनसमेत           | ५२      |

|              |   |  |         |
|--------------|---|--|---------|
| ५७.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                            | सरल रानामगरको<br>हकमा बुद्धिमाया सुनारी<br>राना मगर वि. काठमाडौं<br>जिल्ला अदालतसमेत | ५२      |
| ५८.          | जग्गा हक<br>कायम<br>खिचोला मेटाई<br>दर्ता गरिपाउँ | मु.स. गर्ने जितेन्द्रमान<br>सिंह भण्डारी वि.<br>देवीमाया गुरुङ                       | ५३      |
| ५९.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                            | धनबहादुर तामाङ वि.<br>उच्च अदालत<br>पाटनसमेत   | ५४      |
| ६०.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                            | सुनिल थापाको हकमा<br>कृष्ण तिमल्सीना वि.<br>काठमाडौं जिल्ला<br>अदालतसमेत             | ५५      |
| इजलास नं. १० |   |  | ५५ - ६० |
| ६१.          | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर                            | नेपाल सरकार वि.<br>खुमबहादुर के.सी.  | ५५      |
| ६२.          | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर                            | नेपाल सरकार वि.<br>खुमबहादुर के.सी.  | ५६      |
| ६३.          | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर                            | नेपाल सरकार वि.<br>कुमार थापासमेत  | ५७      |
| ६४.          | लागु औषध<br>(ब्राउन सुगर)                         | नेपाल सरकार वि. युदिन<br>भन्ने दुर्गा भट्टराई  | ५८      |
| ६५.          | लागु औषध<br>(ब्राउन सुगर)                         | नेपाल सरकार वि.<br>जेनराज भन्ने जंगली<br>शाही  | ५९      |

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७२-CI-१९७०, अंश सम्बन्ध विच्छेद, अर्पणा गुरुङ वि. तिलकबहादुर गुरुङ भन्ने ओमप्रसाद गुरुङ

सगोलमा रहेको सम्पत्ति र सोसम्पत्तिको प्रयोग गरी बढेबढाएकोलाई समेत सगोलको सम्पत्ति मानिने र कुनै अंशियारले आफ्नो ज्ञान वा सिप वा प्रयासबाट आर्जन गरेको सम्पत्तिलाई स्वआर्जनको सम्पत्ति मानेको पाइन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी ओमप्रसाद गुरुङ विवादित कि.नं. ५० को जग्गा बेलायती सेनामा सेवा प्रवेश गरेको करिब ७ वर्षपछि सगोलका अंशियारभन्दा बाहिरको रामेश्वर जि.सीसँग र.नं. २१५४ बाट खरिद गरेको देखिएको र तेजमाया गुरुङको नाममा रहेको कि.नं. ५० को जग्गा पनि अंशियार नरहेका प्रेमबहादुर दुरासँग र.नं. ७२७ मिति २०६१।४।२४ मा खरिद गरी लिएको देखिन्छ । साथै यी प्रतिवादीहरूले सगोलको सम्पत्तिबाट बढेबढाएको नभई आफ्नो ज्ञान, सिप वा प्रयासबाट आर्जन गरेको भनी आयस्रोतको रूपमा पेस गरेको कागजातसमेत नेपालबाहिरको रहेको र यस विषयमा विवाद हुनुभन्दा अगाडिको रहेको अवस्थामा समेत त्यसलाई अन्यथा मान्नुपर्ने देखिँदैन । साथै यी जग्गाहरू सगोल, पैतृक सम्पत्तिबाट खरिद गरेको र सगोलकै आर्जनबाट बढे बढाएको भन्ने कुरा वादीले ठोस प्रमाणद्वारा पुष्टि गर्नसमेत सकेको नदेखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६ को खण्ड (क) मा "एकाघरसँगका अंशियारहरूमध्ये जुनसुकै अंशियारका नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको भए तापनि सो व्यवस्था अन्यथा

प्रमाणित नभएको अवस्थामा आकर्षित हुने हो । यस मुद्दामा प्रतिवादीबाट कि.नं. ४९ र ५० का जग्गाहरू निजी भनी दाबी लिएको र सोको पुष्टि हुने गरी प्रमाणसमेत पेस गरेको अवस्थामा सगोलको भनी मान्न सक्ने अवस्थासमेत रहेन । त्यसैले अंशबन्डासम्बन्धी प्रचलित कानूनी व्यवस्थाको आधारमा पुनरावेदक वादीबाट प्रतिवादीको नाममा रहेको जग्गासमेत बन्डा लाग्ने गरी सुरु सुनसरी जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलामा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराबाट प्रतिवादी ओमप्रसाद गुरुङ र निजको श्रीमतीको नाममा रहेको कि.नं. ४९ र ५० लाई निजी ठहर्‍याई सोबाहेक अन्य जग्गा बन्डा हुने गरी भएको फैसला अन्यथा नभई मनासिब नै देखियो । तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराबाट फैसला उल्टी गरी निजी आर्जनको घरजग्गा नभई सगोलको सम्पत्ति रहेको हुँदा सोसमेत वादीले अंशसमेत पाउने गरी इन्साफ गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः उल्लिखित विवेचित कानूनी आधार र कारणबाट प्रस्तुत मुद्दामा विपक्षी पति तिलकबहादुर गुरुङसँग सम्बन्ध विच्छेद गरी अंश पाउँ भन्ने मुख्य फिराद दाबी रहेकोमा सुरु कास्की जिल्ला अदालतले मिति २०७२।३।५ मा वादी अर्पणा गुरुङ र प्रतिवादी तिलकबहादुर गुरुङबिचको लग्ने स्वास्नीको सम्बन्ध विच्छेद हुने ठहरी वादीका पतिका मूल अंशियार ४ जनाबिच अंशबन्डा हुन बाँकी देखिएकोले तायदातीमा उल्लिखित सम्पूर्ण सम्पत्तिलाई मूल अंशियारहरूबिच नरमगरम मिलाई ४ भाग लगाई ४ भागको १ भाग अंश वादीको पतिले पाउने र यसरी पतिले पाउने अंशलाई पुनः २ भाग लगाई एक भाग वादीको नाममा हुने गरी भएको फैसलामा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराले वादी र प्रतिवादी तिलकबहादुर गुरुङबिच लग्ने स्वास्नीको सम्बन्ध विच्छेद हुने गरी ठहरेको फैसलालाई सदर गरेको र तायदातीमा पेस भएको सम्पत्तिमा मूल अंशियारमध्येका ओमप्रसाद गुरुङ र

निजको श्रीमतीको नाममा रहेका कि.नं. ४९ र ५० लाई निजी कायम गरी सोबाहेकको अंशहक सम्बन्धमा सदर गरी मिति २०७२।१।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): शिवबहादुर थापा  
कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

**इति संवत् २०७७ साल माघ १८ गते रोज १ शुभम् ।**

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७३-WO-११८७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, मानबहादुर कडायत वि. हेभी इक्युपमेन्ट डिभिजन गोदावरी, कैलालीसमेत**

निवेदक मानबहादुर कडायतको अनिवार्य अवकाश प्रयोजनको लागि निजको उमेर गणना गर्दा सबैभन्दा पहिले अवकाश हुने मिति निजले २०३८ सालमा भरेको पहिलो सिटरोलमा उल्लिखित जन्ममिति २०१४।१।०१ लाई नै आधिकारिक प्रमाण मान्नुपर्ने देखियो । यस अवस्थामा निजामती किताबखानाले सोही जन्ममितिका आधारमा मिति २०७२।१।०१ देखि अनिवार्य अवकाश हुने भनी गरेको पत्राचार र तदनु रूप हेभी इक्युपमेन्ट डिभिजन गोदावरी कैलालीले गरेको अनिवार्य अवकाश सो हदसम्म कानूनसम्मत नै रहेको देखिन आउने ।

निजामती किताबखानाबाट निवेदकको ५८ वर्ष उमेर मिति २०७२।१।३० मा पूरा भएकोले मिति २०७२।१।०१ देखि अनिवार्य अवकाश दिनु भनी निज अवकाश हुने मितिभन्दा १ वर्ष १ महिना ४ दिनपछि मात्र मिति २०७३।१।१५ मा पत्राचार गरेको देखिन्छ । निजामती किताबखाना कर्मचारीहरूको नियुक्ति भएदेखि अवकाश हुँदासम्म ती कर्मचारीहरूको सेवासँग सम्बन्धित विवरणहरू अद्यावधिक गर्ने काम, कर्तव्य र दायित्व भएको निकाय हो । कर्मचारी कार्यरत

रहेको कार्यालयले पनि आफ्नो कर्मचारी कहिले अवकाश हुने हो भन्ने कुराको विवरण अद्यावधिक गरी अवकाश हुने मितिअगावै सम्बन्धित कर्मचारी र निकायलाई सोको जानकारी गराउनुपर्ने दायित्व सम्बन्धित कार्यालयकोसमेत रहन्छ । कर्मचारीहरूको सेवासँग सम्बन्धित विवरण अद्यावधिक गर्ने निकायको रूपमा रहेको निजामती किताबखाना र यी निवेदक मानबहादुर कडायत कार्यरत रहेको हेभी इक्युपमेन्ट डिभिजन गोदावरी कैलालीले निवेदकलाई यथासमयमै अवकाशको जानकारी गराइएको भन्ने मिसिलबाट देखिँदैन । यी निवेदक एउटा सामान्य लेखपढ गर्नसम्म जानेको कर्मचारी देखिँदा आफ्नो अवकाश हुने मिति निज स्वयम्ले जानकारी राख्नुपर्ने भन्ने विपक्षीको लिखित जवाफ तर्कसङ्गत मान्न सकिँदैन । एउटा कर्मचारी आफू अवकाश हुने दिन किटान नहुँदासम्म नियमित रूपमा कार्यालयमा उपस्थित भई कार्यरत रहेको अवस्थामा सो अवधिमा निजले गरेको सेवाबापत निजलाई प्रचलित कानूनबमोजिम उपलब्ध गराइएको पारिश्रमिकलगायतका सुविधाबापतको रकम फिर्ता माग गर्नु न्यायको सामान्य दृष्टिमा पनि उचित नहुने ।

कुनै व्यक्तिले काम गरिसकेपछि सोबापतको पारिश्रमिकलगायत कानूनले तोकेको सुविधा प्राप्त गर्नु निजको अधिकार रहन्छ । नेपालको संविधानको धारा ३४ ले श्रमसम्बन्धी हकलाई व्यक्तिको मौलिक हकको रूपमा उल्लेख गरेको छ । उक्त धारा ३४ (१) मा "प्रत्येक श्रमिकलाई उचित श्रम अभ्यासको हक हुने छ" भन्ने र धारा ३४ (२) मा "प्रत्येक श्रमिकलाई उचित पारिश्रमिक, सुविधा तथा योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षाको हक हुने छ" भन्ने उल्लेख गरेको पाइन्छ । धारा ३४ (१) को स्पष्टीकरणमा "यस धाराको प्रयोजनका लागि श्रमिक भन्नाले पारिश्रमिक लिई रोजगारदाताका लागि शारीरिक वा बौद्धिक कार्य गर्ने कामदार वा मजदुर सम्झनुपर्छ" भनी उल्लेख भएबाट

कुनै पनि व्यक्तिले गरेको श्रम वा योगदानबापत निजले प्राप्त गर्ने कानूनबमोजिमको पारिश्रमिकलगायतका सुविधाबाट बन्चित गरिनु संविधानको उक्त प्रावधान तथा न्यायको सर्वमान्य सिद्धान्तसमेतको विपरीत हुन जाने।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट निवेदक मानबहादुर कडायतलाई मिति २०७२।१०।१ देखि लागु हुने गरी अनिवार्य अवकाश दिनु भन्ने निजामती किताबखाना हरिहरभवन, ललितपुरको पत्रसंख्या ०७३/०७४ च नं. ५१९१ मिति २०७३।१।१५ को पत्र र सो पत्रको आधारमा मिति २०७२।१०।१ देखि लागु हुनेगरी अनिवार्य अवकाश दिएको हेभी इक्युपमेन्ट डिभिजन गोदावरी, कैलालीको च.नं.२२७ मिति २०७३।१।२।६ को पत्र उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी मेरो नागरिकताको प्रमाणपत्रमा उल्लिखित उमेर तथा जन्ममिति २०१६।२।१७ लाई नै कायम गरी मिति २०७४।२।१७ गते मात्र अवकाश हुने गरी पत्र दिनु भनी परमादेशको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने रिट निवेदन सो हदसम्म खारेज हुन्छ। मिति २०७२।१०।१ देखि निवेदक मानबहादुर कडायतले उपभोग गरेको तलब, महंगी भत्ता, बिमा, थप चाडपर्व खर्च, पोसाक भत्ता र कर्मचारी सञ्चयकोष थपसमेत यकिन गरी सरकारी कोषमा दाखिला गराउने भन्ने निजामती किताबखाना हरिहरभवन, ललितपुरको पत्र संख्या ०७३/०७४ च नं. ५१९१ मिति २०७३।१।१०।५ को पत्र र सो पत्रको आधारमा निवेदकले अनिवार्य अवकाश प्राप्त गरेको मिति २०७२।१०।१ पश्चात् निजले काम गरेको अवधिसम्मको तलब, महंगी भत्ता, बिमा, थप चाडपर्व खर्च, पोसाक भत्ता र कर्मचारी सञ्चयकोष थपसमेत गरी जम्मा रु.३,५८,९६२/२० (तीन लाख अन्ठाउन्न हजार एक सय बैसठ्ठी रूपैयाँ बिस पैसा) सरकारी कोषमा दाखिला गर्नु भन्ने हेभी इक्युपमेन्ट डिभिजन गोदावरी कैलालीको च.नं. २२७ मिति २०७३।१।२।६

को पत्र सो हदसम्म उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने।

इजलास अधिकृत: कुबेर पाण्डे

कम्प्युटर: रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल चैत्र ३१ गते रोज ३ शुभम्।

३

मान्या.श्री दीपककुमार कार्की र मान्या.श्री सुष्मालता माथेमा, जबरजस्ती करणी, ०७३-CR-१४७१, ०७३-CR-१४७२, आशिष दर्नाल वि. नेपाल सरकार, सचिन भट्टराई वि. नेपाल सरकार

जबरजस्ती करणीसम्बन्धी तत्कालको कानूनी व्यवस्था हेर्दा, मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. मा "कसैले कुनै महिलालाई निजको मन्जुरी नलिई करणी गरेमा वा सोह्र वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिकालाई निजको मन्जुरी लिई वा नलिई करणी गरेमा निजले जबरजस्ती करणी गरेको ठहर्छ" भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ। यसरी कसैले महिलाको मन्जुरी नलिई करणी गरेको अवस्थामा जबरजस्ती करणीको रूपमा परिभाषित गरेको देखिन्छ। यस मुद्दामा जबरजस्ती करणी गरे नगरेको यकिन भन्न नसकिने र हाइमन जाली नभएको, पुरुष जातिको वीर्य भएनभएको खुलाउन नसकिने, निजको योनि, छाती तथा अन्य भागमा निलडाम चोटपटक, घाउ, खतसमेत नभएको भन्ने बेहोरा निज पीडित ग-९ को शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लेख भएको देखिन्छ। जबरजस्ती करणीको कसुर स्थापित गर्ने प्रमाणका लागि शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनसमेत आधार हुने भए तापनि शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन कुन समयमा भयो भन्नेसमेतका आधारमा विश्लेषण गर्नुपर्ने देखिन्छ। यी पीडित ग-९ लाई वारदात भएको रात प्रतिवादीमध्येको आशिष दर्नालको घरमा राखी भोलिपल्ट मात्र डरधम्की दिई छोडिदिएको अवस्थामा प्रहरीले उद्धार गरेको देखिन्छ। कन्याजाली च्यातिएको देखिनु, यौनाङ्ग वा शरीरको अन्य भागमा सङ्घर्षको चिह्न देखिनु, वीर्य स्खलन भएको देखिनु जबरजस्ती

करणीको कसुर ठहर हुनको लागि महत्त्वपूर्ण प्रमाण भएको तथ्यमा विवाद छैन । तथापि सङ्घर्षको कुनै चिह्न नदेखिएको वा पुरुषजातको वीर्य नभएको कारणले मात्रै जबरजस्ती करणी भएको होइन भन्ने अवस्था पनि हुँदैन । किशोरावस्था पार गरिसकेको महिलाको कन्याजाली विविध कारणले च्यातिनु अस्वाभाविक होइन । तर कन्याजाली नभएको अवस्था भए पनि कुनै महिलाउपर मन्जुरीविना भएको करणी नै प्रतिवादीहरूलाई सजाय दिनका लागि पर्याप्त हुन्छ । हाम्रो जस्तो सामाजिक मान्यता रहेको मुलुकमा महिलामाथि हुने यस खालका यौनजन्य अपराधमा आफू पीडित नभई कसैप्रति लक्षित गरी जाहेरी दिने बाध्यता हुने देखिँदैन । पीडित र यी प्रतिवादीहरूबिच पुरानो कुनै रिसझबीसमेत देखिँदैन । यसरी पीडितले दिएको किटानी जाहेरी र अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष मौकामा गरेको बयानमा कसुरमा साबिती रही तथा वारदातस्थलमा प्रतिवादीहरूको उपस्थिति रहेको भनी अदालतमा गरेको बयान एवम् निज पीडितलाई एक रातभर प्रतिवादीमध्येको घरमा राखी भोलिपल्ट उर, धम्की दिई छोडेको संवेदनशील अवस्थामेतको तथ्यको आधारमा पीडितउपर जबरजस्ती करणी भएको होइन भनी प्रतिवादीहरूलाई सामूहिक जबरजस्ती करणीजस्तो यौनजन्य कसुरमा हुने सजायबाट उन्मुक्ति दिने अवस्था आएन । यसर्थ निज प्रतिवादीहरूबाट पीडितउपर सामूहिक जबरजस्ती करणीको कसुर भएको भन्ने देखिन आउने ।

यस अदालतमा पुनरावेदन गर्नेमध्येको सचिन भट्टराई वारदात हुँदाका बखत १७ वर्ष रहेको भन्ने कुरा सुरु अभियोगपत्रबाट देखिन्छ । बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा २(ञ) ले १८ वर्ष नपुगेको व्यक्तिलाई बालबालिका भनी परिभाषा गरेको देखिन्छ । मुलुकी अपराध संहिताको दफा ४५(४) मा "सोह्र वर्ष र सोह्र वर्षभन्दा माथि अठार वर्षभन्दा कम उमेरको व्यक्तिले कुनै कसुर गरेमा निजलाई उमेर

पुगेको व्यक्तिलाई कानूनबमोजिम हुने सजायको दुई तिहाइ सजाय हुने" व्यवस्था गरेको पाइन्छ । यसैगरी केही नेपाल ऐन संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्न बनेको ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ख) मा "कुनै कानूनअन्तर्गत कुनै अदालतमा दायर भएको कुनै फौजदारी कसुरका मुद्दामा सजाय गर्नुपर्दा सोही कानूनबमोजिम नै गर्नुपर्ने छ तर कुनै फौजदारी कसुरमा सजाय मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएभन्दा बढी हुने रहेछ भने मुलुकी अपराध संहिताबमोजिम नै हुने छ" भन्ने व्यवस्था देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा पुनरावेदक / प्रतिवादी सचिन भट्टराई वारदात हुँदाको समयमा १७ वर्ष रहेको देखिँदा निज बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम बालक रहेको र निजलाई कैद सजायको हकमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४५(४) बमोजिम १० (दश) वर्ष कैदको दुई तिहाइले ६ वर्ष ८ महिनासम्म कैद हुने देखियो । यसैगरी, पुनरावेदन नगरी बसेका प्रतिवादी बडे भन्ने सन्दिप दर्जीसमेत वारदात हुँदाका बखत १७ वर्ष रहेको भन्ने कुरा सुरु अभियोगपत्रबाट देखिन्छ । मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १४४ को उपदफा (२) मा "तल्लो अदालतले गरेको फैसलाउपर कुनै खास कसुरदारको वा प्रतिवादीको मात्र पुनरावेदन परेको रहेछ र त्यस्तो पुनरावेदनको निर्णय गर्दा पुनरावेदन नगर्ने कसुरदार वा प्रतिवादीको हकमा तल्लो अदालतको फैसला फरक पर्ने देखिएमा पुनरावेदन सुन्ने अदालतले सोको कारण खुलाई त्यस्तो कसुरदार वा प्रतिवादीको हकमा पनि उपदफा (१) मा उल्लिखित अधिकारको प्रयोग गरी कानूनबमोजिम फैसला गर्न सक्ने" व्यवस्था रहेको पाइन्छ । यसरी पुनरावेदन नगरेका सन्दिप दर्जीको उमेर हालको प्रचलित बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम बालक रहेको र निजलाईसमेत कैद सजायको हकमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४५(४) बमोजिम १० वर्ष कैदको दुई तिहाइले ६ वर्ष ८ महिना

कैद सजाय हुने।

अतः प्रतिवादीहरूले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १, ३(४) र ३(क) नं. को कसुरमा ऐ. महलको ३ (४) नं. अनुसार थप सजाय गरी ऐ. को १० नं. बमोजिम क्षतिपूर्ति दिलाई भराइपाउँ भन्नेसमेत अभियोगदाबी रहेकोमा सुरु झापा जिल्ला अदालतले प्रतिवादीमध्येका भुपेन्द्र वि.क. फरार रहेकाले निजको हकमा मुलतबी राख्ने र अन्य प्रतिवादीहरूलाई जबरजस्ती करणी महलको ३(४) नं. बमोजिम जनही पाँच वर्ष कैद र सामूहिक रूपमा जबरजस्ती करणी गरेतर्फ सोहीमहलको ३(क) नं. बमोजिम थप जनही पाँच वर्ष कैदसमेत हुने र प्रतिवादीहरूबाट जनही रु. २५,०००/- (पच्चिस हजार) का दरले पीडितलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने गरी मिति २०७०।१।१० मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७३।७।८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। तथापि, पुनरावेदक प्रतिवादी सचिन भट्टराई र प्रतिवादी सन्दिप दर्जी वारदातको समयमा १७ वर्षको भएको उल्लेख भएको र प्रचलित बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम बालक भएकाले निजहरूको कैदको हकमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४५(४) बमोजिम दुई तिहाइले हुने गरी ६ वर्ष ८ महिना कैद सजाय हुने। पुनरावेदक प्रतिवादीहरूको पुनरावेदन जिकिर भने पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत : शिवबहादुर थापा

कम्प्युटर - कृष्णमाया खतिवडा

**इति संवत् २०७७ साल माघ २२ गते रोज ५ शुभम्।**

४

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-WO-०५१६, उत्प्रेषण, परमादेशसमेत, अमिताभकुमार दास वि. संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयसमेत

विज्ञापन नं. ५९।०७४।०७५ (महिला)

प्राविधिक सेवा, मेकानिकल इन्जिनियरिङ्ग समूह, दशौं तह, उपनिर्देशक पदको माग पद संख्या १(एक) का लागि लिखित परीक्षाबाट अन्तर्वार्ताका लागि छनौट भएकी उम्मेदवार विपक्षी प्रभा शर्मा विज्ञापन नं.५९।०७४।०७५ खुलातर्फ सिफारिस भइसकेको अवस्था हुँदा उक्त पदका लागि कुनै उम्मेदवार बाँकी नरहेको भनी नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण बबरमहल, काठमाडौंले प्रकाशन गरेको अन्तिम नतिजा प्रकाशनसम्बन्धी सूचनाबाट देखिने।

प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सर्वाधिक अङ्क प्राप्त गर्ने व्यक्ति नै योग्यताक्रममा अगाडि रहनु स्वाभाविक नै हो। योग्यता प्रणालीमा समान प्रतिस्पर्धीहरूबिच समान तवरले परीक्षा सञ्चालन गरी सर्वोत्कृष्टताको आधारमा योग्यताक्रम निर्धारण हुन्छ। यी निवेदक र विपक्षी प्रभा शर्मा खुला प्रतियोगितामा समान हैसियतबाट प्रतिस्पर्धा गरेको देखिन्छ। उक्त खुला प्रतिस्पर्धामा निवेदकको भन्दा विपक्षी प्रभा शर्माको कुल प्राप्ताङ्कको अङ्कभार बढी भएको भन्ने आधारमा निजलाई खुलातर्फको पदमा योग्यताक्रमको आधारमा सिफारिस गर्ने गरी र निवेदकलाई वैकल्पिक उम्मेदवारको रूपमा सिफारिस गर्ने गरी भएको पदपूर्ति समिति, नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण बबरमहल, काठमाडौंको मिति २०७५।७।१५को निर्णय र तदनुरूप निजलाई नियुक्त गरेको कार्य नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण कर्मचारीहरूको सेवाका सर्त र सुविधासम्बन्धी नियमावली, २०५६ को नियम ३.४ को उपनियम (१) को खण्ड (ग) मा "खण्ड ख बमोजिम सञ्चालन गरिएको खुला तथा आन्तरिक प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सबैभन्दा बढी अङ्क प्राप्त गर्ने उम्मेदवारलाई योग्यता क्रमको आधारमा पूर्ति गर्नुपर्ने पद संख्याअनुसार नयाँ नियुक्ति तथा बढुवाको लागि अख्तियारवालासमक्ष सिफारिस गर्ने।" भन्ने

कानूनी व्यवस्था अनुरूपको नै रहेको देखिने ।

निवेदकको संविधान प्रदत्त मौलिक हकमा यो यसरी आघात परेको वा कुनै कानून संविधानविपरीत रहेको भनि पुष्टि हुने स्पष्ट आधार र प्रमाणसहित निवेदकले दाबी लिन सकेको पाइँदैन । संवैधानिक उपचारको दाबी गर्दा स्पष्ट आधार लिई प्रस्ट कारण खुलाई आफूलाई मर्का परेको बेहोरा उल्लेख गर्नुपर्दछ । यी निवेदक र विपक्षी प्रभा शर्मा खुलातर्फको प्रतियोगितात्मक परीक्षामा समान रूपमा सहभागी भएको देखिन्छ । नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरणबाट भएको विज्ञापनलाई यी निवेदकले अन्यथा भन्न सकेको पाइँदैन । प्रचलित कानूनबमोजिम भएको विज्ञापनलाई स्वीकार गरी यी निवेदकले परीक्षा फारम भरी परीक्षाका सम्पूर्ण तहमा सहभागी भई कानूनबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी पदपूर्ति समिति, नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण बबरमहल, काठमाडौँबाट मिति २०७५।७।१५ मा कुल प्राप्ताङ्कको आधारमा नतिजा प्रकाशनको निर्णय भएको देखिँदा उक्त निर्णयले निवेदकको संविधान प्रदत्त मौलिक हकमा आघात परेको भनी मान्न नमिल्ने ।

अतः विज्ञापन नं. ५९।०७४।०७५ (महिला) प्राविधिक सेवा, मेकानिकल इन्जिनियरिङ्ग समूह, दशौँ तह, उपनिर्देशक पदको माग पद संख्या १(एक) रिक्त राखी उक्त विज्ञापनको खुलातर्फको पदमा विपक्षी प्रभा शर्मालाई सिफारिस गर्ने गरी भएको पदपूर्ति समिति, नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण बबरमहल, काठमाडौँको मिति २०७५।७।१५ को निर्णय र सोको आधारमा भएका नियुक्तिसमेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरी म निवेदकलाई खुलातर्फको पदमा सिफारिस गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदक अमिताभकुमार दासको निवेदन जिकिर नेपालको संविधान, प्रचलित कानून, समावेशिता र प्रतिस्पर्धात्मक प्रतियोगिताको मान्य सिद्धान्तसमेतका आधारमा मनासिब नदेखिँदा खारेज

हुने ।

इजलास अधिकृत: कुबेर पाण्डे

कम्प्युटर: रमला पराजुली

**इति संवत् २०७७ साल चैत्र ३१ गते रोज ३ शुभम् ।**

- यसै प्रकृतिको ०७५-WO-०७४२, उत्प्रेषण, परमादेशसमेत, अमिताभकुमार दास वि संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार आदेश भएको छ ।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७६-CR-१४५१, लागु औषध (डाइजेल्याबसमेत), नेपाल सरकार वि. मोहम्मद साजिद अलीसमेत**

प्रतिवादी इम्तीयाज राईन अली वर्ष २१ को र अर्का प्रतिवादी साजिद अली वर्ष १८ को होस्टलमा बसी अध्ययनरत विद्यार्थी रहेको पाइन्छ । निजहरू अध्ययनरत विद्यार्थी भएको देखिँदा निजहरू भविष्यमा देशका लागि महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति हुनसक्ने हुँदा निजहरूलाई आफूबाट भएको गल्तीलाई महसुस गराई भविष्यमा यस्तो कार्य नदोहोर्नु भन्नेतर्फ पनि अदालत सजग हुनुपर्छ । कसुरको अनुपातमा सजाय गर्नुपर्ने गरी तजबिजी अधिकार (Discretionary Power) अदालतलाई प्रदान गरेको पाइँदा सजायको न्यूनतम र अधिकतम हद ऐनले नै निर्धारण गरेको अवस्थामा कसुरको गम्भीरताको आधारमा कसुरको मात्रा निर्धारण गरी सोही अनुपातमा सजाय गर्ने गरी न्यायपूर्ण ढङ्गले तजबिजी अधिकारको प्रयोग गर्नुपर्ने भनी नेपाल सरकार विरुद्ध शेर भन्ने शेरबहादुर लामासमेत (ने.का.प. २०६५, अङ्क-७, नि.नं-७९९६) भएको जिउ मास्ने, बेच्ने मुद्दामा सिद्धान्त प्रतिपादन भएको देखिन्छ । यस मुद्दाको सन्दर्भमा पनि प्रतिवादीहरू कम उमेरको रहेको देखिँदा निजहरूलाई सजाय निर्धारण गर्दा पनि तजबिजी अधिकारको प्रयोग

गर्नुपर्ने।

लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(झ) मा माथि खण्ड (ज) मा लेखिएदेखि बाहेक अन्य निषेधित कार्य गर्ने व्यक्तिलाई दुई वर्षदेखि दश वर्षसम्म कैद र एक लाख रुपैयाँदेखि बिस लाख रुपैयाँसम्म जरिवाना गर्न सक्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको परिप्रेक्ष्यमा यी प्रतिवादीहरूले लागुऔषध सञ्चयसम्म गरेको देखिन्छ भने निजहरूले उक्त लागु औषध कोही कसैलाई बिक्री वितरण गरेको देखिँदैन। कानूनको मकसद बढीभन्दा बढी सजाय गर्ने मात्र नभई कुनै पनि अपराध पुनः गर्नबाट रोकी उनीहरूलाई पश्चाताप बोध गराउनुसमेत भएको हुँदा यी प्रतिवादीहरूलाई कम सजाय (तीन वर्ष कैद) गर्दा पनि कानूनको मकसद पूरा हुने देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई कानूनले तोकेको उच्चतम वा अधिकतम सजाय गर्नु न्यायपूर्ण हुने नदेखिने।

निज प्रतिवादीहरू मोहम्मद साजिद अली र इम्तियाज राईन कम उमेरका अध्ययनरत विद्यार्थी रहनुका साथै निजहरूले योभन्दा पहिले कुनै कसुरमा सजाय पाएकोसमेत नदेखिँदा निजहरूलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(झ) बमोजिम सजाय गर्नुपर्नेमा कम सजाय र जरिवाना गर्ने गरी भएको फैसला मिलेको छैन भन्ने पुनरावेदन जिकिर र विद्वान् सहन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत नसकिने।

सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी इम्तियाज राईन अलीलाई ६ वर्ष कैद र रु.६,००,०००।- (छ लाख) जरिवाना र अर्को प्रतिवादी मोहम्मद साजिद अलीलाई ५ वर्ष कैद र रु.५,००,०००।- (पाँच लाख) जरिवाना गर्ने गरी मिति २०७५।१२।१२ मा भएको फैसलालाई केही उल्टी गरी यी प्रतिवादीहरूलाई लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(झ) बमोजिम जनही ३ वर्ष कैद र रु.३,००,०००।- (रु.तीन लाख) जरिवाना गर्ने

गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७६।०५।३१ मा भएको फैसला मिलेकै हुँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: श्रद्धा विष्ट

कम्प्युटर: रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल असार ३ गते रोज ५ शुभम्।

६

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा, ०७७-WH-०१९४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, भिमसेन घिमिरेको हकमा सरस्वती सञ्जेल वि. महानगरीय प्रहरी परिसर, टेकुसमेत

निवेदकउपरको कानूनी कारबाहीको अवस्था हेर्दा निवेदक राजनीतिक रूपमा ने.क.पा. माओवादी (विप्लव) समूहमा आवद्ध रहेको देखिन्छ। निजलाई मिति २०७७।१।२१ मा काठमाडौं जिल्ला टोखाबाट पक्राउ गरी चन्दा ऐन, २०३० अन्तर्गत अपराधको मुद्दा चलाई थुनामै रहेको देखियो। पक्राउ भएको मितिदेखि लागु हुने गरी काठमाडौं जिल्ला अदालतको अनुमतिमा पटकपटक गरी मिति २०७७।१०।१९ सम्म १७ दिन अनुसन्धानको लागि निज निवेदकलाई प्रहरी हिरासतमा राखेको देखियो। मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १४(६) मा "अनुसन्धान अधिकारीले कुनै व्यक्तिलाई हिरासतमा राख्ने अनुमति माग गरेकोमा मुद्दा हेर्ने अधिकारीले सम्बन्धित कागजातहरू हेरी अनुसन्धान सन्तोषजनक रूपमा भएको वा नभएको विचार गरी, आवश्यक देखिएमा हिरासतमा राख्ने आदेश दिन सक्ने" कानूनी व्यवस्था रहेको छ। सोही दफाको उपदफा (९) मा "मुद्दा हेर्ने अधिकारीले हिरासतमा राख्ने आदेश दिँदा कारणसहितको पर्चा खडा गर्नुपर्ने" व्यवस्था रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्थाबाट अनुसन्धान अधिकारीले कुनै फौजदारी अभियोगमा हिरासतमा राख्ने अनुमति माग गर्ने र अदालतले म्याद थप गर्ने कुरा केवल रीत पुऱ्याउने विषय नभई थुनामा नै राखी अनुसन्धान

गर्नुपर्नेसम्मको औचित्य पुष्टि हुनुपर्छ । अनुसन्धान अधिकारीबाट अनुसन्धान सन्तोषजनक रूपमा भएको देखिनुपर्ने अर्को सर्तसमेत रहेको देखिन्छ । कुनै पनि व्यक्तिलाई थुनामा राख्दा कानूनसम्मत, उचित, कारण तथा वस्तुनिष्ठ आधार उल्लेख हुनुपर्नेमा यी निवेदकले उल्लिखित कसुर गरेको भन्ने देखिने वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाण देखिँदैन । पक्राउको पृष्ठभूमि हेर्दा यी निवेदकलाई फरक राजनीतिक विचार र आस्था राखेकै कारणबाट पक्राउ गरेको भन्ने देखिन्छ । निजलाई थुनामा राखी अनुसन्धान गर्नुपर्ने अवस्था लिखित जवाफबाट समेत खुलाउन सकेको नदेखिने ।

कानूनबमोजिमबाहेक वा कानूनको उचित प्रक्रिया पूरा नगरी कसैको पनि वैयक्तिक स्वतन्त्रतालाई हनन गर्नु वा अङ्कुश लगाउनु हुँदैन । यस विपरीत गरेको कार्य कानूनी राज्यमा शोभनीय कार्य मान्न पनि सकिँदैन । कानूनले तोकेको विधि र प्रक्रिया पूरा नगरी बिनाआधार, कारण कुनै पनि व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता सीमित गर्ने वा वैयक्तिक स्वतन्त्रता हरण गर्ने अधिकार संविधान र कानूनले कसैलाई प्रदान गरेको छैन । प्रस्तुत निवेदनसमेतको समूहबाट आगजनी, बिस्फोट र मानवीयसमेतका क्षतिहरू पुऱ्याउने योजना गरिरहेको भन्ने आधारमा पक्राउ गरे पनि त्यससम्बन्धमा सोको पुष्टि हुन सक्ने सबुत प्रमाणको अभाव देखिन्छ । तथापि चन्दा ऐनसम्बन्धी कसुरमा अभियोग दायर गरी अनुसन्धानको क्रममा निजलाई थुनामा राखेको भन्ने विपक्षीहरूको जिकिर रहेको देखिए तापनि निवेदकलाई थुनामा नै राखी अनुसन्धान गर्नुपर्ने गरी म्याद थपको माग गर्दा स्पष्ट आधार र कारण उल्लेख भएको देखिँदैन । यसै गरी मुद्दा हेर्ने अधिकारीले म्याद थप गर्दासमेत स्पष्ट आधार र कारण उल्लेख गरेको देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा निवेदकलाई बदनियतपूर्वक थुनामा राखेको होइन भन्ने प्रत्यर्थीहरूको भनाइ विश्वास गर्न सकिने अवस्था नदेखिने ।

अतः स्पष्ट आधार र कारणविना प्रवृत्त

भावनाले निवेदकलाई केवल फरक राजनीतिक विचार र आस्था राखेकै कारणबाट मात्र पक्राउ गर्ने र अनुसन्धानको क्रममा भनी थुनामा राख्ने कार्य न्यायिक दृष्टिकोणबाटसमेत औचित्यपूर्ण नभएबाट यी निवेदक भिमसेन घिमिरेको हकमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव) - शिवबहादुर थापा  
**इति संवत् २०७७ साल माघ २२ गते रोज ५ शुभम् ।**

- यसै प्रकृतिको ०७७-WH-०२१७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, धर्मेन्द्र बास्तोलाको हकमा हिमा बास्तोला वि. महानगरीय प्रहरी परिसर, जावलाखेलसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार आदेश भएको छ ।

७

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७७-WO-०३३८, उत्प्रेषण, परमादेशसमेत, डा. चन्द्रप्रसाद रिंसासमेत वि. लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगरसमेत**

कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयबाट मिति २०७७।५।१० को पत्रमार्फत माग आकृति फारम सामान्य प्रशासन मन्त्रालयमा पठाएकोमा सो मागबमोजिम विज्ञापन नभएको सन्दर्भमा लोक सेवा आयोगबाट मिति २०७७।६।२८ गते भएको विज्ञापन सूचना यथास्थितिमा राख्ने भनी यस अदालतको मिति २०७७।७।१९ गतेको अल्पकालीन अन्तरिम आदेशबमोजिम लोक सेवा आयोगबाट हाल उक्त विज्ञापन सूचना स्थगन भएको अवस्था देखिन्छ । अब सो छुट भएका पदहरूसमेत सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले पदपूर्तिका लागि लोक सेवा आयोगमा माग गरी सोहीअनुसारको पदसङ्ख्यालाई प्रतिशत निर्धारण गरी लोक सेवा आयोगबाट मिति २०७७।६।२८ गतेको विज्ञापनमा समावेश गरी पदपूर्ति गरेको अवस्थामा निजामती सेवा नियमावली, २०५० को नियम १२ को उपनियम १

बमोजिम उक्त पदहरू खारेज हुने अवस्थासमेत नदेखिने र सो पदमा कानूनबमोजिम बढुवा हुन सम्भावित उम्मेदवारहरूलगायत सोका कारणले सोभन्दा तल्लो पदमा रहेका कर्मचारीहरूको वृत्ति विकास भई निवेदकहरूलगायत अन्य कर्मचारीहरूसमेतका हक अधिकारमा आघात नपरी समग्रमा न्यायोचित नै हुने ।

यसै सम्बन्धमा यस अदालतबाट रिट निवेदक डा. लोकनाथ पौडेल विपक्षी लोकसेवा आयोग, अनामनगर, ०७६-WO-०३५६ उत्प्रेषणसमेतको रिट निवेदनमा मिति २०७६।०९।०८ मा सेवा सञ्चालन गर्ने कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयले नेपाल कृषि सेवा, लाइभस्टक पोल्ट्री एन्ड डेरी डेभलपमेन्ट समूह, सहसचिव वा सो सरहको छुट भएको १ पद (आ.व. २०७८/०७७) लोकसेवा आयोगको मिति २०७६।६।२९ को विज्ञापनमा समावेश गरी विज्ञापन गरी पदपूर्ति गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी भएको देखिन्छ । त्यस्तै रिट निवेदक धनबहादुर वली विपक्षी लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालयसमेत भएको ०७७-WO-०३९९ नं. को उत्प्रेषणसमेतको रिट निवेदनमा मिति २०७७।१०।१३ मा सेवा सञ्चालन गर्ने परराष्ट्र मन्त्रालयले पद रिक्त हुने पुष्ट्याइँका आधारसहित माग आकृति फारम भरी समयमै सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयमा रिक्त रहेका पदको पुष्ट्याइँसहित पदपूर्तिको लागि लेखी पठाएकोलाई आधार मानी नेपाल परराष्ट्र सेवा, रा.प. प्रथम श्रेणीमा रिक्त देखिएको सात (७) पद र रा.प. द्वितीय श्रेणीमा रिक्त देखिएको आठ (८) पदको लागि प्रतिशत निर्धारण गरी विज्ञापन प्रकाशन गरी कानूनबमोजिम निजामती कर्मचारीको वृत्तिविकासको लागि प्राथमिकता दिई पदपूर्ति गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी भएको देखिन्छ । यसै गरी रिट निवेदक डा. शर्मिला चापागाईँ विपक्षी लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालयसमेत भएको ०७७-WO-०३३९ नं. को उत्प्रेषणसमेतको रिट निवेदनमा

मिति २०७७।१२।२५ मा सेवा सञ्चालन गर्ने कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयले नेपाल कृषि सेवा, भेटेरिनरी समूह, रा.प. प्रथम (प्रा.) सहसचिव वा सोसरहको पदको लागि तीन पद रिक्त भनी पठाएकोमा सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले २ पदको लागि लोकसेवा आयोगमा विज्ञापनको लागि पठाएकोमा सो कार्यसमेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरी कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयले सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयलाई पठाएको माग आकृति फारमअनुसार सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले नेपाल कृषि सेवा, भेटेरिनरी समूह, रा.प. प्रथम (प्रा.) सहसचिव वा सोसरहको छुट १ पदसमेत पदपूर्तिको माग गरी लोक सेवा आयोगमा पठाईँ सो अनुसार १ पद समावेश गरी जम्मा ३ पदलाई पुनः प्रतिशत निर्धारण गरी यसै आ.व. मा पुनः विज्ञापन प्रकाशन गरी पदपूर्ति गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी भएको देखिन्छ । उपर्युक्त रिट निवेदनहरूको विषयवस्तु र प्रस्तुत निवेदनको विषयवस्तु एकै प्रकृतिको भएकोले प्रस्तुत रिट निवेदनमा पनि सेवा सञ्चालन गर्ने कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयले नेपाल कृषि सेवा अन्तर्गतका विभिन्न समूहहरूको रा.प. प्रथम (प्रा.) सहसचिव वा सो सरहको पदको लागि १० (दश) पद रिक्त भनी पठाएकोमा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले १ पदको लागि लोकसेवा आयोगमा विज्ञापनको लागि पठाएको कार्य यस अदालतबाट विभिन्न मितिमा भएका आदेशहरूसमेतको विपरीत हुने ।

मिति २०७७।६।२८ मा लोक सेवा आयोगबाट नेपाल कृषि सेवाअन्तर्गतका विभिन्न समूहहरूमा राजपत्राङ्कित प्रथम श्रेणी (प्राविधिक) सहसचिव वा सोसरहको पदको लागि प्रकाशित सूचना नं. ५३/०७७-७८, ५४/०७७-७८ र ५५/०७७-७८ अन्तर्गत नेपाल कृषि सेवामा भएको विज्ञापन सूचनामा सेवा सञ्चालन गर्ने कृषि तथा पशुपन्छी

विकास मन्त्रालयबाट रिक्त रहेका पदहरूमा पदपूर्तिका लागि माग भई आएका केही पदसंख्याहरू छुट भएको देखिएकाले उक्त माग आकृतिबमोजिमका पदहरू समावेश गरी पुनः विज्ञापन गर्नुपर्ने देखिएकोले उक्त विज्ञापनलाई उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालयले मिति २०७७।१।१० मा च. नं. २७० मार्फत सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयलाई पठाएको माग आकृति फारमअनुसार सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले नेपाल कृषि सेवाअन्तर्गत रा.प. प्रथम (प्राविधिक) सहसचिव वा सोसरहको छुट ९ (नौ) पदसमेत पदपूर्तिका लागि लोक सेवा आयोगमा माग गरी पठाई सो अनुसार पदलाई पुनः प्रतिशत निर्धारण गरी लोक सेवा आयोगबाट प्रकाशित मिति २०७७।६।२८ को विज्ञापनमा समावेश गरी सोही विज्ञापनबमोजिमको योग्यता कायम हुने गरी पदपूर्ति गर्नु भनी विपक्षी सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय र लोक सेवा आयोगका नाउँमा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: नबिन आचार्य

कम्प्युटर: रमला पराजुली

**इति संवत् २०७८ साल भाद्र २० गते रोज १ शुभम् ।**

८

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७३-CI-१०३५, निर्णय बदर, ऊर्जा मन्त्रालय, विद्युत् विकास विभाग वि. म्यादींखोला हाइड्रोपावर कम्पनी प्रा.लि.**

पुनरावेदक नेपाल सरकारले विपक्षी म्यादीं खोला हाइड्रोपावर कम्पनीको अनुमतिपत्र खारेज गरी प्रत्यर्थांलाई असर पर्ने गरी भएको निर्णयको सम्बन्धमा कानूनी व्यवस्था हेर्दा, विद्युत् ऐन, २०४९ को दफा ८ को उपदफा (१) मा “अनुमतिपत्र प्राप्त व्यक्तिले यो ऐन वा यस ऐनअन्तर्गत बनेको नियम विपरीत कुनै काम गरेमा तोकिएको अधिकारीले अवधि तोक्यो त्यस्तो

काममा आवश्यक सुधार गर्न सम्बन्धित अनुमतिपत्र प्राप्त व्यक्तिलाई आदेश दिन सक्ने” व्यवस्था रहेको र उपदफा (२) मा “उपदफा (१) बमोजिम तोकिएको अवधिभित्र अनुमतिपत्र प्राप्त व्यक्तिले आवश्यक सुधार नगरेमा तोकिएको अधिकारीले त्यस्तो व्यक्तिले पाएको अनुमतिपत्र खारेज गर्न सक्ने” उल्लेख भएको देखिन्छ । तर यसरी अनुमतिपत्र खारेज गर्नुअघि सुनुवाइको मौका दिनुपर्ने गरी उपदफा (३) मा “उपदफा (२) बमोजिम अनुमतिपत्र खारेज गर्नुअघि तोकिएको अधिकारीले सम्बन्धित अनुमतिपत्र प्राप्त व्यक्तिलाई आफ्नो सफाइ पेस गर्न मनासिब मौका दिनुपर्ने” भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यस व्यवस्थाले ऐनबमोजिम तोकिएको अधिकारीलाई अनुमति पत्र खारेज गर्नसक्ने अधिकार दिए पनि सोपूर्व उपदफा (३) बमोजिम अनुमतिपत्र प्राप्त व्यक्ति म्यादीं खोला हाइड्रोपावरलाई सफाइ पेस गर्ने मौका दिनुपर्ने देखिने ।

प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तको स्थापित मान्यताबमोजिम कसैको हितमा प्रतिकूल असर पर्ने गरी निर्णय गर्नुपूर्व यस्तो असर गर्ने व्यक्तिलाई सुनुवाइको अवसर दिनुपर्छ । यसले कानूनको उचित विधि र प्रक्रिया (Due Process of Law) अवलम्बन गर्नुपर्ने न्यायको अन्तरनिहित तत्त्वलाई आत्मसात् गर्दछ । कानूनले नै अपवादको व्यवस्था गरेमा बाहेक यो सिद्धान्तलाई सामान्य रूपमा पालना गर्नु जरूरी हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा विद्युत् ऐन, २०४९ को दफा ३ बमोजिम विपक्षी म्यादीं खोला हाइड्रोपावर कम्पनी प्रा.लि. लाई नेपाल सरकार, उर्जा मन्त्रालयबाट सुनुवाइको मौका नदिई करोडौंको लगानी गर्ने कम्पनीको अनुमतिपत्र खारेज गर्ने गरी नेपाल सरकार, ऊर्जा मन्त्रालय (सचिवस्तर) को मिति २०७१।०६।१० को निर्णय भएको देखियो । उक्त निर्णय उल्लिखित ऐनले स्पष्ट रूपमा अनुमति पत्र खारेज गर्नुपूर्व सुनुवाइको मौका दिने गरी निर्दिष्ट गरेको प्रक्रियासमेत अवलम्बन नगरी भएको उर्जा मन्त्रालयको निर्णयलाई कानूनसङ्गत

मान्न सकिने अवस्था नदेखिने।

म्यार्दी खोला जलविद्युत् आयोजनाको विद्युत् उत्पादनको सर्वेक्षण अनुमतिपत्र रद्द गर्ने र विद्युत् उत्पादनको अनुमतिपत्रको लागि पेस गरेको दरखास्तमा कारबाही नगर्ने गरी उर्जा मन्त्रालयबाट मिति २०७१।०६।१० मा निर्णय गर्दा विपक्षीलाई विद्युत् ऐन, २०४९ को दफा ८(३) बमोजिम सफाई पेस गर्न मनासिब मौका नदिएको अवस्था र विपक्षी म्यार्दीखोला हाइड्रोपावर कम्पनी प्रा.लि. ले प्राप्त गरेको सर्वेक्षण अनुमतिपत्र र विद्युत् उत्पादनको लागि दिएको दरखास्तमा कारबाही नगर्ने गरी भएको निर्णय कुन कानूनी प्रावधानअन्तर्गत भएको भन्ने खुलेको नदेखिँदा बदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।१।१३ मा भएको फैसला मिलकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। पुनरावेदक नेपाल सरकार, उर्जा मन्त्रालय विद्युत् विकास विभागको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: शिवबहादुर थापा

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा

**इति संवत् २०७७ साल मङ्सिर १७ गते रोज ४ शुभम्।**

९

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.**

**डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७७-WH-०२८२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, राजकुमार सिंह वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, तहसिल शाखासमेत**

बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(४) मा “सोह वर्ष वा सोभन्दा माथि र अठार वर्ष वा सोभन्दा कम उमेरको बालबालिकाले कुनै कसुरजन्य कार्य गरेको भए निजलाई कानूनबमोजिम उमेर पुगेको व्यक्तिलाई हुने सजायको दुई तिहाइ सजाय हुने छ” भन्ने र मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४५(४) मा “सोह वर्ष वा सोह वर्षभन्दा माथि र अठार वर्षभन्दा कम उमेरको व्यक्तिले कुनै कसुर गरेमा निजलाई उमेर पुगेको व्यक्तिलाई कानूनबमोजिम हुने

सजायको दुई तिहाइ सजाय हुने छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ। विवेचित कानूनी व्यवस्था यी निवेदक राजकुमार सिंहका हकमा लागु हुने हो वा होइन भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा, अपराध घटित हुँदाका समयमा यी प्रतिवादीको उमेर १६-१८ वर्षको उमेर भएको कुरा फरेन्सिक मेडिकल विभाग महाराजगञ्जको उमेर जाँच परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिन्छ। उक्त प्रतिवेदनको अधिक उमेर कायम गर्दासमेत निजको उमेर १८ वर्षभन्दा कम कायम हुन आउँछ। मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ र बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम १८ वर्षभन्दा मुनिका व्यक्तिलाई नाबालिगको परिभाषाभित्र राखिएको पाइन्छ। १६-१८ उमेर समूहका व्यक्तिले कुनै कसुर गरेमा बालिगलाई हुने सजायमा दुई तिहाइ मात्र सजाय निर्धारण गरिनुपर्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ। मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ र बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ मा विवेचित उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार यी निवेदक कसुर गर्दाको समयमा १६ देखि १८ वर्षको बिच अथवा लगभग १७ वर्षको देखिएको हुँदा निजलाई फैसलाबमोजिम कायम गरिएको १५ वर्ष कैदको दुई तिहाइले हुने सजाय १० वर्ष मात्र कैद निर्धारण गर्नुपर्ने।

निजलाई फैसलाबमोजिम लागेको जरिवाना रु.५,००,०००।- (पाँच लाख) को समेत विवेचित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम दुई तिहाइले हुन आउने जरिवाना रु.३,३३,३३४।- कायम गर्नुपर्ने देखियो। यसरी निजलाई लागेको कैद १० वर्ष निज पक्राउ परी थुनामा रहेको मिति २०६८।१।१० देखि मिति २०७८।१।१० सम्म भुक्तान भइसकेको देखिन्छ। निज निवेदक आफूलाई लागेको जरिवाना तिर्न बुझाउन तयार हुँदाहुँदै निजलाई थुनामा राखिरहने कार्य गैरकानूनी देखिने।

निवेदक राजकुमार सिंह मिति २०७८।१।१० देखि आजका मितिसम्म ६ दिन बढी कैदमा बसेको

देखिँदा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १६१(२) बमोजिम दैनिक रु.३००१- का दरले ६ दिनको रु.१,८००१- निजलाई हुने जरिवाना रु.३,३३,३३४।- बाट घटाई बाँकी हुन आउने रु.३,३१,५३४।- निज निवेदकले निजलाई लागेको कैद तथा जरिवानाको लगत रहेको काठमाडौं जिल्ला अदालतमा बुझाउन ल्याए निजलाई लागेको जरिवानाको रकम बुझी निवेदक राजकुमार सिंहलाई अन्य मुद्दामा थुनामा राख्न नपर्ने भए प्रस्तुत मुद्दाको हकमा थुनामुक्त गरिदिनु भनी निवेदन मागबमोजिम विपक्षीहरूको नाममा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: नबिन आचार्य

कम्प्युटर: रमला पराजुली

**इति संवत् २०७८ साल वैशाख १६ गते रोज ५ शुभम्।**

१०

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.**

**डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७७-WH-०२९०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, पूर्णप्रसाद शिवाकोटी वि. झापा जिल्ला अदालत, तहसिल शाखासमेत**

निवेदकबाट भएको कसुरमा निजलाई एक वर्ष मात्र सजाय भएको देखियो। तथापि यी निवेदकलाई फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा ठहरेको कैदबापत अदालतले कैद म्याद ठेकी कारागार कार्यालय पठाएको अवस्था हुँदा निजको थुनालाई गैरकानूनी भन्न मिल्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने अवस्था भने देखिन आएन। तथापि हाल विश्वव्यापी रूपमा रहेको COVID-१९ को महामारीको अवस्थामा यी निवेदकलाई उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिमको सुविधा नदिई कैदमा राख्दा जनस्वास्थ्यसमेतको संवेदनशीलतालाई दृष्टिकोण गरी निजले उक्त मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ को कानूनी व्यवस्थाबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरेमा

कैदमा बस्न नपर्ने गरी सुविधा प्राप्त गर्न सक्ने।

अतः माथि विवेचित आधार र कारणहरू तथा विद्यमान कानूनी व्यवस्थासमेतबाट निवेदक पूर्णप्रसाद शिवाकोटीले मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ को कानूनी व्यवस्थाबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरेमा कैदमा बस्न नपर्ने गरी सुविधा प्राप्त गर्न सक्ने नै अवस्था देखिँदा निवेदकलाई उक्त सुविधा प्रदान गर्न इन्कार गरी झापा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७७।१२।२० मा भएको आदेश कानूनतः मिल्नेको नदेखिँदा बदर गरिदिएको छ। अब मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ को उपदफा (२) मा विवेचित कानूनी व्यवस्थाबमोजिमको कागज गराई निवेदकलाई लागेको कैदबापत ऐ. संहिताको दफा १५५(३) बमोजिम एक दिनको रु.३००१- का दरले हुन आउने रकम बुझाउन ल्याए बुझीलिई कानूनबमोजिमको प्रक्रिया पुऱ्याई निवेदक पूर्णप्रसाद शिवाकोटीलाई प्रस्तुत मुद्दाको हकमा कैद मुक्त गर्नु भनी झापा जिल्ला अदालतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: नबिन आचार्य

कम्प्युटर: रमला पराजुली

**इति संवत् २०७८ साल वैशाख १६ गते रोज ५ शुभम्।**

११

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७६-WO-०१६९, उत्प्रेषणसमेत, श्यामपरी साह वि. उच्च अदालत विराटनगर मोरङसमेत**

मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३८(३) मा "...तारिख तोकेको अवस्थामा मुद्दाको पक्ष अदालतको कुनै एक फाँटमा तारिखमा हाजिर भएमा सोही फाँटका अन्य मुद्दाको तारिखमा पनि निज उपस्थित रहेको मानिने छ।" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा मोही नामसारीसमेत दुवै थरीका अलग अलग तारिख पर्वामा क्रमशः २०७६।१।८, २०७६।१।२२, २०७६।२।१५,

२०७६।३।१८ र २०७६।४।१९ सम्म निवेदिकाले तारिख पर्चामा सम्बन्धित फाँटबाट रूजु तारिख लिई आएकोमा एकै फाँटबाट यिनै पक्ष र विपक्ष भई चलेको लगाउको चारमध्ये तीनवटा मुद्दाको तारिखमा हाजिर भएको अवस्थामा कुनै एक मुद्दाको तारिख पर्चामा दस्तखत नभएको वा नगराएको कारणले मात्र निजले तारिख गुजारेको भन्ने उक्त कानूनी प्रावधानअनुसार मिल्ने देखिएन। यसै सन्दर्भमा पुनरावेदक / प्रतिवादी प्रमोदकुमार चौधरी विरुद्ध विपक्षी / वादी विनोदकुमार चौधरी भएको लिखत बदर, दर्ता बदर दर्ता मुद्दामा यसै अदालतबाट ने.का.प.२०६५, अङ्क ९, नि.नं. ८००८ मा “एकै पटक दर्ता भएका वा अधिपछि दर्ता भए पनि मुद्दाको प्रकृतिको आधारबाट लगाउमा रहनुपर्ने देखिएमा पक्षको निवेदन वा अदालतको आदेशबमोजिम लगाउ रहेका मुद्दा/ निवेदनमा कर्मचारीको भूल वा अन्य कारणबाट एउटामा तारिख दिएको र अर्कोमा तारिख दिन छुटेमा तारिख लिन छुटेको कारण उत्पन्न हुने परिणामबाट पक्षलाई असर पर्न नहुने।” भन्ने प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको परिप्रेक्ष्यमा मिति २०७६।२।१५ को तारिख भर्पाईबाट यी निवेदिकाले तारिख गुजारेको देखिए तापनि संवत् २०७५ सालको क्रमशः DP-५९६, ५९७ र ५९८ को पुनरावेदन र WO-२३७ को उत्प्रेषणयुक्त परमादेश गरी ४ थान लगाउका मुद्दामा यी रिट निवेदक अदालतमा हाजिर रहेको भन्ने निवेदकले पेस गरेको सक्कल तारिखपर्चा तथा तारिख भर्पाईका प्रतिलिपिहरूबाट देखिन्छ। साथै तारिख तोक्ने क्रममा मानवीय त्रुटिले एउटै पक्ष विपक्ष भएको रिट निवेदनमा तारिख तोकिन गएको हो। निज निवेदक श्यामपरीदेवी साह मोही नामसारी ३ थान र उत्प्रेषणयुक्त परमादेश निवेदन १ थान गरी जम्मा ४ थान मुद्दामा यी निवेदकलाई उपलब्ध गराएको तारिख पर्चामा निजले निरन्तर तारिख लिएको देखिएकोले कानूनबमोजिम हुन भन्ने उच्च अदालत विराटनगरको लिखित जवाफ रहेसमेतबाट यी निवेदक श्यामपरी

साहले मिति २०७६।२।१५ को तारिख गुजारेको र तारिख थमाउने अवधीसमेत व्यतीत भइसकेकोले निवेदन तामेलीमा राखी तारिखमा रहेका विपक्षीहरूको तारिख टुटाई दिनु भन्ने उच्च अदालत विराटनगरको मिति २०७६।३।३० को आदेश मिलेको देखिन नआउने।

तसर्थ, उच्च अदालत विराटनगरबाट मिति २०७६।३।३० मा भएको आदेश कानूनसम्मत नदेखिएकोले उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ। अब निवेदन मागबमोजिम तारिख टुटाइसकेका विपक्षीहरूलाई समेत तारिखमा राखी लगाउका बाँकी रहेका मोही नामसारी मुद्दासमेत साथै राखी कानूनबमोजिम कारबाहीको प्रक्रिया अघि बढाउनु भनी उच्च अदालत विराटनगरको नाममा परमादेशयुक्त आदेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत: प्रकाश सुवेदी

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७८ साल वैशाख ९ गते रोज ५ शुभम्।

इजलास नं.२

१२

मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७३-CI-१६४५, निषेधाज्ञा, प्रयाग सुतिहार वि. ललितादेवी सुतिहार

निवेदकले आफ्नो हकभोगको ०-०-९ जग्गामा बनेका ३ वटा घर भत्किएकाले घर निर्माण गर्न जाँदा विपक्षीले सो जग्गामा घर निर्माण गर्न नदिई पुरानो जीर्ण घरलाई मर्मत सम्भार र भोगचलन गर्न नदिने आशङ्का भएकाले उक्त जग्गामा मैले बनाउन लागेको घर निर्माण तथा मर्मत सम्भार गर्न रोक नलगाउनु तथा निर्माण कार्यमा व्यवधान नगर्नु नगराउनु, निवेदनको टुङ्गो नलागेसम्म अन्तरिम आदेशसहितको निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने मुख्य निवेदन

जिकिर लिएकोमा सोजग्गा रजिस्ट्रेसन पास पारित भएको जग्गा होइन । विपक्षीले प्रमाणका लागि पेस गरेको कागज घरसारको हुँदा त्यस्तो लिखतबाट हक हस्तान्तरण हुन सक्तैन । रजिस्ट्रेसन पारित नगराएको लिखत सम्बन्धमा छुट्टै उजुर गर्ने छु भन्ने लिखित जवाफ रहेको देखियो र सोही विषयमा यिनै प्रत्यर्थी ललितादेवी सुतिहार वादी र यिनै पुनरावेदिका कुन्तीदेवी सुतिहार प्रतिवादी भएको ०७२-CP-१३१२ को घर उठाई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ भन्ने मुद्दा सप्तरी जिल्ला अदालतमा चली विचाराधीन अवस्थामा छ भन्ने प्रत्यर्थी ललितादेवीले पुनरावेदन अदालत राजविराजमा निवेदनसाथ पेस गरेको फिरादपत्रको नक्कलबाट देखिनुको साथै यिनै पुनरावेदिका कुन्तीदेवी सुतिहार वादी र विपक्षी ललितादेवी प्रतिवादी भएको ०७२-CP-१३१२ घर उठाई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ भन्ने मुद्दा सप्तरी जिल्ला अदालतमा चली मिति २०७७।१।१० मा वादी दाबी नपुग्ने गरी फैसला भएको भन्ने पुनरावेदकका तर्फबाट उपस्थित कानून व्यवसायीबाट बहसका साथ पेस भएको फैसलाको प्रतिलिपिबाट देखिन आउने ।

पुनरावेदकले दाबी गरेको जग्गाको सम्बन्धमा प्रत्यर्थी ललितादेवी सुतिहारले घर उठाई चलन चलाइपाउँ भनी र यिनै पुनरावेदिकाले यिनै प्रत्यर्थीउपर घर उठाई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ भन्ने मुद्दा जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको देखिएबाट दाबीको सम्पत्ति (जग्गा) को सम्बन्धमा यी पुनरावेदक र प्रत्यर्थीबिच परस्पर मुद्दा परी आपसमा विवाद रहेको पाइयो । सिद्धान्तः निर्विवाद हक भोग रहेको सम्पत्तिको उपभोगमा अवरोध हटाउन वा रोक्न निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने हो । निषेधाज्ञाको मुद्दामा विवादको विषयमा प्रमाण बुझी हक स्वामित्वको निर्धारण गरिने होइन । प्रस्तुत मुद्दामा दाबी गरेको जग्गाको हकको स्रोत

मै विपक्षीले विवाद सिर्जना गरेको र पुनरावेदिकाउपर मुद्दा नै दायर भई साधिकार निकाय जिल्ला अदालतमा मुद्दा विचाराधीन रहेको मात्र नभई सोही विषयमा प्रत्यर्थीउपर पुनरावेदिकाको समेत जिल्ला अदालतमा मुद्दा दायर भएको भन्ने देखिन आएबाट दाबीको सम्पत्तिको सम्बन्धमा पुनरावेदिका र प्रत्यर्थीबिच परस्पर मुद्दा परेकोबाट विवाद रहेको देखिन आकाले त्यस्तो विवादित सम्पत्तिको उपभोगको सम्बन्धमा दाबीअनुसार निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने अवस्था विद्यमान नरहेको र विवादित विषयको निरूपण जिल्ला अदालतमा परेका मुद्दाबाट हुने नै हुँदा निषेधाज्ञाको निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत राजविराजको फैसला मिलेकै देखिने ।

तसर्थ, पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।०२।१६ गतेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिर पुग्नु नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः श्यामहरि अधिकारी (उपसचिव)  
कम्प्युटरः समी नेपाली

**इति संवत् २०७८ साल फागुन १३ गते रोज ६ शुभम् ।**

१३

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार  
ढुंगाना, ०७६-CR-१८७८, जबरजस्ती करणी,  
नेपाल सरकार वि. बुच्चु भन्ने अहमद चुराँटे**

प्रस्तुत मुद्दाको तथ्यगत अवस्था हेर्दा वारदातको दिन जाहेरवाली र प्रतिवादी दुवैजना आपसी सहमतिमा होटलको कोठामा गई बसेको र करणीको वारदात भएपछि पनि जाहेरवाली र प्रतिवादी सँगसँगै हाँसदै होटलबाट बाहिर निस्किए भन्ने मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिन्छ । पीडित भनिएकी जाहेरवाली स्वयम्ले बकपत्र गर्दा आफूलाई डर, त्रास देखाई वा अनुचित प्रभावमा पारी करणी गरेको हो भन्न सकेको छैन । अपितु प्रतिवादीले करणी गर्दा मैले प्रतिकार गरिन

भनी बकपत्र गरेबाट दुवै जनाको सहमतिले करणी गरेको भन्ने प्रतिवादीको जिकिरलाई थप पुष्टि गरेको देखिन आयो । पीडितको शरीरमा कुनै प्रकारका सङ्घर्षको चिह्नहरू तथा जबरजस्ती करणी भएको लक्षणहरू पनि स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिँदैन । घटना विवरण कागज गर्ने न्यू मेलिना गेष्टहाउस सञ्चालक कालिकानन्द ठाकुरको अनुसन्धानमा भएको कागज र अदालतको बकपत्रलाई हेर्दा पनि प्रतिवादी र पीडित सँगसँगै होटेलमा आई कोठा बुक गरी खाजा मगाई खाई १५/२० मिनेटपछि होटेलको बिल तिरी हाँस्रदै अँगालो हाली निस्केर गएको भन्ने बेहोरा उल्लेख देखिन्छ । जाहेरवाली र प्रतिवादी बसेको होटलको कोठाको कुनामा रहेको डस्बिनभित्र प्रयोग गरिएको ढाल (कण्डम) समेत बरामद भएको देखिन्छ । उपर्युक्त तथ्यहरूबाट प्रतिवादीले जाहेरवाली पीडितलाई डर, त्रास, धाक देखाई जोरजुलुम गरी प्रलोभनमा पारी जबरजस्ती करणी गरेको नभई जाहेरवालीको मन्जुरीमा दुवैको पूर्ण सहमतिमा यौन सम्पर्क (करणी) भएको तथ्य स्थापित हुन आयो । जाहेरवालीको जाहेरी बेहोराबाहेक मिसिल संलग्न अन्य कुनै स्वतन्त्र प्रमाणबाट प्रतिवादी बुच्चु भन्ने अहमद चुरौटले पीडित जाहेरवालीलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने तथ्य पुष्टि हुन सकेको नदेखिने ।

तसर्थ, प्रतिवादी बुच्चु भन्ने अहमद चुरौटले पीडित परिवर्तित नाम रंगेली (ए) लाई जबरजस्ती करणी गरेको तथ्य पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा मोरङ जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(५) नं. तथा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २१९(३)(ड) बमोजिम ५(पाँच) वर्ष कैद र प्रतिवादीबाट पीडितलाई रु.२०,०००।- (बिस हजार रूपैयाँ) क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी मिति २०७५।०६।२१ मा भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने

ठहर्‍याएको उच्च अदालत विराटनगरको मिति २०७६।०६।०७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: ध्रुवबहादुर कुँवर  
कम्प्युटर: हर्कमाया राई

**इति संवत् २०७७ मङ्सिर ३ गते रोज ४ शुभम् ।**

१४

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७४-CR-०७२४, जबरजस्ती करणी र डाँका, सन्तोष खाँण भन्ने लोकबहादुर खाँण वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीमध्येका चोर काले भन्ने विरेन्द्र नायक क्षेत्रीले सुरु जिल्ला अदालतसमक्ष बयान गर्दा अन्जन थापा, सुजित थापा, ईश्वर के.सी., विकास मल्ल, बसन्त सेन, सन्तोष खाँण, मोहन भाट क्षेत्री, विकास बस्नेत, मनिष खाँण, अनिल थापा र म मिली पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेका हौं भनी आरोपित कसुर अपराध गरेकोमा आफू साबित भई यी प्रतिवादी सन्तोष खाँणसमेतलाई पोल गरेको पाइयो । यस्तै पीडित नाम परिवर्तित गंगा रानाले सुरु जिल्ला अदालतसमक्ष उपस्थित भई यी प्रतिवादी सन्तोष खाँणसमेतले जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भनी बकपत्र गरी जाहेरी दरखास्तलाई पुष्ट्याई गरेको पाइन्छ । यी पुनरावेदक प्रतिवादी सन्तोष खाँणले घटना भएको समयमा आफू घटनास्थलमा नभई अन्यत्र रहेको भन्ने बयान तथा पुनरावेदन जिकिर लिए तापनि सो पुष्टि गर्ने प्रमाण पेस गर्न सकेको नदेखिने ।

अभियोगपत्रमा उल्लिखित सन्तोष खाँण आफू नभएको भन्ने यी प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, आफूले स्याङ्जा जिल्लाबाट मात्र २०७१ सालमा नागरिकताको प्रमाणपत्र लिएको, कपिलवस्तुबाट नागरिकता लिएको छैन भनी

पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिन्छ । यिनै प्रतिवादीले सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतमा बयान गर्दा सवाल ११ को जवाफमा "पहिलाको नागरिकता थियो । एजेन्टले अफगानिस्तान जाने भनेर लिएको हो ।" भनी बेहोरा लेखाएको पाइन्छ । सोही नागरिकताको आधारमा यी प्रतिवादी २०६९ सालमा विदेश दुई गएको भन्ने पनि सोही बयान बेहोराबाट देखिन आउँछ । यी प्रतिवादीले २०६२।०५।३१ मा ना.प्र. नं. १-०४-६४९९४ बाट सन्तोष खाँणको नामबाट नागरिकता प्राप्त गरेको मिसिल संलग्न जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कपिलवस्तुबाट प्राप्त नागरिकता प्रमाणपत्रको प्रतिलिपि एवम् नागरिकता वितरण दर्ता किताबको प्रतिलिपिबाट देखिन आउँछ । यी प्रतिवादीले मिति २०६७।०१।०१ को वारदातपश्चात् आरोपित कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने मनोभावनाले अभिप्रेरित भई नामसम्म फरक पारी २०७१।१२।०६ मा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, स्याङ्जाबाट नागरिकता प्राप्त गरेको पाइन्छ । निजले आफू सन्तोष खाँण भएको पुष्टि गर्न पेस गरेको उक्त नागरिकता प्रमाणपत्र र निजले मिति २०६२।५।३१ मा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कपिलवस्तुबाट प्राप्त गरेको नागरिकता प्रमाणपत्रमा निजको जन्म मिति २०४४।१।११ रहेको, निजको बाबुको नाम लेखबहादुर खाँण र जन्मस्थान दारसिङ्ग दहथुम उल्लेख भई निजको नामबाहेक नागरिकता प्रमाणपत्रमा रहेका अन्य विवरण एकै रहेको पाइयो । यसरी वारदातपश्चात् निर्मित कागजातमा समेत नामबाहेकका अन्य विवरण फरक नभएको अवस्था हुँदा अन्य नाम लेखाएकै कारण आरोपित कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने आधार बन्न सक्नेसमेत देखिँदैन । त्यस्तै यी प्रतिवादीको नाममा प्रस्तुत मुद्दाको आजको पेसीको जानकारी दिने क्रममा जारी भएको जानकारीपत्र बुझेको भरपाई गर्ने क्रममा यी प्रतिवादीले सन्तोष खाँण भनी सही गरेको मिसिल

संलग्न पेसी जानकारीको भरपाईबाट पनि देखिन्छ । यसबाट सन्तोष खाँण र लोकबहादुर खाँण दुई फरक व्यक्ति नभई एकै व्यक्ति भएकोमा विवाद नदेखिएकोले आफू अभियोगपत्रमा उल्लिखित व्यक्ति नभएको भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । तसर्थ, सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः प्रतिवादी सन्तोष खाँण भन्ने लोकबहादुर खाँणलाई साबिक मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको ३(५) नं. बमोजिम ६(छ) वर्ष तथा ३क नं. बमोजिम ५(पाँच) वर्ष गरी ११(एघार) वर्ष कैद सजाय हुने गरी भएको कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०७३।०१।२९ को फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको मिति २०७४।०२।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: गम्भीर घिमिरे

कम्प्युटर: समी नेपाली

**इति संवत् २०७८ साल मङ्सिर २१ गते रोज ३ शुभम् ।**

१५

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७८-WH-००८२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, रामफल सोनाहा वि. प्रमुख बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालयसमेत**

नान्दुराम सोनाहाको छोरा सीता सोनाहाको पति रामफल सोनाहा साबिक दौलतपुर गा.वि.स. वडा नं. २ हाल राजापुर नगरपालिका वडा नं. १ मा साबिक गोला गा.वि.स. वडा नं. २ हाल गेरुवा गाउँपालिकाको वडा नं.४ बाट मिति २०७४।०४।२६ गते बसाइँसराइ गरी गएको भन्ने बेहोराको जिल्ला बर्दिया, गेरुवा

गाउँपालिकाको मिति २०७८।०९।०९ को पत्र रहेको छ भने बर्दिया जिल्ला, राजापुर नगरपालिका १ नं. वडा कार्यालयको मिति २०७८।०९।०८ को पत्रबाट समेत सोही बेहोरा खुलेको हुँदा यी निवेदक रामफल सोनाहा मिति २०७४।०४।२६ गते साबिक गोला गा.वि.स. वडा नं. २, बर्दियाबाट राजापुर नगरपालिका वडा नं. १, बर्दियामा बसाइ सरेको देखिने।

बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालय, ठाकुरद्वारा, बर्दियाबाट चोरी सिकार तथा आखेटोपहार खरिद बिक्री मुद्दाको मिति २०६५।०९।२७ गतेबाट अनुसन्धान सुरु भई जिल्ला बर्दिया गोला गा.वि.स. वडा नं. २ बस्ने रामफल सोनाहासमेतका २९ जना प्रतिवादीहरूलाई मिति २०६५।०२।२० गते अभियोग दायर भएकोमा मिति २०६८।०९।११ गते उक्त मुद्दा फैसला भएकोमा प्रस्तुत रिट निवेदक रामफल सोनाहा मिति २०७४।०४।२६ गते साविक गोला गा.वि.स. वडा नं. २, बर्दियाबाट राजापुर नगरपालिका वडा नं. १, बर्दियामा बसाइँसराइ गरी आएको देखिन्छ भने निज बसाइँसराइ मितिभन्दा अगाडि अभियोगपत्रमा उल्लिखित जिल्ला बर्दिया, गोला गा.वि.स. वडा नं. २ कै ठेगानामा रहेको भन्ने उल्लिखित गेरूवा गाउँपालिका ४ नं. वडा कार्यालय र राजापुर नगरपालिका १ नं. वडा कार्यालयको पत्रबाट पनि पुष्टि भएको र निज निवेदक रामफल सोनाहाले अभियोगपत्रमा उल्लिखित ठेगानामा रामफल सोनाहा नाम भएका आफूबाहेकका अर्को व्यक्तिको अस्तित्व रहेकोसमेत पुष्टि गर्न नसकेकाले प्रस्तुत रिट निवेदक रामफल सोनाहा र बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालय, ठाकुरद्वारा, बर्दियाबाट चोरी सिकार तथा आखेटोपहार खरिद बिक्री मुद्दामा भएको फैसलाअनुसार हाल कारागार कार्यालय, बर्दियामा थुनामा रहेका जिल्ला बर्दिया, गोला गा.वि.स. वडा नं. २ बस्ने रामफल सोनाहा एकै व्यक्ति रहेको पुष्टि हुन आउने।

निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुनुपर्ने हो होइन ? भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा यी निवेदकउपर मुद्दाको अनुसन्धान तथा अभियोजन गर्ने साधिकार निकायले अनुसन्धान गरी अधिकारप्राप्त निकायमा मुद्दा दायर भई कानूनबमोजिमका प्रक्रिया पूरा गरी कसुर ठहर गरेको अवस्थामा सोही फैसला कार्यान्वयनको क्रममा पक्राउ परी कैदमा रहेको देखियो। यसरी साधिकार निकायबाट ठहर भएको कसुरमा सजाय भोगिरहेका यी निवेदकको निवेदन जिकिर अनुसारको संवैधानिक एवम् कानूनी हक अधिकारहरू हनन भएको भनी अर्थ गर्न मिल्ने अवस्था नभएको र निज गैरकानूनी रूपमा थुनामा रहेकोसमेत नदेखिँदा निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : श्यामहरि अधिकारी (उपसचिव)  
कम्प्युटर: समी नेपाली

**इति संवत् २०७८ साल फागुन १० गते रोज ३ शुभम्।**

१६

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०६९-WO-११८९, उत्प्रेषण, गणेश उराव वि. गंगाप्रसाद लिम्बूसमेत**

नागरिकको पहिचान गर्ने नागरिकताको प्रमाणपत्र, मृत्युदर्ता प्रमाणपत्रबाट समेत मोही मंगलु झागरको वास्तविक वतन मोरङ जिल्ला, दुलारी गा.वि.स. वडा नं. ६ हो भन्ने स्पष्ट देखिएबाट भूमि सुधार कार्यालय, मोरङबाट मिति २०५४।०९।१६ मा म्याद जारी हुँदा मोही मंगलु झागरको वास्तविक वतन मोरङ जिल्ला, दुलारी गा.वि.स. वडा नं. ६ मा जारी नभई कि.नं. १५ जग्गा रहेको ठाउँ साबिक वडा नं.९(ड) हाल वडा नं.७ मा जारी भई बेपत्ते तामेल भएको उक्त म्याद प्रथमदृष्टिमा नै रीतपूर्वक भन्न मिल्ने देखिएन। म्याद तामेलको उद्देश्य व्यक्तिलाई सुनुवाइको

मौका दिनु र उसलाई आफ्नो कुरा राख्न वा आफ्नो हक हितको बचाउ गर्न अवसर दिनु हो । मोहीको वतनभन्दा फरक वतनमा तामेल भएको म्यादबाट यी रिट निवेदकले सुनुवाइको मौका प्राप्त गर्न सक्ने अवस्था नै रहेको देखिएन । मोहीको वास्तविक वतनमा म्याद जारी नभई बेपत्ता तामेल भएका कारणबाट निवेदक सुनुवाइको मौकाबाट वञ्चित भएको र यसरी रिट निवेदकलाई सुनुवाइको मौका नै प्रदान नगरी एकतर्फी रूपमा भूमि सुधार कार्यालय, मोरङबाट मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भएको मिति २०५४।०३।०५ को निर्णय स्वच्छ सुनुवाइको सिद्धान्तविपरीत हुँदा कानूनसम्मत मान्न मिल्ने नदेखिने ।

मोही लगत कट्टा निर्णय भएको १६/१७ वर्षपछि रिट परेको हुँदा विलम्ब सिद्धान्तको आधारमा रिट खारेज हुनुपर्दछ भन्ने विपक्षीतर्फबाट उपस्थित विद्वान् अधिवक्ताले लिएको बहस जिकिर सम्बन्धमा हेर्दा विलम्बको सिद्धान्तमा निर्णय भएको मितिबाट यो यति अवधिभित्र रिट निवेदन पर्नुपर्ने भनी यान्त्रिक रूपमा गणना गर्न मिल्ने नभई उक्त निर्णय हुँदा निवेदकले सुनुवाइको मौका प्राप्त गर्नु वा गरेन भन्ने कुरा महत्त्वपूर्ण हुन आउँछ र सुनुवाइको मौका प्राप्त गरिसकेपछि मात्र सो प्राप्त गरेको समयबाट विलम्ब गरे नगरेको भन्ने निर्धारण गरिने हुन्छ । प्रस्तुत रिट निवेदनमा मोही लगत कट्टा भएको कुरा निवेदकले २०६९ साल माघमा १५ मा मात्र थाहा पाएको र सो मितिबाट छ(६) महिनाभित्र मिति २०७०।०१।२७ मा प्रस्तुत निवेदन परेको देखिँदा विलम्बको सिद्धान्त आकर्षित हुने अवस्था नदेखिने ।

अतः रिट निवेदकलाई सुनुवाइको मौका प्रदान नगरी निजका पिता मंगलु झागर मोही भएको मोरङ जिल्ला, दुलारी गा.वि.स. वडा नं.९(ड) कि.नं. १५ को ज.वि.१-१-१०१/२ जग्गाको मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भूमि सुधार कार्यालय, मोरङबाट मिति २०५४।०३।०५ मा भएको निर्णय प्राकृतिक न्यायको

सिद्धान्त विपरीत देखिँदा उक्त निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लक्ष्मी राना

कम्प्युटर: हर्क माया राई

इति संवत् २०७८ साल वैशाख ५ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं.३

१७

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७७-WH-०२६५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, विवेक कुमालको हकमा हंश कुमाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलालीसमेत

रिट निवेदक विवेक कुमालसमेतको हकमा राज्य विरुद्धको अपराध, आगो लगाउने, ज्यानसम्बन्धी कसुर र सङ्गठित अपराध मुद्दामा कानूनबमोजिमको पक्राउ अनुमति लिई कानूनबमोजिमको थुनुवा पुर्जी दिई जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलालीबाट मिति २०७७।१०।२० गतेदेखि लागु हुने गरी २०७७।१०।२२ गते पहिलो पटक म्याद थप माग भएकोमा कैलाली जिल्ला अदालतबाट पहिलो पटक मिति २०७७।१०।२० देखि लागु हुने गरी २०७७।१०।२२ गते पहिलो पटक दिन ५(पाँच) म्याद थपिएको र पुनः मिति २०७७।१०।२५ गते दिन १० म्याद थप भई मिति २०७७।१०।२५ देखि २०७७।११।४ सम्म दिन १०(दश) म्याद थप, मिति २०७७।११।५ मा दिन ५(पाँच) म्याद थप र २०७७।११।१० मा चौथो पटक दिन ३(तीन) म्याद थप भई कानूनको म्यादभित्रै मिति २०७७।११।१३ गते नै रिट निवेदक विवेक कुमालउपर सङ्गठित अपराध मुद्दाको अभियोग पत्र दर्ता भएको देखियो । मिति २०७७।११।१३ मा अभियोग दर्ता भई मिति २०७७।११।१४ गते दोस्रो दिन थुनछेक आदेश भएको र उक्त आदेशबमोजिम रिट निवेदक विवेक

कुमालबाट रु.५०,०००।- धरौट माग भएकोमा धरौट दिन नसकेकाले कानूनबमोजिमको कागज गराई थुनुवा पुर्जासमेत दिई कानूनबमोजिम कारागारमा पठाइएको देखियो । रिट निवेदक विवेक कुमालले मिति २०७७।१।२१ गते कारागार कार्यालय, कैलालीमार्फत माग भएको धरौटी रु.५०,०००।- दाखिला गरी निज रिट निवेदक विवेक कुमाल तारेखमा छुटिसकेको भन्ने बेहोरा कैलाली जिल्ला अदालत, जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलाली र ऐ.कार्यालयका कार्यालय प्रमुखको तर्फबाट यस अदालतमा पर्न आएको लिखित जवाफबाट देखिन्छ । रिट निवेदकका तर्फबाट उपस्थित कानून व्यवसायी र नेपाल सरकारको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्तासमेतले सोको जानकारी इजलाससमक्ष गराएको पाइन्छ । बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश गैरकानूनी थुनामा रहेको बन्दीलाई थुनाबाट मुक्त गर्नका लागि जारी गरिने आदेश भएको हुँदा बन्दी नै थुनाबाट मुक्त भइसकेको अवस्थामा रिट जारी गर्नुको औचित्य नै नरहने हुँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्ने अवस्था देखिएन । रिट निवेदक विवेक कुमाल मिति २०७७।१।२१ गते कारागार कार्यालय, कैलालीमार्फत् माग भएको धरौटी रु.५०,०००।- दाखिला गरी तारेखमा छुटिसकेको देखिएकोले रिट निवेदनबमोजिम आदेश जारी गरिरहनु पर्ने ।

अतः रिट निवेदनको माग अनुसार बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन पर्ने स्थिति विद्यमान नदेखिँदा रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः नवीनकुमार यादव  
कम्प्युटरः चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७७ चैत्र १७ गते रोज ३ शुभम् ।

१८

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७७-CR-०५५८, मानव अपहरण तथा शरीर बन्धक, नेपाल सरकार वि. रीता गुरुडसमेत

अपहरण लिने तथा शरीर बन्धक लिने कसुरसम्बन्धी व्यवस्था हेर्दा उक्त ऐनको दफा ३ मा कसैलाई ज्यान लिने, कुटपिट गरी चोट पुऱ्याउने, जबरजस्ती करणी वा अप्राकृतिक मैथुन गर्ने, बिक्री गर्ने, दास बनाउने, निजको इच्छा विरुद्ध काममा लगाउने, यातना दिने, वेश्यावृत्तिमा लगाउने, कुनै काम गर्न बाध्य गराउने, छुटकारा रकम (फिरौती) लिने वा शरीर बन्धकमा लिइएको व्यक्ति वा निजको हकवालाको धनसम्पत्ति प्राप्त गर्ने, व्यवसाय समर्पण गराउने वा प्रचलित कानूनबमोजिम कसुर हुने अन्य कुनै काम गरेमा कसुर मानी सजाय गर्ने व्यवस्था गरेको छ । यसको अलावा लेखिएबाहेक अन्य उद्देश्यले अपहरण गरेमा वा शरीर बन्धक लिएमा पनि सजायको व्यवस्था गरेको छ । सोबाहेक अन्य उद्देश्य भन्ने शब्दले पनि माथि उल्लिखितबाहेकका कुनै गैरकानूनी उद्देश्य प्राप्तिका लागि कुनै कार्य गरेको हुनुपर्ने देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूको अनुसन्धान तथा अदालतमा भएको बयान, जाहेरवालाको जाहेरी बेहोरा तथा अदालतको बकपत्र, घटना विवरण कागज गर्ने पीडित श्रद्धा डाँगीको घटना विवरण कागज र बकपत्रसमेतबाट कुनै गैरकानूनी लाभ प्राप्त गर्ने वा कुनै गैरकानूनी कार्य गर्ने गराउने उद्देश्यबाट श्रद्धा डाँगीलाई साथमा लगेको भन्ने तथ्य स्थापित हुन आएको छैन । यस अवस्थामा उक्त कानूनअन्तर्गतको कसुर मान्न सक्ने नदेखिने ।

सरकारवादी फौजदारी मुद्दामा कसुरदारको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीमा रहन्छ । अभियोग लगाएर मात्र हुँदैन सो अभियोग पुष्टि हुने प्रमाण वादी पक्षले प्रस्तुत गर्न सक्नुपर्छ । जसलाई प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले स्पष्ट गरेको छ । के कस्तो कार्यबाट के कस्तो कानूनको उल्लङ्घन भई अपराधजनित कार्य भयो र त्यस्तो कार्यमा को कसको के कसरी संलग्नता रहेको छ भन्ने कुरा पनि अभियोजन पक्षले शङ्कारहित तवर (Beyond the Reasonable Doubt) ले पुष्टि गरेको हुनुपर्छ ।

प्रतिवादीहरूको अनुसन्धान तथा अदालतमा भएको इन्कारी बयान, जाहेरवालाको जाहेरी दरखास्त एवम् अदालतको बकपत्र, घटना विवरण कागज गर्ने पीडित श्रद्धा डाँगी तथा सुजन बस्नेतको घटना विवरण कागज एवम् अदालतका बकपत्रसमेतबाट प्रतिवादीहरूको छोरी तथा नातासम्बन्धकी मीना गुरुङको खोजीका लागि मीनाकी साथी पीडित श्रद्धा डाँगीलाई साथमा लगेको तथ्य स्थापित भएको अवस्थामा वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा शङ्काकै भरमा प्रतिवादीहरूलाई अपहरण तथा शरीर बन्धकजस्तो गम्भीर कसुरमा अभियोग दाबीअनुसार सजाय गर्नु फौजदारी न्याय सिद्धान्तको प्रतिकूल हुन्छ । अतः सुरु जिल्ला अदालतले प्रतिवादीहरूलाई अपहरण तथा शरीर बन्धकको कसुर गरेको ठहर गरी गरेको फैसला मिलेको नदेखिँदा सुरुको फैसला उल्टी भई प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर्छ भनी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट भएको फैसला मनासिब देखिने ।

यसरी प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार ठहर्‍याई सजाय गर्ने गरी सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५/१२/३ मा भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरू रीता गुरुङ, यामबहादुर गुरुङ, सुमन गुरुङ, गणेश भन्ने गोविन्द गुरुङ, सीता भन्ने पल्पसा गुरुङ, रत्नमाया गुरुङ र लोकेश गुरुङले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७६/११/१८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादीहरूलाई सुरु अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: रोशनकुमार झा  
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७८ आषाढ २२ गते रोज ३ शुभम् ।

१९

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७७-WO-०६०८, उत्प्रेषण / परमादेश, क्षेत्रबहादुर बुढाथापा वि. सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयसमेत

प्रस्तुत रिट निवेदनको मागदाबीको विषय नगरपालिकाको प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतको नियुक्ति नभएसम्म अस्थायीरूपमा अल्पकालीन अवधिको लागि कामकाज चलाउन कामकाजको जिम्मेवारी दिने/पाउने विषय भएको भन्ने बेहोरा निवेदकले रिट निवेदनमा नै उल्लेख गरेको देखिन्छ । विपक्षीहरू सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय र चन्दननाथ नगरपालिका, जुम्लाको लिखित जवाफ एवम् मिसिल सामेल चन्दननाथ नगरपालिकाको कार्यालय, जुम्लाको च.नं.८२२ मिति २०७७/१०/१८ को पत्रबाट निवेदकले कामकाज गर्ने जिम्मेवारी पाउँ भनी दाबी गरेको पदमा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ८४(४) बमोजिम प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत नियुक्ति नभएसम्मका लागि नेपाल सरकारले निजामती सेवाको अधिकृत कर्मचारीलाई प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतका रूपमा काम गर्न खटाउनुपर्ने भई श्री सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंको मिति २०७७।०९।२९ को निर्णयानुसार निजामती सेवाको रा.प.द्वितीय श्रेणीका कर्मचारी श्री तीर्थराज पौडेललाई चन्दननाथ नगरपालिका, जुम्लाको प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतको कामकाज गर्न खटाई निज मिति २०७७।१०।१४ गते चन्दननाथ नगरपालिका, जुम्लामा हाजिर भई कामकाज गर्न सुरु गरिसकेको देखिँदा रिट निवेदनको प्रयोजन समाप्त भइसकेकोले प्रस्तुत रिट निवेदनका सन्दर्भमा थप विवेचना गरिरहनु नपर्ने ।

तसर्थ, निवेदकले कामकाज गर्ने जिम्मेवारी

पाउँ भनी दाबी गरेको चन्दननाथ नगरपालिका, जुम्लाको प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतको पदमा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ८४(४) बमोजिम प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत नियुक्ति नभएसम्मका लागि नेपाल सरकारले निजामती सेवाको अधिकृत कर्मचारीलाई प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतका रूपमा काम गर्न खटाउनुपर्ने भई निजामती सेवाको रा.प.द्वितीय श्रेणीका कर्मचारी तीर्थराज पौडेललाई सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंको मिति २०७७।०९।२९ को निर्णयानुसार कामकाज गर्न खटाई निज मिति २०७७।१०।१४ गते चन्दननाथ नगरपालिका, जुम्लामा हाजिर भई कामकाज गर्न सुरु गरिसकेको देखिँदा रिट निवेदन माग अनुसार आदेश जारी हुने अवस्था विद्यमान नभई निवेदनको प्रयोजन नै समाप्त भइसकेको देखिएकाले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): कृष्णप्रसाद अधिकारी  
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

**इति संवत् २०७७ चैत्र १८ गते रोज ४ शुभम् ।**

२०

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७२-WO-०८३१, उत्प्रेषण, विराटनगर अस्पताल प्रा.लि. वि. श्रम अदालतसमेत**

निवेदकले श्रम अदालत काठमाडौंको मिति २०७२।१०।१३ को फैसला त्रुटिपूर्ण भएकाले बदर गरिपाउँ भनी रिट क्षेत्राधिकारको प्रयोग गरी प्रस्तुत निवेदन दिएको देखिन्छ। प्रत्यर्थी टीकामाया कार्कीले निवेदक विराटनगर अस्पतालमा २० वर्षभन्दा बढी काम गरेको र हाल निज उक्त अस्पतालमा कार्यरत नरहेको तथ्यमासम्म विवाद रहेको छैन। प्रत्यर्थी टीकामाया कार्कीले प्रतिष्ठानको सेवामा लापरवाही गरी आचरणमा नबसेको भन्ने निवेदकतर्फको जिकिर रहेको छ भने अस्पतालमा काम गर्ने वातावरण नभई

आफूले पाउनुपर्ने उपदान, बोनस तथा बिदाको रकम पाउन निवेदन दिएको भन्ने प्रत्यर्थीमध्येका टीकामायाको जिकिर भई सेवामा नरहनुको कारणका सम्बन्धमा मात्र फरक फरक भनाइ रहेको देखियो। यद्यपि निवेदक अस्पतालले निज टीकामाया कार्कीलाई ड्युटीमा लापरवाही गरेको भन्ने आधारमा प्रतिष्ठानको नियमानुसार कारबाही गरी सेवाबाट हटाएको भन्न सकेको अवस्था छैन। यस्तो अवस्थामा सेवामा नरहेका कर्मचारीले के कस्तो सुविधा पाउने भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा श्रम नियमावली, २०५० को नियम २३(१) मा “प्रतिष्ठानमा तीन वर्ष वा सोभन्दा बढी सेवा गरेका कुनै स्थायी कामदार वा कर्मचारीले उमेरको हदबाट अवकाश पाएमा वा राजीनामा स्वीकृत गराई अवकाश पाएमा वा अन्य कुनै किसिमबाट प्रतिष्ठानको सेवाबाट अलग भएमा त्यस्तो कामदार वा कर्मचारीले देहायको दरले हुने आउने एकमुष्ट रकम उपदान पाउने छ – (क) पहिलो सात वर्षको सेवाको प्रत्येक वर्षको निमित्त सो वर्ष खाइपाइ आएको १/२ महिनाको पारिश्रमिक। (ख) सात वर्षभन्दा बढी पन्ध्र वर्षको सेवाको प्रत्येक वर्षको निमित्त सो वर्ष खाइपाइ आएको २/३ महिनाको पारिश्रमिक। (ग) पन्ध्र वर्षभन्दा बढीको सेवाको प्रत्येक वर्षको निमित्त सो वर्ष खाइपाइ आएको १ महिनाको पारिश्रमिक।” भन्ने व्यवस्था भएको पाइने।

श्रम नियमावली, २०५० को नियम २३(१) मा रहेको “अन्य कुनै किसिमबाट प्रतिष्ठानको सेवाबाट अलग भएमा” भन्ने वाक्यांश र नियम ३०(४) मा “अरु कुनै प्रकारले अवकाश प्राप्त गरेमा” भन्ने वाक्यांशलाई निवेदकले जिकिर लिएजस्तो बिरामी परेको वा दुर्घटनामा परेको कारणले सेवा निरन्तरता दिन नसकेको अवस्था भनी सङ्कुचित रूपमा व्याख्या गर्न मिल्ने देखिँदैन। अन्य अवस्था भनेपछि त्यहाँ उल्लेख भएको अवस्थाबाहेक अन्य जुनसुकै अवस्था हुन सक्छ। कर्मचारीले पाउने सुविधाका सम्बन्धमा नियममा नै यस्तो अवस्थामा सुविधा पाउन

सक्ने छैन भनी स्पष्ट व्यवस्था गरी निषेध नगरेसम्म निजले पाउने सुविधाबाट वञ्चित गर्न मिल्दैन। प्रत्यर्थी टीकामाया कार्की निवेदक प्रा.लि. मा लगभग २१ वर्ष काम गरिसकेकी र हाल निज सेवामा नरहेकोमा विवाद नभएको तथा निजउपर प्रा.लि. का तर्फबाट कुनै कारबाही चलेको पनि नदेखिएको अवस्थामा निजले नियमबमोजिम पाउने उपदान र सञ्चित घरबिदाको भुक्तानी सुविधा पाउने।

अतः प्रचलित श्रम कानूनबमोजिम श्रम अदालतमा पुनरावेदन परी अन्तिम भइसकेको, प्रतिष्ठानले श्रम ऐन र नियमावलीबमोजिम कर्मचारीलाई सेवाबाट अवकाश पाउँदा दिनुपर्ने रकम नदिएपछि यसबारे विवाद भई श्रम कार्यालयको निर्णय र श्रम अदालतको फैसलाबमोजिम प्रत्यर्थीलाई दिनुपर्ने रकम दिन बाँकी नरहेको भनी निवेदनमा उल्लेख गरे पनि सो सम्बन्धमा पुनरावेदनको रोहबाट प्रमाणको विवेचना गरी भएको फैसलामा संविधान र कानूनको गम्भीर उल्लङ्घन भएको पनि नदेखिएको तथा निवेदकको कुनै संवैधानिक हकसमेत हनन भएको पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिलेन। प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७८ वैशाख १३ गते रोज २ शुभम्।

२१

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७७-RC-००५२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. शंकरकुमार थापामगर

मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं.ले कानूनबमोजिम बाहेक कसैले कुनै मानिसको ज्यान मार्न, मार्न लगाउन वा मार्नको उद्योग गर्न हुँदैन भन्ने व्यवस्था गरेको छ। त्यस्तै मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको, १३(१) ले धार भएको वा नभएको जोखिमी हतियार गैह्रले हानी, रोपी, घोची, ज्यान मारेमा ज्यानमारा

तहर्छ, सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्नुपर्दछ भन्ने व्यवस्था गरेको छ। प्रतिवादी शंकरकुमार थापामगरले अदालतमा कसुरमा इन्कारी बयान गरे तापनि मौकामा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा, आफूहरूलाई मृतक रविन्द्रमान श्रेष्ठले गाली गलौज गरी थर्काएकोमा हामी सबै जम्मा भई खुकुरीलगायतका दाउरा आदिले हानी मारेको र आफूले खुट्टासमेतका शरीरका भागमा ३ ठाउँमा हानेको भनी लेखाइदिएको पाइन्छ र निज प्रतिवादीको सो मौकाको बयानलाई मृतकको लास प्रकृति मुचुल्का र भेरी अञ्चल अस्पतालबाट प्राप्त शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतले समर्थन गरेको देखिन्छ। यसरी प्रतिवादीको मौकाको बयान, मृतकको लास प्रकृति मुचुल्का र शव परीक्षण प्रतिवेदन, बरामदी मुचुल्कासमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणबाट प्रतिवादी शंकरकुमार थापामगरले मार्ने मनसायले नै मृतक रविन्द्रमान श्रेष्ठलाई खुकुरीलगायतका दाउरा आदिले प्रहार गरेको र सोही चोटका कारण उपचारका क्रममा निजको मृत्यु भएको देखिएकोले निज प्रतिवादीले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर अपराध गरेको पुष्टि हुन आएको देखिने।

अतः प्रतिवादी शंकरकुमार थापामगरलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्छ। सुरु बाँके जिल्ला अदालतको मिति २०७१।८।१० मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्छ। पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति २०७३।०३।१९ मा भएको फैसला साधकको रोहबाट जाँच गर्दा मिलेकै देखिन आएकोले साधक सदर हुने ठहर्छ। तापनि केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९ (२) (ख) मा कुनै कसुरको सजाय साबिक ऐनमा मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएकोभन्दा बढी रहेछ भने संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको, साथै

फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्छ भन्ने व्यवस्था रहेको परिप्रेक्ष्यमा मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ मा सर्वस्वसहित जन्मकैदको कानूनी व्यवस्था नभएको र ऐ.को दफा १७७(२) मा ज्यान मर्ने कसुर गर्ने गराउने व्यक्तिलाई जन्मकैदको सजाय मात्र हुने भनी कानूनी व्यवस्था रहे भएको देखिएकोले प्रस्तुत मुद्दामा पनि यी प्रतिवादी शंकरकुमार थापामगरलाई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत: नवीनकुमार यादव

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७७ फाल्गुण १० गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं.४

२२

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०६६-CI-००८५, फैसला बदर, गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय वि. कान्छी मानन्धरसमेत

यस अदालतको संयुक्त इजलासबाट पुनरावेदक मोहन कपाली विपक्षी गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयसमेत भएको २०६५ सालको दे.पु.नं. ०१८३ को मोही लगतकट्टा मुद्दामा मिति २०६६।७।२० मा फैसला हुँदा "गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशले मोहियानी हक खोसिने व्यवस्था नगरेकोले उक्त दफा प्रारम्भ हुनुपूर्वका कार्यलाई यस दफाले असर गर्न सक्ने स्थिति रहँदैन" भनी र गुठी संस्थान ऐन २०३३, को दफा २७(क) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशले अधिबाट सिर्जित वादीको हकलाई असर पार्न नसक्ने भनी

पुनरावेदक गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयसमेत विपक्षी वेखालाल कपालीको मु.स. गर्ने मधुसुदन दर्शनधारी भएको २०६४ सालको दे.पु.नं. ०१६८ को निर्णय बदर मुद्दामा मिति २०६६।१२।२४ मा फैसला भएको देखिन्छ । यस्तै विवादको निरूपणको सिलसिलामा यस अदालतबाट यसअघि भएका व्याख्या र मान्यतासँग असहमत हुनुपर्ने कुनै कारण नदेखिने ।

वि.सं. १९९८ सालको गुठी लगत हेर्दा, विवादित जग्गाको मोहीमा नाति महर्जन जनिएको पाइन्छ । वि.सं. १९९८ सालदेखि मोही जनिई वि.सं. २०२१ मा सभै नाप जाँच हुँदा मोहीको नाउँ दशनारायण महर्जन उल्लेख भई निरन्तर रूपमा मोही भई मोहीको हैसियतले भोग गरिरहेको भन्ने देखियो । १९९८ सालदेखि मोही भई भोग गर्दै आएकोमा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ मा वि.सं. २०४१ सालमा भएको संशोधनको प्रावधान, दफा २७ (क) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांश, उक्त न्यायिक सिद्धान्तहरूबाट प्रस्तुत मुद्दाको रोहमा आकर्षित हुने अवस्था पनि देखिन नआउने ।

पहिलेको ऐनबमोजिम प्राप्त हक सुविधालाई पछि बनेको कानूनले प्रतिकूल असर पार्न सक्ने नदेखिँदा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ देहाय (क) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको विपरीत पुनरावेदन अदालतबाट फैसला भएको भनी प्रतिवादीका तर्फबाट लिएको जिकिर एवम् यस अदालतबाट मुद्दा दोहोर्नाई हेर्ने अनुमति प्रदान गर्दा लिइएको आधारसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारण तथा न्यायिक सिद्धान्तबाट विवादित कि.नं. ८४,८९,९४ को जग्गा राज गुठीअन्तर्गत छुट गुठीको रहेको देखिँदा कान्छी मानन्धरलाई मोही कायम गर्ने गरेको भूमि सुधार कार्यालय काठमाडौंको मिति २०५९।१२।२० को फैसला बदर गर्न नमिली वादी दाबी खारेज गर्ने गरेको भूमिसुधार कार्यालय काठमाडौंको मिति

२०६०।१२।१८ को निर्णय सदर हुने ठहरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६३।११।२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सरोजनिधि वाग्ले

कम्प्युटर: देबिमाया खतिवडा (देबिना)

**इति संवत् २०७६ साल पुस २८ गते रोज २ शुभम् ।**

**२३**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०६६-CI-००८६, निर्णय बदर, सेमन्तराज चापागाईसमेत वि. चैत नारायण महर्जनसमेत**

१९९८ सालको खडग निसानको लिखतमा नै मोही जनिई निरन्तर रूपमा जोतभोग गरी नापी हुँदासमेत मोही जनिएको देखिँदा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ मिति २०४१।०८।२४ मा संशोधन भई थप गरिएको दफा २७(क)को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको प्रावधान प्रस्तुत विवादित कि.नं. ८को मोहीसम्बन्धी विषयको हकमा उल्लिखित न्यायिक सिद्धान्तहरूबाट आकर्षित हुने देखिन आएन । अर्थात् गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ संशोधन हुनुपूर्व नै मोही रही रहेको भन्ने लिखतहरूबाट देखिएको जग्गामा त्यस्ता मोहीले प्राप्त गरेको मोही हक पछि संशोधन भएको कानूनले असर पार्नसक्ने देखिने ।

प्राप्त हक सुविधालाई पछि बनेको कानूनले प्रतिकूल असर पार्नसक्ने नदेखिँदा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ देहाय (क) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको विपरीत पुनरावेदन अदालतबाट फैसला भएको भनी प्रतिवादीका तर्फबाट लिएको पुनरावेदन जिकिर एवम् यस अदालतबाट मुद्दा दोहोऱ्याई हेर्ने अनुमति प्रदान गर्दा लिइएको आधारसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण तथा न्यायिक सिद्धान्तबाट गुठी संस्थानले मचाम महर्जनसमेत ९ जनालाई मोही कायम गर्ने गरी

२०४२।१०।२८ मा र १८ जनालाई मोही कायम गर्ने गरी गुठी लगत तथा तहबिल कार्यालयबाट मिति २०४५।५।१९ मा भएको निर्णय बदर गरी उपर्युक्त जग्गामा विपक्षी वादीहरूको नाम मोहीमा समावेश गर्ने गरी भएको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०५९।८।५ को फैसला सदर हुने ठहरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६३।११।२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सरोजनिधि वाग्ले

कम्प्युटर: देबिमाया खतिवडा (देबिना)

**इति संवत् २०७६ साल पुस २८ गते रोज २ शुभम् ।**

**२४**

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७०-CI-०३३८, निषेधाज्ञा, मोहन महर्जनसमेत वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयसमेत**

विवादित कि.नं. ५२ को क्षेत्रफल ०-१२-० जग्गाधनीमा अन्नपूर्ण गुठीको जग्गा र गुठी संस्थानअन्तर्गतको जग्गा भएको सम्बन्धमा विवाद भएको नदेखिने । यी पुनरावेदकहरूले विवादित जग्गा मोहीको रूपमा कमाइआएको दाबी गर्दै उक्त जग्गा गुठी रैतानमा परिणत गर्न निवेदन दिएको देखिन्छ । गुठीको जग्गाको गुठियारहरू गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ (क) बमोजिम मोही हुन नसक्ने हुँदा मोही लगत कट्टा गरी मोही महल खाली राखी गुठी तैनाथी कायम गरेको निर्णय गुठी संस्थानबाट भएको देखिने ।

वस्तुतः गुठी जग्गाको गुठियारहरू गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ (क) बमोजिम मोही हुन नसक्ने हुँदा गुठी संस्थान (कार्य व्यवस्था) विनियम, २०४९ को नियम १३ (२) अनुसार मोही लगत कट्टा गरी मोही महल खाली राखी गुठी तैनाथी कायम गरेको निर्णय गुठी संस्थानबाट भएको र उक्त निर्णयका सम्बन्धमा सर्वोच्च अदालतबाट समेत न्यायिक निर्णय भई अन्तिम भई बसेको ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट विवादित जग्गामा पुनरावेदकहरूको निर्विवाद हक रहेको मान्न मिल्ने अवस्था नभएकोले पुनरावेदन जिकिर अनुरूप निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न नमिली प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ठहराई तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६९।१०।१० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः सरोजनिधि वाग्ले

कम्प्युटरः देबिमाया खतिवडा (देबिना)

**इति संवत् २०७६ साल पुस २८ गते रोज २ शुभम्।**

२५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-WO-०९४४, उत्प्रेषण / परमादेशसमेत, राजाराम लोनिया वि. पुनरावेदन अदालत बुटवलसमेत**

सगोलको अवस्थामा रहेका सबै अंशियारको मन्जुरीले वा घरको मुख्य व्यक्तिले घर व्यवहार चलाउन लिएको ऋणको दायित्व सामान्यतः सगोलका अंशियारमा नै रहने हो। यी निवेदकले जिकिर लिएबमोजिम मिति २०६७।०२।२१ मा घर व्यवहार चलाउनको लागि विपक्षीमध्येकी रामरतीदेवी लिखतमा साक्षी बसी रामज्ञानी कुर्मिले १,५०,०००।- २०६७ साल चैत्रभित्रमा सावाँ ब्याज बुझाउने गरी भाखा राखी निजबाट कर्जा लिएकोमा विपक्षीमध्येका उदयभान कुर्मी भने उक्त लिखतमा साक्षी/रोहबरमा रहेको भने देखिएन। अलग अलग स्थानमा व्यवहार गरी बसेको, ऋण लिँदा तमसुकमा साक्षी नबसेको, मन्जुरी नलिएको स्थितिमा सो प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन नै नगरी सगोलको अवस्थामा रहेको सबै अंशियारले स्वतः ऋणको दायित्व बेहोर्नुपर्ने भनी व्याख्या गर्न मिल्ने हुँदैन। अंश हकलाई निष्क्रिय तुल्याउने उद्देश्यले भएका लेनदेनको कारोबारबाट अंशियारको अंशहक समाप्त पार्नु अंशबन्डाको महलको उद्देश्यविपरीत हुने। यी रिट निवेदकले लेनदेन मुद्दामा भएको फैसला अनुसारको

बिगो सो तमसुक गरिदिने व्यक्तिबाट असुलउपर गर्न सक्ने अवस्था रहेकै देखिने।

अतः विपक्षीमध्येका उदयभान कुर्मी वादी तथा विपक्षीमध्येकी रामरतीदेवी कुर्मीसमेत प्रतिवादी रही नवलपरासी जिल्ला अदालतमा चलेको संवत् २०६८ सालको दु.दे.नं. ६६-०६७-००९६७/३३ को अंश नामसारी मुद्दामा उक्त मुद्दाका प्रतिवादी रामज्ञानी कुर्मीसमेतको संयुक्त प्रतिउत्तर बेहोराबाट यी विपक्षीमध्येका उदयभान कुर्मी र रामज्ञानी कुर्मीसमेत भारत र नेपालमा अलग अलग बस्ने गरेको भनी स्वयम् प्रतिवादीहरूले वादीसँग व्यवहार अलग छ भनी स्वीकार गरेको अवस्थामा तहसिलदारबाट मिति २०७१।०६।०१ मा भएको आदेश सदर गर्ने गरी जिल्ला न्यायाधीशबाट मिति २०७१।१०।०८ मा भएको आदेश बदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७१।१२।१९ मा भएको आदेशमा कानूनी त्रुटि रहेको देखिन आएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतः कृति थापा

**इति संवत् २०७५ साल आषाढ १३ गते रोज ४ शुभम्।**

२६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७०-CR-०४९५, ०७०-CR-१२९३, सम्बन्ध विच्छेद, निरु महर्जन प्रजापति वि. महेश महर्जन, महेश महर्जन वि. निरु महर्जन प्रजापति**

जेठी श्रीमती निरु महर्जन प्रजापतिसँग मानो छुट्टिएको मिति २०६७।६।१७ भन्दा अघि नै कान्छी श्रीमती निरु प्रजापतिको वादी महेश महर्जनसँग विवाह भएको छ। तर नाता सम्बन्धमा विवाद भएपछि निज कान्छी श्रीमती निरु प्रजापतिले यी वादी महेश महर्जनलाई नाता कायम मुद्दा दिएको र सो मुद्दाको फिरादमा नै आफू ३ महिनाको गर्भवती भएको तथ्य पनि खुलाएको अवस्था छ। नाता कायम मुद्दा विचाराधीन रहेको अवस्थामा नमन महर्जनको

जन्म भएको छ । सो तथ्य उक्त नाता कायम मुद्दाको फैसलाले पनि बोलेको अवस्था छ । यस्तो अवस्थामा निज कान्छी निरु प्रजापतिलाई नाता कायम मुद्दाले अंशियार बनाई निजले अंश पाउने तर सो नाता कायम मुद्दा विचाराधीन रहेकै अवस्थामा जन्मेका यी नमन महर्जन मानो छुट्टिएको मितिभन्दा पछि जन्मेको आधारले अंश नपाउने भनी व्याख्या गर्नु न्यायोचित हुँदैन । हाल प्रचलित मुलुकी देवानी संहिता, २०७४ को दफा २०६ को उपदफा (२) बमोजिम गर्भमा रहेको सन्तानले पनि अंशहक प्राप्त गर्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पनि देखिन्छ । अंश जस्तो जन्मसिद्ध रूपमा प्राप्त हुने हकबाट कुनै अंशियारलाई विमुख गराउन नमिल्ने ।

वादी महेश महर्जनसँग प्रतिवादी निरु महर्जन प्रजापतिको सम्बन्ध बिग्रीएको कारण निज निरु महर्जन प्रजापति मिति २०६२।२।१६ देखि माइत गई बसेको तथ्य स्वयम् वादी महेश महर्जनले खुलाएका छन् । त्यसपछि यी वादी महेश महर्जनले मिति २०६४।१।२ मा रविन्द्रकुमार अमात्यबाट उक्त दाबीको ऋण लिएको भन्ने देखिन्छ । यसरी यी वादी प्रतिवादीबिच सम्बन्ध बिग्रीएको अवस्थामा सो ऋण निजको लागि समेत खर्च भएको भन्ने कुरा स्वाभाविक हुँदैन । साथै त्यति रकमको उक्त ऋण यी वादीले के प्रयोजनमा उपयोग गरे भन्ने तथ्य स्पष्ट रूपमा निज वादीले खुलाउन सकेका छैनन् । यसबाट उक्त ऋण प्रतिवादी निरु महर्जन प्रजापतिले बेहोर्नुपर्ने प्रकृतिको नदेखिने ।

अतः उपर्युक्त विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट पेस भएका तायदातीमा उल्लिखित सम्पत्तिहरूबाट ४ भागको १ भाग अंश निरु महर्जन प्रजापतिले पाउने ठहर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला सो हदसम्म नमिलेकोले केही उल्टी भई वादी महेश महर्जन -१, निजको जेठी श्रीमती प्रतिवादी निरु महर्जन प्रजापति-१ र निज तर्फबाट जन्मेका छोरा मंजिल महर्जन प्रजापति -१ र वादीको कान्छी

श्रीमती निरु प्रजापति -१, निज तर्फबाट जन्मेका छोरा नमन प्रजापति -१ समेत गरी ५ अंशियार रहेको देखिँदा प्रतिवादी निरु महर्जन प्रजापतिले तायदातीमा उल्लिखित सम्पत्तिहरूबाट ५ खण्डको १ खण्ड अंश छुट्ट्याई लिन पाउने र वादी महेश महर्जनले रविन्द्रकुमार अमात्यसँग लिएको ऋण रकम प्रतिवादी निरु महर्जन प्रजापतिले तिर्न नपर्ने भई सो ऋण रकम बन्डा नहुने । फैसला तयार गर्ने: शा.अ. कल्याण खड्का  
कम्प्युटर: देबिमाया खतिवडा  
**इति संवत् २०७६ साल माघ २ गते रोज ५ शुभम् ।**

२७

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७०-CR-०७२४, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. प्रमोदप्रसाद काहार**

प्रस्तुत मुद्दामा वारदातको प्रकृति, पीडितलाई लागेको घाउचोटको गाम्भीर्य र वारदातको समग्र परिस्थिति हेर्दा ज्यान मार्ने उद्योग कसुर स्थापित हुनका लागि आवश्यक तत्त्वहरू: ज्यान मार्ने मनसाय, तयारी, ज्यानै मार्नेसम्मको कार्य सम्पन्न भई तेस्रो पक्षको अप्रत्यासित उपस्थितिले मात्र ज्यान बाँच्न पाएको भन्नेजस्ता तत्त्वहरूको विद्यमानतालाई स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादी प्रमोदप्रसाद काहारले पीडित गंगाराम विश्वकर्मालाई ज्यान मार्ने नै मनसायले छुरीले प्रहार गरेका हुन् भन्ने पुष्टि हुन सकेन । निजलाई ज्यान मार्ने उद्योगतर्फको कसुरमा सफाइ दिई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम कुटपिटतर्फ परिणत हुने ठहर्छ भन्ने तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, धनकुटाको मिति २०७०।०३।०४ को फैसला मिलेकै देखियो । प्रतिवादीलाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर नपुग्ने ।

अतः उल्लिखित तथ्य, कानूनी व्यवस्था तथा नजिर सिद्धान्तसमेतका आधारबाट प्रतिवादी

प्रमोदप्रसाद काहारलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद हुने ठहर गरी धनकुटा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१०।४ मा भएको फैसला उल्टी भई निज प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने र प्रस्तुत वारदात सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम कुटपिटतर्फ परिणत हुने ठहर्छ भनी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०७०।०३।०४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: हेमा पाण्डे

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

**इति संवत् २०७७ साल साउन १२ गते रोज ६ शुभम्।**

२८

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७३-CR-१२९६, ०७५-CR-०७५०, ०७६-CR-०२८२, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. टंकमाया वि.क. भन्ने टंकमाया कामीसमेत, नेपाल सरकार वि. बुच्ची भन्ने लोचनदेवी वि.क., टंकमाया कामी वि. नेपाल सरकार**

फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीउपरको अभियोग पुष्टि गर्ने दायित्व वादीको हो प्रमाणको भार प्रतिवादीमा रहने कानूनी व्यवस्था कै आधारमा अभियोग लगाउँदैमा वादीको दायित्व समाप्त भएको भन्न नमिल्ने । यो कानूनको यो व्यवस्था प्रतिकूल प्रतिवादीहरूले यो यस्तो कार्य गरेको भन्ने कुरा अभियोगबाट स्पष्ट देखिनुपर्ने । सङ्कलित सबुद प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूले दाबीबमोजिमको नै कसुर गरेको स्पष्ट देखाइएको हुनुपर्ने फौजदारी न्यायको विश्वव्यापी मान्यता हो । उपर्युक्तानुसार कानूनमा व्यवस्था भएको भनी वादीले पूरा गर्नुपर्ने

दायित्व प्रतिवादीले पूरा गर्नुपर्छ भन्न नमिल्ने ।

प्रत्यर्थी प्रतिवादी बच्चु भन्ने लोचनदेवी वि.क. ले भारत दिल्ली नौगजास्थित मेरिट नाम गरेको मासु फ्याक्ट्री सञ्चालन गरेकी र सो फ्याक्ट्रीमा काममा लगाइदिने भनी सहप्रतिवादीहरू टंकमाया कामी र सागमाया घिसिडले पीडितलाई उक्त कारखानामा पुऱ्याई यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी बुच्ची भन्ने लोचनदेवी वि.क.को जिम्मा लगाएका भन्ने तथ्य स्थापित भएको छ । त्यस्तो होइन, छैन भनी स-प्रमाण अदालतमा उपस्थित भई आफ्नो बचाउ गर्नुपर्नेमा निज प्रतिवादी लोचनदेवी वि.क. ले अदालतबाट जारी भएको म्यादमा समेत हाजिर नभई हालसम्म फरार रहेको र मौकामा पक्राउ परेका सहप्रतिवादीहरू टंकमाया कामी र सागमाया घिसिडले पीडितलाई यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी लोचनदेवी वि.क. लाई जिम्मा लगाएका र सहप्रतिवादी निज लोचनदेवीले पीडितलाई जबरजस्ती वेश्यावृत्तिमा लगाएका हुन् भन्ने प्रमाणित तथ्यका आधारमा निजहरूलाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(ख) को कसुरमा ऐ. ऐनको दफा १५(१)(ड)(१) बमोजिम १५ वर्ष कैद र रु.१,००,०००/- (एक लाख रुपैयाँ) जरिवाना सजाय हुने र पीडितलाई सोही ऐनको दफा १७(१) बमोजिम रु.१,००,०००/- (एक लाख रुपैयाँ) क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने ठहऱ्याएको सुरु जिल्ला अदालतको मिति २०७१।१।२६ को फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।०३।२० को फैसला मनासिब देखिएको भनी उल्लेख भइसकेको ।

अतः माथि प्रकरण प्रकरणमा विवेचना गरिएअनुसार प्रतिवादीहरू टंकमाया वि.क. भन्ने टंकमाया कामी, ताकु तामाड भन्ने सागमाया घिसिड

र बुच्ची भन्ने लोचनदेवी वि.क. ले मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(ख) बमोजिमको कसुर गरेको ठहर्‍याई प्रतिवादीहरूलाई सोही ऐनको दफा १५(१)(ड) (१) बमोजिम १५ वर्ष कैद रु.१,००,०००/- (एक लाख रुपैयाँ) जरिवाना हुने र प्रतिवादीहरूबाट रु. १,००,०००/- (एक लाख रुपैयाँ) क्षतिपूर्ति भराई लिनपाउने ठहर्‍याएको सुरु उदयपुर जिल्ला अदालतको मिति २०७१।१।२६ र मिति २०७३।१।१९ को फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।०३।२० र उच्च अदालत विराटनगर, अस्थायी इजलास ओखलढुङ्गाको मिति २०७४।१।०८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: मदन पराजुली

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७७ साल आषाढ ३० गते रोज ३ शुभम्।

इजलास नं. ५

२९

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७७-WH-००३२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, परिवर्तित नाम दरबारमार्ग ४(०७७/०७८) को हकमा कृष्ण तिमल्सिना वि. उच्च अदालत पाटनसमेत

परिवर्तित नाम दरबारमार्ग ४(०७७।०७८) लाई प्रतिवादी कायम गरी काठमाडौं जिल्ला अदालतमा विद्युतीय कारोबार ऐन, २०६३ बमोजिमको कसुरमा सजायको मागदाबी लिई मुद्दा दायर भएको भन्ने निवेदन लेखबाट देखियो। उक्त मुद्दामा मिति २०७७।४।२३ गते थुनछेक आदेश हुँदा काठमाडौं

जिल्ला अदालतबाट परिवर्तित नाम दरबारमार्ग ४(०७७।०७८) लाई बालसुधार गृहमा राखेर मुद्दाको पुर्पक्ष गर्ने गरी आदेश भएकोमा कोरोना भाइरस (COVID-19) महामारीको कारणबाट बाल सुधार गृहमा असुरक्षा भएको तथा बालबालिकासम्बन्धी ऐनबमोजिम नाबालक प्रतिवादीलाई थुनामा राख्न नमिल्ने हुँदा अभिभावकको जिम्मा लगाउनुपर्नेमा सुधार गृहमा पठाएको गैरकानूनी थुना हुँदा अभिभावकको जिम्मा लगाइपाउँ भन्ने निवेदन माग रहेको देखियो। तीन वर्षभन्दा बढी कैद सजाय हुन सक्ने मुद्दाका प्रतिवादी बालबालिकालाई सुधार गृहमा राखी मुद्दामा पुर्पक्ष गर्न सकिने कुरा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा २४(२)(ख) समेतका व्यवस्थाबाट देखिन्छ। विद्युतीय कारोबार ऐन, २०६३ बमोजिमको कसुर अभियोगमा प्रतिवादी कायम भई बयान कार्य सम्पन्न भई कानूनबमोजिम थुनछेक कार्यको सिलसिलामा आदेश भई प्रतिवादी निवेदक बालसुधार गृहमा रहेको भन्ने कुरामा विवाद छैन। जिल्ला अदालतको आदेशबमोजिम निज बालकलाई हाल बालसुधार गृहमा राखिएको देखिन्छ। सो मुद्दा फैसला भई नसकेको र जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको देखिन्छ। यस प्रकारको न्यायिक प्रक्रियामा रहेको कुरामा रिट क्षेत्राधिकारबाट हस्तक्षेप गर्नुपर्नेसम्मको उचित र पर्याप्त कारण खुल्न आएको देखिन आएन। कोरोना भाइरस (Covid-19) महामारीको अवस्थालाई नै आधार बनाएर न्यायिक प्रक्रियामा बालसुधार गृहमा रहेको व्यक्तिलाई गैरकानूनी थुना भनी मान्न नमिल्ने।

अतः निवेदक विद्युतीय कारोबार ऐनअन्तर्गतको कसुरमा काठमाडौं जिल्ला अदालतको आदेशबमोजिम बाल सुधार गृहमा रहेको र सो मुद्दा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको

अवस्था देखिँदा निजलाई गैरकानूनी रूपमा थुनामा राखेको भनी ठहर गर्न मिलेन । काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मुद्दा पुर्पक्षको लागि बालसुधार गृहमा पठाउने गरी भएको मिति २०७७।४।२३ को आदेश तथा अभिभावकको जिम्मा लगाइपाउँ भनी परेको निवेदनउपर भएको मिति २०७७।५।१ को आदेश कानूनप्रतिकूल भएको भन्ने नदेखिँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: विजय खड्का

**इति संवत् २०७७ साल भदौ १८ गते रोज ५ शुभम् ।**

३०

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-२१५३, सरकारी छाप दस्तखत कित्ते र ठगी, बसन्तराज स्याङ्तान वि. नेपाल सरकार**

पुनरावेदकले कित्ते तथा ठगी गरेभएको सम्बन्धमा कुनै जानकारी नभएको र यी पुनरावेदक प्रतिवादीले कित्ते गरेको वा व्यक्तिलाई झुक्काई प्रलोभनमा पारी, ललाइफकाइ गरी ठगी गरेको भन्ने अवस्था कहींकतैबाट प्रमाणित हुन आएको देखिँदैन । यो यस बेहोराबाट यी प्रतिवादीले यो यस रीत बेहोराबाट ठगी गर्ने कार्य गरेका र ठगी गर्ने तथा कित्ते गर्ने कार्यमा यी प्रतिवादीको प्रत्यक्ष संलग्नता रहेको भनी मिसिल संलग्न कुनै प्रमाणबाट पुष्टि हुन आएको देखिँदैन । अभियोग दाबी ठोस तथ्ययुक्त आधार प्रमाणहरूबाट प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार प्रमाणित हुन आएको नदेखिने ।

अतः पुनरावेदक प्रतिवादी बसन्तराज स्याङ्तानले जाहेरवाला दुर्गा परियारबाट सजिलो डिपार्टमेन्ट स्टोर सञ्चालनको लागि आवश्यक परेको

रकम रु.३,५०,०००।- (तीन लाख पचास हजार रुपैयाँ) लिएकोसम्म देखिन्छ । तमसुक गरी लिएको रु.३,५०,०००।- रकम ब्याजसहित जाहेरवालाले बसन्तराज स्याङ्तानबाट कानूनबमोजिम दाबी गरी असुल गर्न पाउने नै हुन्छ । निजले कित्ते कुरालाई सद्दे हो भनी ठगी गरेको, धनमाल लिई खाएको र निजले कित्ते गरी ठगी गर्ने कार्यमा संलग्न रहेको तथ्य प्रमाणित हुन आएको देखिएन । अर्का प्रतिवादी श्यामकाजी स्याङ्तानले ठगीको कसुर गरेको ठहर भएको हुँदा जाहेरवालाले निज श्यामकाजीबाट बिगो भराइपाउने नै देखिन्छ । तसर्थ, प्रतिवादी बसन्तराज स्याङ्तानका हकमा अभियोग दाबी ठहर गरेको काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१।२१ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७२।१।२४ को फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादी बसन्तराज स्याङ्तानले आरोपित कसुरको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत: मोहनप्रसाद बेल्लासे

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७७ साल माघ ५ गते रोज २ शुभम् ।**

३१

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७४-CR-०९००, जबरजस्ती करणी, दुर्गाबहादुर निरौला वि. नेपाल सरकार**

पीडिताको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा निजको Hymen- No Fresh tear भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ भने पीडिता १३ वर्षकी नाबालक र फरक क्षमताको भएको विषयलाई प्रतिवादी स्वयम्ले पनि स्वीकारेको पाइन्छ । Hymen- No Fresh tear भन्नाले तत्काल कन्याजाली फाटेको होइन अर्थात् कन्याजाली पहिले नै फाटेको हो भन्ने बुझिन्छ । निज पीडिताले पटक-पटक जबरजस्ती करणी गर्ने कार्य निज

प्रतिवादीबाट भइरहेको भन्ने कथनबाट पनि पहिला पहिला हुने करणीका वारदात कार्यबाट पनि फाटेको हुन सक्ने र जबरजस्ती करणीको अन्तिम वारदात भएको मितिले ७(सात) दिनपछि मात्र निज पीडिताको स्वास्थ्य परीक्षण गरिएको कारणबाट पनि Hymen - No Fresh Tear भन्ने रिपोर्ट आएको देखिन्छ र स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डाक्टर नविनकृष्ण यादवले अदालतसमक्ष बकपत्र गर्दासमेत निज पीडिताले आफूलाई प्रतिवादीले पटक पटक करणी गरेको भन्ने कुरा उल्लेख गरेकी थिइन् भनी लेखाइदिएको समेत पाइन्छ ।

प्रतिवादीले आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरे तापनि सो भनाइलाई अन्य स्वतन्त्र आधार प्रमाणबाट पुष्टि गर्नसकेको मिसिल संलग्न प्रमाण कागजबाट देखिँदैन भने जाहेरवाला पीडिताका बाबुले आफ्नो फरक क्षमता भएको नाबालिका छोरीमाथि जबरजस्ती करणी भयो भनी अनाहकमा यस्तो गम्भीर विषयलाई सार्वजनिक गरी छोरी र आफ्नो सामाजिक प्रतिष्ठामा आँच पुग्ने गरी यी प्रतिवादीउपर जबरजस्ती करणी जस्तो गम्भीर आरोप लगाई झुठ्ठा जाहेरी दिनुपर्ने कारण पनि मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट प्रस्ट खुल्न आउँदैन । अर्कोतर्फ पीडिताले यी प्रतिवादीबाट आफूउपर जबरजस्ती करणी भएको कुरा पहिलोपटक आफ्नो घर परिवारका सदस्यहरूलाई नभनी विद्यालयमा सञ्चालन भएको महिला हिंसासम्बन्धी कार्यक्रममा बाल यौनशोषण महिला हिंसासम्बन्धी पर्चा पम्प्लेटबाट जानकारी पाएपछि मात्र आफूमाथि हुँदै आएको करणीको कार्यलाई उजागर गर्दै आफ्नो साथीहरूलाई पीडिताले भनेको कुरा देखिन आउँछ । स्वयम् पीडिताले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा मेरो स्कुल जाने बाटो निज प्रतिवादीकै घर भएको

स्थानबाट जानुपर्ने र निजले पटक पटक आफ्नो घरमा बोलाई जबरजस्ती करणी गरेको हो भनी प्रस्ट किटान गरी बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । पीडिताको आमा, बाबुका साथै हजुरआमासमेतले वारदात भएको कुरालाई समर्थन हुने गरी लेखाइदिएको पाइन्छ । वारदात नै नभएको भए र यी प्रतिवादीले कसुरजन्य कार्य नै नगरेको भए झुठ्ठा आरोप लगाउनुपर्नेसम्मको कारण केही देखिँदैन । बिनाकारण करणी जस्तो कुरामा झुठ्ठा आरोप लगाउनुपर्नेसम्मको कारण अवस्था केही देखिँदैन । मिसिल संलग्न प्रमाण, जाहेरी, बुझिएका मानिसहरूको कथन, स्वयम् पीडिताको किटानी बेहोरा, निजको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन, घटनाक्रमको क्रमबद्धतासमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीले कसुर गरेका होइनन् भनी भन्न सकिने कुनै आधार प्रमाण नरहेबाट प्रतिवादीले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको नै देखिन आयो । पीडिताको घर परिवारका सदस्यहरू प्रतिवादीप्रति पूर्वाग्रही भई प्रवृत्त भावनाबाट जबरजस्ती करणीको कसुरको आरोप लगाए होलान् भन्ने कुरा पनि युक्तिसङ्गत देखिन आएन । कसुरका विषयमा अन्य प्रमाण कागजले श्रृङ्खलाबद्ध रूपमा पुष्टि गरिरहेको अवस्थामा प्रतिवादीको स्वतन्त्र र ठोस प्रमाणले पुष्टि हुन नसकेको इन्कारी बयानलाई मात्र प्रमाणको आधारको रूपमा ग्रहण गर्न सकिने अवस्थाको विद्यमानता नरहनुका साथै माथि उल्लिखित आधार, प्रमाण, कारणसमेतबाट यस अदालतबाट मिति २०७३।७।३ गते भएको प्रत्यर्थी झिकाउने आदेशसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, अभियोग मागदाबीबमोजिम प्रतिवादीले कसुर गरेको ठहर गरी प्रतिवादीलाई सजाय गर्ने ठहर गरको सुरु सुनसरी जिल्ला अदालतको मिति

२०७२।५।६ को फैसला सदर ठहर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगरबाट भएको मिति २०७३।१।१५ गतेको फैसला मिलेकै हुँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: वीरेन्द्रबहादुर मल्ल  
कम्प्युटर: विजय खड्का

**इति संवत् २०७७ साल असार २८ गते रोज १ शुभम्।**

३२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७७-WH-०१६०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, हसन अंसारीको हकमा कृष्ण मुरारी रौनियार वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत बबरमहलसमेत**

निवेदक हसन अंसारी भएको खोटा चलन मुद्दामा सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७६।२।५ मा फैसला हुँदा निवेदकलाई कैद वर्ष ५(पाँच) र रु. ७७,६७,२००/- जरिवाना हुने तथा सङ्गठित अपराध निर्धारण अध्यादेश, २०६९ को दफा १० ले पचास प्रतिशतले २ वर्ष ६ महिना थप गर्दा जम्मा कैद ७।६।० (सात वर्ष छ महिना) कैद र जम्मा रु. १,१६,५०,८००/- (रु. एक करोड सोह लाख पचास हजार आठ सय) जरिवाना हुने ठहर गरी फैसला भएको काठमाडौं जिल्ला अदालतको उक्त फैसला सदर हुने ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७२।१२।१६ मा फैसला भएको देखिन्छ। मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २५७(२) अनुसार खोटा चलनको कसुर गर्ने वा गराउने व्यक्तिलाई ७ वर्षसम्म कैद र ७० हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना हुनेछ भन्ने प्रस्ट कानूनी प्रावधान रहेको पाइयो। जसअनुसार जरिवानाको उपल्लो हद ७० हजार रुपैयाँसम्म जरिवाना हुने तर सोभन्दा बढी जरिवाना हुन नसक्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ। केही नेपाल कानूनलाई संशोधन,

एकीकरण, समायोजन तथा खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ख) मा कुनै कसुरको सम्बन्धमा कसुर गर्दाको बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाको बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको सन्दर्भमा निवेदकले आफूलाई लागेको कैद ७ वर्ष ६ महिना कैद निज मिति २०६९।१।२३ देखि थुनामा रहेको भई मिति २०७७।५।२२ मा कैद सजाय भुक्तान गरिसकेको देखियो। मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २५७ बमोजिम खोटा चलन मुद्दामा उपल्लो हद अधिकतम् ७०,०००/- जरिवाना हुने कानूनी व्यवस्था रहेकोले सङ्गठित अपराध कसुरतर्फ खोटा चलनको कसुरमा भएको जरिवानाको आधा रु. ३५,०००/- सम्म जरिवाना रकम थप हुन सक्ने भई कुल रु. १,०५,०००/- जरिवाना हुन सक्ने देखियो। यस अवस्थामा सोभन्दा बढी जरिवाना रकमबापत भनी ठेकिएको कैदी पुर्जी कानूनअनुकूल नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा मिति २०७४।२।१२ को कैद ठेकी पठाएको कैदी पुर्जी बदर गरिदिएको छ। निवेदक मिति २०७७।५।२३ देखि हालसम्म कैदमा रहेको अवधिको प्रतिदिन रु.३००/- का दरले जरिवानाबापत कट्टा गरी बाँकी नपुग जरिवानाको हकमा निजले रकम दाखिल गरे कैदबाट छोडी थुनामुक्त गरिदिनु भनी सम्बन्धित काठमाडौं जिल्ला अदालतमा लेखी पठाइदिनु। उल्लिखित आदेशको परिणामस्वरूप निवेदकले कानूनी उपचार प्राप्त गर्ने भएबाट अहिले नै थुनामुक्त गर्नु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन नपर्ने।

इजलास अधिकृत: वीरेन्द्रबहादुर मल्ल  
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७७ साल पुस २० गते रोज २ शुभम्।**

३३

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७३-CI-०८०८, स्ववासी घर जग्गा दर्ता हक कायम, शशिकुमार बिन्दुकारको हकमा शान्ति बिन्दुकार वि. रामबहादुर डङ्गोल

विवादित कि.नं.८१ को जग्गाको स्त्रेस्तामा जग्गाधनीको महल खाली रहेको र जोताहाको नाम थरमा तुयु लवट उल्लेख भएको देखिन्छ । दाबीको जग्गाको स्त्रेस्तामा उल्लिखित तुयु लवट भन्ने व्यक्ति महिला नभई पुरुष रहेको भन्ने वादीको जिकिर रहेको र निज मरी निजको हकवाला कोही नहुँदा सो जग्गामा घर बनाई आफूले भोगी आएको भनी दाबी लिएको देखिन्छ भने सो जग्गा प्रतिवादी शान्ति बिन्दुकारको नाममा दर्ता गरिदिनु भनी मिति २०६१/११/१९ मा सिफारिस गर्ने गाउँ विकास समितिको कार्यालय, धर्मस्थली, काठमाडौंले पुनः लवट र बिन्दुकार भन्ने थर नै फरक परेको भन्ने देखिएकाले निजको नाममा दर्ता नगरी दिनु भनी सोही कार्यालयले मिति २०६१/११/२४ मा मालपोत कार्यालयलाई पत्र लेखेको देखिन्छ । उल्लिखित बेहोरा यो यसकारणले अन्यथा भन्ने पुनरावेदकको भनाइ देखिँदैन र निजले वादीको उपर्युक्त भनाइलाई पनि सप्रमाण खण्डन गरेको पाइँदैन । विवादित घर जग्गामा लामो समयदेखि रामबहादुर डङ्गोलले भोग चलन र बसोबास गरिआएको भन्ने जिल्ला अदालतको आदेशानुसार मिति २०७१/०२/०९ मा भएको सर्जमिन बेहोराले समर्थित भई तथ्यतः सो कुरा पुष्टि भएको देखिन्छ । सो घर जग्गामा वादीको भोग रहेको तथ्यलाई प्रतिवादीले समेत स्वीकार गरिरहेको अवस्था रहेको ।

तुयु लवटको मृत्यु भइसकेको, निज मेरी सासू नाताको भएको, निजको छोरा तथा मेरा पति सन्तलालको पनि परलोक भइसकेकोले हकदारका

नाताले मेरो नाममा दर्ता हुनुपर्ने भन्ने प्रतिवादी शान्ति बिन्दुकारको भनाइ रहेको पाइन्छ । निजले पेस गरेको कि.नं. ८१ को ०-०-२-० जग्गाको मोही तुयु लवट रहेको भन्ने मोहियानी हकको प्रमाणपत्र पेस भएकोबाट निज जग्गाधनी होइन भन्ने देखिन्छ । मोहियानी हकको प्रमाणपत्रमा तुयु लवट भन्ने मात्र उल्लेख भई बिन्दुकार भन्ने उल्लेख भएको देखिँदैन तर प्रत्यर्थीको नागरिकतामा निजको थर बिन्दुकार लेखिएको देखियो । सोसम्बन्धमा गाउँ विकास समितिको कार्यालय, धर्मस्थली, काठमाडौंको च.नं. ४९८ मिति २०६१/११/१९ को पत्रबाट शान्ति बिन्दुकारले दिनुभएको निवेदनअनुसार उक्त कित्ता घर जग्गा मृतक तुयु लवट भन्ने तुयु बिन्दुकारको नामबाट निजैको हकदार शान्ति बिन्दुकार र शशिकुमारका नाममा संयुक्त नामसारी दर्ता गरी जग्गाधनी प्रमाण पुर्जा दिनका लागि सिफारिस गरिन्छ भनी पत्राचार भएकोमा सोही गाउँ विकास समितिले पुनः च.नं. ५३४ मिति २०६१/११/२४ मा अर्को पत्र लेखी लवट र बिन्दुकार भन्ने थर नै फरक परेको हुँदा सिफारिसबाट उक्त कित्ता जग्गा दर्ता गर्ने कार्य नगर्नु नगराउनु हुन अनुरोध छ भनी मालपोत कार्यालयलाई पत्राचार गरेको देखिन्छ । यसबाट फिल्डबुकमा जोताहा जनिई मोहियानी हकको प्रमाणपत्र पाउने तुयु लवट भन्ने व्यक्ति प्रतिवादी शान्ति बिन्दुकारको सासू हो भन्ने नै तथ्यतः निर्विवाद पुष्टि भएको देखिएन र प्रतिवादीकी सासूलाई जोताहा मानेको अवस्थामा पनि जोताहाको हकको आधारमा दाबीको जग्गामा स्ववासी हक अर्थात् जग्गावालाको हक पाउने कानूनी आधार पुनरावेदकले देखाउन सकेको पनि पाइएन र उक्त घर जग्गा प्रतिवादीको भोग रहेको नभई वादीको भोग रहेको पाइने ।

दाबीको घर जग्गामा प्रत्यर्थी वादीको भोग बसोबास रहेको देखिएको छ र विद्युत् ग्राहक मिटर पनि

वादीकै नाममा रहेको र आ.व. २०५४/०५५ सालदेखि नै निजले महसुल तिरेको रेकर्ड पेस गरेको देखिन्छ । दर्ता तिरो केही नभई परापूर्वदेखि बेनिस्सा हकभोग भई आवाद गरी खाई आएको व्यक्तिले माथि उल्लिखित प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको आधारमा प्रत्यर्थी वादीले उक्त स्ववासी जग्गा दर्ता गर्न पाउने नै देखियो । दाबीको जग्गा पुनरावेदकले आफ्नो निर्विवाद हक स्वामित्व पुष्टि गर्न नसकेको र वादीको भोग बसोबास पुष्टि भइरहेको स्थितिमा दाबीको जग्गामा वादीको दाबी गर्ने हक नभएको भनी फिराद दाबी खारेज गर्ने ठहर्‍याएको सुरु फैसला उल्टी गरी दाबीको जग्गामा वादीको हक कायम भई निजको नाममा दर्ता हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखिँदा सो फैसला उल्टी गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको ८२ नं. बमोजिम वादीलाई फिराद गर्ने हकद्वया रहे भएको नदेखिएको भनी सोही महलको १८० नं. बमोजिम दाबी खारेज हुने ठहर गरेको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७१/०७/०२ को फैसला उल्टी हुने ठहर्‍याई दाबीको जग्गामा प्रत्यर्थी/वादीको हक कायम हुने र निजका नाममा दर्तासमेत हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक / प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: माधवप्रसाद लोहनी

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७८ साल भाद्र १ गते रोज ३ शुभम् ।**

- यसै लगाउको ०७४-CI-१२५५, निर्णय बदर हक कायमसमेत, शान्ति बिन्दुकार वि. रामबहादुर डङ्गोल भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

३४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७४-CR-१७६३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. माइतीश्वरी राई**

तिलकप्रसाद राईको मृत्यु प्रतिवादी माइतीश्वरी राईले मुद्ग्रोले हानेको र मृतकले बोकी ल्याएको झोलाको फित्ताले घाँटीमा कसेको कारणबाट भएको तथ्य निर्विवाद रूपमा स्थापित रहेको देखियो । घटनाक्रमतर्फ दृष्टिगत गर्दा तिलकप्रसाद राई (मृतक) मिति २०७३/१०/५ गते प्रतिवादी माइतीश्वरी राई निजैको घरमा एकलै रहेको अवस्थामा गएको, चुकुल लगाई बन्द गरेको ढोका खोलेर घरभित्र पसेको, निजले प्रतिवादी माइतीश्वरीको कपाल समाएको, जमिनमा लडाएको र जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरेकोसमेतका तथ्यहरू खुलाई प्रतिवादीले मुद्दामा अनुसन्धानको क्रममा तथा अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत सिलसिलेवार रूपमा बेहोरा लेखाएको पाइयो । प्रतिवादीको घरमा अन्य कोही पनि मानिस नभएको अवस्थामा एकलै गएर लगाएको ढोकासमेत खोलेर एकली महिलालाई पक्रने, कपाल तान्ने लडाउनेजस्ता कार्य जबरजस्ती करणीबाहेक अन्य कुनै निर्दोष अभिप्रायले गरेको होला भनी अनुमान गर्न मिल्ने कुनै कारण देखिँदैन । वारदातको क्रममा काठको मुद्ग्रोले पहिले मृतक तिलकप्रसाद राईले नै प्रतिवादीउपर प्रहार गरेको र पछि त्यही मुद्ग्रो खोसेर प्रतिवादीले मृतकउपर प्रहार गरेको देखिन्छ । मृतक तिलकप्रसाद राईले प्रतिवादी माइतीश्वरीउपर बलात्कार गर्न खोजेपछि निज आत्तिकी र "भाउजू भाउजू" भनी चिच्याएको, तर कसैले नसुनेको, यसपछि घम्साघम्सी भएको, घम्साघम्सी हुँदै गर्दा मृतकले घाँटीमा भिरेको झोलाको लोत्ती (फित्ता) ले दुई फन्का बेरेर कसेको र त्यसपछि तिलकप्रसाद मरेको भन्ने घटनाक्रम रहेको

देखिन्छ । यसरी तिलकप्रसाद राईले जबरजस्ती करणी गर्न खोजेको अवस्थामा प्रतिवादीले गरेको हारगुहार कसैले नसुनेको र सहारा नपाएको अवस्था आइपरेपछि तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी सतीत्व रक्षाका लागि ज्यान मार्न पुगेको भन्ने देखिने ।

घटना विवरण कागज गर्ने छत्रमाया राई र कल्पना राईसमेतले मौकामा गरेको कागजमा प्रत्यर्थीले आफ्नो सतीत्व रक्षाका क्रममा प्रतिकार गर्दा मृतकको मृत्यु हुन गएको कुरा प्रतिवादी स्वयम्ले निजहरुसँग भनेको भन्ने देखिन्छ । घटनाविवरण कागज गर्ने गंगामाया राईले प्रत्यर्थी/प्रतिवादी र मृतकबिच पूर्वरिसइवी केही थिएन भनी खुल्न आएको छ । प्रतिवादीसँग मृतकको पहिलेदेखि रिसइवी रहेको थियो भनी मान्ने हो भने पनि स्वयम् मृतक तिलकप्रसाद राई प्रतिवादीको घरमा गएको हुँदा निजको नियतमा नै प्रश्न गर्नुपर्ने स्थिति देखिन्छ । कुनै पनि कोणबाट हेर्दा विवादित वारदात नियोजित हत्या हो, सतीत्व रक्षाका लागि ज्यान मार्ने कार्य भएको होइन भनी मान्न सकिने अवस्था देखिन नआउने ।

मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ८ नं. मा "कसैले आफूलाई जबरजस्ती करणी गर्ने मनसाय लिई बन्धक गरी वा हातपात, छेकथुन, बाँध छाँद आक्रमण इत्यादि जोरजुलुम गर्न लागेकोमा कुनै महिलाले त्यस्तो जुल्मीको पन्जाबाट उम्की भागी आफूलाई करणी गर्नबाट रोक्न नसक्ने विश्वास भएमा वा विश्वास गर्नुपर्ने मनासिब कारण भएमा र तत्काल कसैको संरक्षण वा मद्दत उपलब्ध हुने वा हुन सक्ने अवस्था नभएमा र त्यस्तो जुल्मीलाई आफ्ना अक्कल बर्कतले सक्नेसम्मका उपाय तत्काल केही नगरे आफूमाथि करणी हुनेसम्मको ठुलो डर, त्रास परी करणी लिन नपाउँदै वा उसैबखत आफ्नो जोडबल पुग्न नसक्नेमा करणी लिइसकेपछि पनि सोही कुराको

रिस थाम्न नसकी उसैबखत करणी लिएकै थलामा वा लपट्दै गई हतियार लाठी, ढुङ्गा इत्यादि केही चलाई ज्यान मर्न गएको ठहरे बात लाग्दैन" भन्ने व्यवस्था रहेको थियो । हाल प्रचलित मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २६ को उपदफा (२) को देहाय (ख) मा पनि "जबरजस्ती करणी गर्ने नियतले आक्रमण गरेको हो भन्ने मनासिब विश्वास भई वा जबरजस्ती करणी गर्दाका बखत वा गरिसकेपछि पीडितबाट तत्काल कुनै काम भएको" अवस्थामा कसैको ज्यान गएकोमा त्यस्तो काम कसुर मानिने छैन भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । उल्लिखित प्रावधानहरू नारीको सतीत्व रक्षाकालागि आवश्यक भएकाले आत्मरक्षाको उपायको रूपमा विधायिकाले कानूनमा समावेश गरेको हो । कानूनले प्रदान गरेको यो आत्मरक्षाको सुविधा प्रतिवादी माइतीश्वरी राईले नपाउनुपर्ने कुनै तर्कसङ्गत वा मनासिब कारण देखिन नआउने ।

अतः प्रतिवादी माइतीश्वरी राई र मृतक तिलकप्रसाद राईबिच ज्यान मार्नुपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको नदेखिएको, समग्र घटनाक्रम विवरणतर्फ दृष्टिगत गर्दा प्रतिवादीले आफ्नो सतीत्व-रक्षाका लागि प्रतिकार गर्दा तिलकप्रसाद राईको ज्यान मर्न पुगेको देखियो । तसर्थ, मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ८ नं. बमोजिम सतीत्व-रक्षा/आत्मरक्षाको लागि कार्य भएको देखिँदा प्रतिवादी माइतीश्वरी राईले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासको मिति २०७४/९/१८ मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्दछ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: शैलेन्द्र खड्का

इति संवत् २०७८ साल भाद्र २५ गते रोज ६ शुभम् ।

३५

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७५-WO-०१३९, उत्प्रेषण, डा.अनु शाक्य वि. लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगरसमेत**

निवेदिका डा. अनु शाक्यको शैक्षिक उपाधि Bachelor of Ayurvedic and Modern Medicine and Surgery (BAMMS) नभई Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery (BAMS) हो भन्ने कुरा स्वयम् शैक्षिक उपाधि प्रदान गर्ने संस्था त्रिभुवन विश्वविद्यालयले स्वीकार गरी नयाँ प्रमाणपत्रसमेत दिएको देखियो । निवेदिकाले जन-स्वास्थ्य विषयमा स्नातकोत्तर उपाधिसमेत हासिल गरेको कुरामा विवाद देखिँदैन । समान प्रकृतिको विवाद रहेको पूर्व समिरकुमार अधिकारीको निवेदनका सन्दर्भमा यो शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्रसम्बन्धी प्रश्नको निरूपणसमेत भइसकेको देखिन्छ । यस अवस्थामा प्रत्यर्थी लोक सेवा आयोगले निवेदिकाको दरखास्त स्वीकार गरी, लिखित परीक्षामा सामेल गराई, लिखित परीक्षा उत्तीर्णसमेत भइसकेपछि अन्तर्वार्ताको समयमा दरखास्त र लिखित परीक्षासमेत रद्द गर्ने गरी भएको निर्णयलाई उचित मान्न सकिएन । अतः प्रत्यर्थी आयोगको मिति २०७५/०४/०३ को निर्णयसहितका निवेदिकालाई विज्ञापित प्रतिस्पर्धामा सहभागी हुन दिनबाट वञ्चित गर्ने गरी भए गरेका सबै काम कारबाही, निर्णय, पत्राचार, सूचनासमेत कानून तथा यस अदालतबाट भएको व्याख्यासमेतको प्रतिकूल देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिएको छ । अब निवेदक डा. अनु शाक्यलाई पूर्वप्रकाशित नतिजाबमोजिम नै अन्तर्वार्तामा सामेल गराई स्वस्थ र स्वच्छ परीक्षा प्रणालीको मान्यताअनुसार नतिजा प्रकाशित गर्नु, गराउनु भनी प्रत्यर्थी लोक सेवा आयोगको नाउँमा

परमादेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: माधवप्रसाद लोहनी

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल माघ ११ गते रोज १ शुभम् ।

३६

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७२-CI-०५०६, लिखत बदर दर्ता बदर दर्ता, सरस्वतीदेवीसमेत वि. रामलोचन राय यादवसमेत**

वादी प्रतिवादीहरू रामलोचन राय यादव, निजको पत्नी सरस्वतीदेवी, निजका ३ छोराहरू रामविवेक राय, सिवेक राय र शनि राय रहेको देखिन्छ । दुई छोरीहरूको विवाह भएको कुरामा विवाद देखिएन । कुल ५ अंशियार रहेको र प्रतिवादी रामलोचन राय घरको मुख्य भई व्यवहार गर्ने व्यक्ति भएको कुरामा पनि विवाद गर्नुपर्ने अवस्था देखिँदैन । प्रत्यर्थी रामलोचन रायले आफ्ना नाउँमा दर्ता रहेको ०-१-० जग्गा विवादित लिखत गरी बिक्री गरेको देखिन्छ । प्रमाणमा आएको दे.नं. १७१२ को अंश मुद्दामा तायदाती फाँटवारीबमोजिमको कि.नं. २३२, ५४, ७७, ६८७ र १८६ समेतको गरी जम्मा १-९-९ जग्गा अंशियारहरूका बिच भागबन्डा लाग्ने ठहर भएकोसमेत पाइयो । कि.नं. १७२१ को एक कट्टा जग्गाको मूल्य रु.२,००,०००/- र कि.नं. २३२, ५४, ७७, ६८७ र १८६ का ५ कित्ता जग्गाहरूको जम्मा मूल्य रु. २७,२०,०००/- भनी तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख भएकोसमेत देखिन्छ । मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १९ नं. को देहाय (१) ले पिता पुर्खाका पालाको चल अचल गैह्रसम्पत्तिको हकमा चलमा सबै र अचलमा आधीसम्म व्यवहार चलाउनलाई स्वास्नी, छोरा अविवाहित छोरी वा विधवा बुहारीको मन्जुरी नभए पनि आफूखुस गर्न पाउने

र अचलमा आधीभन्दा बढी भने व्यवहार चलाउनै परे पनि एक्काइस वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा अविवाहित छोरी र विधवा बुहारीहरूको मन्जुरी लिई मात्र खर्च गर्न हुने प्रावधान रहेको देखिन्छ। विवादित एक कट्टा जग्गा घर व्यवहार चलाउन परेकाले घरको मुख्य व्यक्तिको हैसियतले लिखत गरेको भनी प्रत्यर्थी रामलोचन रायले जिकिर गरेको पाइयो। यसरी प्रत्यर्थी रामलोचन रायले आफूलाई प्राप्त कानूनी अख्तियारीको सीमाभित्र रहेर नै घरव्यवहार चलाउन जग्गा लिखत गरी बिक्री गरेको देखिने।

अतः प्रत्यर्थी रामलोचन राय यादवले रामपतिदेवीलाई बिक्री गरेको कि.नं. १७२१ को एक कट्टा जग्गा मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९ नं. अनुसार घरको मुख्य भई काम गर्नेले घर-व्यवहार चलाउन लिखत गरिदिन पाउने भएको, यसका लागि अन्य अंशियारको मन्जुरी लिनुपर्ने अनिवार्यता रहेको नदेखिएको हुँदा सुरु रौतहट जिल्ला अदालतको मिति २०६८/१२/०९ को फैसला उल्टी गरी वादी दाबी पुग्न नसक्ने अर्थात् लिखत बदर नहुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०७१/१२/०९ को फैसला कानूनसम्मत र मनासिब देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। प्रतिवादी सरस्वतीदेवीसमेतको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: शैलेन्द्र खड्का

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७८ साल भाद्र २० गते रोज १ शुभम्।

३७

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७३-CI-०९३६, निषेधाज्ञा, शान्ती बस्नेतसमेत वि. सीतादेवी श्रेष्ठ

प्रत्यर्थीले गैरकानूनी रूपमा निवेदकहरूलाई

पक्रिने, थुन्ने आशंका भएकाले निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन अदालत पाटनमा सीतादेवी श्रेष्ठ र बर्जबहादुर श्रेष्ठको निवेदन परेको देखिन्छ। पुनरावेदन अदालतबाट प्रचलित कानूनले अख्तियारी दिएको फौजदारी कसुरको विषयमा बाहेक देवानी दायित्वको विषयमा निवेदिकालाई पक्राउ नगर्नु, नगराउनु भनी निषेधाज्ञाको आदेश जारी भएको पाइयो। सो आदेशउपरयस अदालतमा पुनरावेदन परेको देखियो। विपक्षीउपर ठगीको कसुरमा जाहेरी परेको हुँदा सोसम्बन्धमा अनुसन्धान गर्नुपर्ने र विपक्षीलाई हिरासतमा लिई कारबाही अगाडि बढाउनुपर्नेमा पुनरावेदन अदालतबाट निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरेको हुँदा ठगी मुद्दाको कारबाही अगाडि नबढेकोले सो आदेश बदर गरिपाउँ भनी पुनरावेदन जिकिर रहेको देखिन्छ। पुनरावेदन अदालतले "प्रचलित कानूनले अख्तियारी दिएको फौजदारी कसुरको विषयमा बाहेक देवानी दायित्वको विषयमा निवेदिकालाई पक्राउ नगर्नु नगराउनु" भनी आदेश गरेको देखियो। सो आदेशले प्रचलित कानूनले अख्तियारी दिएको फौजदारी कसुरको विषयमा अनुसन्धान, छानबिन गर्न निषेध गरेको देखिँदैन। नागरिक अधिकार हनन हुने गरी देवानी दायित्वको विषयमा सम्म प्रत्यर्थी निवेदकहरूलाई पक्राउ नगर्नु भनी भएको पुनरावेदन अदालतको आदेश मनासिब नै देखिएको।

तसर्थ, प्रचलित कानूनले अख्तियारी दिएको फौजदारी कसुरको विषयमा कारबाही चलाउन पुनरावेदन अदालतको फैसलाले रोकेको अवस्था नरहेको तथा सोबाहेक देवानी दायित्वको विषयमा निवेदकलाई पक्राउ नगर्नु नगराउनु भन्ने आदेश मानसिब नै देखिँदा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति

२०७३/४/१९ को आदेश मनासिब देखिँदा सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल  
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७७ साल पुस १० गते रोज ६ शुभम् ।**

- यसै लगाउको ०७३-CI-१३४८, निषेधाज्ञा, मयजु महर्जन वि. निसा श्रेष्ठ भएको मुद्दामा पनि यसै अनुसार फैसला भएको छ ।

३८

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७२-CI-१२७५, अवैध टहरा र इँट्टासमेतको अवरोध हटाई, हटक खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ, रामङ्गोल महर्जनसमेत वि. सचिन शाक्य**

वादी दाबीको यही कि.नं. ४४८ र कि.नं. ४४६ को जग्गा चावहिल गोपीकृष्ण नगर जग्गा एकीकरण आयोजनाले वादी शान्तरत्न शाक्यलाई दिने निर्णय गरेकोमा पुनरावेदक/प्रतिवादीले उक्त जग्गा आफ्नो कि.नं. ९४८ अन्तर्गत भिङ्ने हुँदा निजलाई दिने भनी गरेको निर्णय बदर गरी उक्त कि.नं. ४४८ र कि.नं. ४४६ को जग्गा आफूलाई फिर्ता दिनु भन्ने परमादेशको माग गरी प्रत्यर्थी/वादी शान्तरत्न शाक्यसमेतलाई विपक्षी बनाई यस अदालतमा रिट निवेदन (०६१-WO-३२०३) दायर गरेको देखिन्छ । सो निवेदन यस अदालतबाट आयोजनाको उक्त निर्णयबाट निवेदकको सम्पत्तिसम्बन्धी संवैधानिक एवम् कानूनी हकमा आघात पुगेको नदेखिएको भनी खारेज हुने ठहर्‍याएको देखियो । उक्त रिट निवेदनमा भएको आदेशबाट समेत कि.नं. ४४८ र कि.नं. ४४६ साबिक कि.नं. ९४९ को जग्गासँग भिडी वादीले आयोजनाबाट फिर्ता पाएको तथ्य स्थापित भएको र उक्त कित्ता जग्गामा प्रतिवादीको हक स्वामित्व पुग्ने अवस्था नदेखिएको तर नक्सा मुचुल्काबाट सो कित्ताका न.नं. ४, ८, ९ र १० मा

रहेका घर टहरासमेतमा प्रतिवादीको भोग रहेको भन्ने देखिन आएकोले प्रतिवादीले वादी दाबीको जग्गामा अवैध घर टहरासमेत बनाई खिचोला गरेको ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मनासिब देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने । तसर्थ, वादी दाबीको कि.नं. ४४६ र ४४८ को जग्गामा प्रतिवादीले निर्माण गरेको घर टहरालगायतका अन्य संरचना भत्काई सोजग्गा खाली गराई वादीको नाममा चलनसमेत चलाइदिने ठहर गरेको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७०/०३/०३ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७२/०२/३१ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: माधवप्रसाद लोहनी  
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७८ साल मङ्सिर २९ गते रोज ४ शुभम् ।**

यसै लगाउमा निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसै अनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७२-CI-१२७७, अवैध टहरा तथा इँट्टासमेतको अवरोध हटाई हटक खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ, राम ङ्गोल महर्जनसमेत वि. बालकृष्ण मानन्धर ।
- ०७२-CI-१२७६, घर जग्गा खिचोला, राम ङ्गोल महर्जन वि. सचिन शाक्य ।

३९

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७५-WO-०२७८, उत्प्रेषण, डा. गजेन्द्रप्रसाद रौनियार वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत**

निवेदक डा. गजेन्द्रप्रसाद रौनियारलाई वि.पी. कोइराला स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान ऐन, २०४९ को दफा ७(१)(ढ) बमोजिम सो प्रतिष्ठानको सञ्चालक परिषद्को सदस्य पदमा नेपाल सरकार

(मा. स्वास्थ्य मन्त्रीस्तर) को मिति २०७४/६/२७ को निर्णयानुसार ४ वर्ष (कार्यकाल) को लागि नियुक्त गरिएको तथ्यमा विवाद नदेखिने । निजलाई नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७५/३/२० को निर्णयले पदमुक्त गरेको र सो गर्दा सुनुवाइको मौकासमेत नदिई प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत कार्य भएको भन्ने निवेदकको जिकिर रहेको देखिने । कार्यकाल पुरा नहुँदै पदमुक्त गरिएको भन्ने निवेदन जिकिर रहेको छ । यसरी निश्चित कार्यावधिका लागि नियुक्त भएका पदाधिकारीलाई कानूनबमोजिमको कारण नभई तथा सुनुवाइको मौका प्रदान नगरी गोश्वारा तबरबाट पदबाट हटाउन मिल्दैन भनी यस अदालतबाट ०७५-WO-००३९ को निवेदक भगवतीप्रसाद देव विरुद्ध पशुपति क्षेत्र विकास कोषसमेत रहेको रिट निवेदन; ०७५-WO-०१४८ को निवेदक संगीतासिंह भण्डारी विरुद्ध राप्ती स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान दाङसमेत रहेको रिट निवेदनलगायत अन्य कतिपय विवादका सन्दर्भमा नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को उल्लिखित मिति २०७५/३/२० को निर्णयको सन्दर्भलाई लिएर यस अदालतबाट व्याख्या र विवेचना भई तत्सम्बन्धी कानूनी प्रश्नहरूको निरूपण भइसकेको देखिने ।

निवेदकलाई पदमुक्त गरिएकोसम्बन्धी मिति २०७५/३/२० को मन्त्रिपरिषद्को विवादित निर्णय त्रुटिपूर्ण रहेको तथ्यसमेत प्रमाणित भइसकेको छ । यसका अतिरिक्त यस अदालतबाट प्रस्तुत विवादमा जारी भएको अल्पकालीन अन्तरिम आदेशको परिणामस्वरूप रिट निवेदक पदमा बहाल रहेको, निजलाई बिचमा पदबाट हटाइएको तथ्य प्रस्तुत हुन नआएको, निजको कुनै हक अधिकार हनन हुन पुगेको नदेखिएको र निज निवेदकको चार वर्षको कार्यकालसमेत मिति २०७८/६/२६ मा नै पूरा भइसकेको देखिन आयो । परिणामतः अहिले प्रस्तुत

रिट निवेदनको प्रयोजनसमेत समाप्त भइसकेको देखियो । तसर्थ, अब यसमा कुनै रिट आदेश जारी गरिरहन परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: विनोदप्रसाद घिमिरे

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

**इति संवत् २०७८ साल मङ्सिर २१ गते रोज ३ शुभम्।**

यसै प्रकृतिका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसै अनुसार आदेश भएका छन्:

- ०७५-WO-०२७७, उत्प्रेषण, प्रा.डा. लोकविक्रम थापा वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७४-WO-१०२८, उत्प्रेषण, निकिता पौडेल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७४-WO-१००६, उत्प्रेषण, चन्द्रसिंह साउद वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७४-WO-०९९४, उत्प्रेषण, विष्णुबाबु मिश्र वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७३-WO-०६३६, उत्प्रेषण, दीपक पाठक वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७५-WO-०६७५, उत्प्रेषण, कामिनी राजभण्डारी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७५-WO-०१७३, उत्प्रेषण, कामिनी राजभण्डारी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७५-WO-००७१, उत्प्रेषण, भागवतप्रसाद यादव वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।

- ०७४-WO-१०२९, उत्प्रेषण, अवधेश कुमार दाससमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।
- ०७५-WO-००११, उत्प्रेषण, विजय देउजा वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत ।

इजलास नं. ६

४०

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CR-१७८२, ०७२-CR-१९७६, जबरजस्ती करणी, प्रेमबहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार, कमल थापा वि. नेपाल सरकार

पीडित बालिका र पीडितकी आमा जाहेरवालीले जबरजस्ती करणीजस्तो जघन्य अपराधमा प्रतिवादीहरूलाई फसाउनु पर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको वा अन्य कुनै विशेष कारण रहे भएको भन्ने कुरा मिसिलबाट देखिँदैन । बिना कुनै कारण आफ्नै छोरीलाई करणी गरेको भनी यी प्रतिवादीहरूको नाम किटान गरी जाहेरी दिनुपर्ने अवस्था आउँदैन । करणी गर्ने व्यक्तिको पहिचान गरी आफ्नो छोरीलाई जबरजस्ती करणी गरेको भनी आमाले किटानी जाहेरी दिएको वास्तविक तथ्यलाई सामान्य रूपमा लिन सकिने अवस्था देखिँदैन । प्रस्तुत घटनाको प्रत्यक्षदर्शी पीडित स्वयम् हुन् । निजले आफूलाई प्रतिवादीहरू प्रेमबहादुर बस्नेत र परिवर्तित नाम कमल थापाले हेल्थपोष्ट भवन निर्माणको लागि खनिएको खाल्डोमा लगी पालैपालो पहिला प्रेमबहादुरले र त्यसपछि परिवर्तित नाम कमल थापाले जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भनी अनुसन्धानको क्रममा गरिदिएको घटनाविवरण कागज र अदालतमासमेत उपस्थित भई वारदात

हुँदाको अवस्थामा घटनाको परिदृष्यसमेत चित्रण गरी बकपत्र गरी दिएको अवस्थामा केवल प्रतिवादीहरूले अन्यत्र थियोँ भनी गरेको इन्कारी बयानको भरमा मात्र निजहरूलाई कसुरमा निर्दोष मान्न नमिल्ने हुँदा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरु सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने ।

तसर्थ, पीडितकी आमा जाहेरवाली परिवर्तित नाम टीका पुनको किटानी जाहेरी र सो जाहेरी समर्थित हुने गरी अदालतमा भएको निजको बकपत्र, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, पीडितको मौका अनुसन्धानको क्रममा र अदालतमा समेत कसुर वारदात पुष्टि हुने गरी सिलसिलाबद्ध घटनाक्रम उल्लेख गरी भएको किटानी बकपत्र भनाइ, बुझिएका यामकला नेपालीले अनुसन्धानको क्रममा र अदालतमासमेत उपस्थित भई गरिदिएको बकपत्र भनाइ, विमला मगरसमेतका व्यक्तिहरूको भनाइसमेतका तथ्यगत एवम् परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको कसुर स्थापित हुन आएको भन्दै सुरु सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२।८।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लालबहादुर कार्की

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल चैत ९ गते रोज २ शुभम् ।

४१

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७३-CI-१८१८, ०७५-CI-०१२७, लिखत बदर, दर्ता बदर, दर्ता कायम, शाआवती राजवंशी वि. अगमलाल राजवंशी, प्रविणा

श्रेष्ठ वि. अगमलाल राजवंशीसमेत

पुनरावेदक प्रतिवादीले २०३३ सालदेखि छुट्टी भिन्न भएको भनी जिकिर लिए पनि प्रमाणमा रहेको अंश मुद्दामा मानो छुट्टिएको मिति २०६९/०५/२० कायम गरेकोलाई स्वीकार गरी तायदाती फाँटवारी पेस गरेको प्रमाण स्वरूप प्राप्त उक्त मुद्दाको मिसिलबाट देखिन्छ । यिनै वादी प्रतिवादी भई चलेको प्रमाणको अंश मुद्दामा अ.बं. १३९ नं बमोजिम बुझिएका कदमलाल राजवंशीको वारेस भई शाआवतीले मोरङ जिल्ला अदालतमा मिति २०७०/०२/१३ मा बयान गर्दा कदमलालसमेत ४ अंशियार हौं, निजले समेत १ भाग अंश पाउने हो भनी बयान गरेको देखिन्छ । निज शाआवतीले मिति २०७०/०७/२६ गते अंश मुद्दामा तायदाती पेस गर्दा नेपाल अधिराज्यभर मेरो नाममा कहाँकतै जग्गा जमिन नभई सुकुम्बासी भएकोले विराटनगर १५ स्थित ऐलानी जग्गामा बसी आइरहेका छौं भनी तायदाती पेस गरेको देखिन्छ । चुल्हो मानो छुट्टिएपश्चात् मेरो निजी आर्जन एवम् एकलौटी हकभोगको जग्गा बिक्री गरेकोमा वादीको नालेस लाग्न सक्दैन भनी पुनरावेदक/प्रतिवादीले पुनरावेदन जिकिर लिएको पाइन्छ । अंश मुद्दामा अंशबन्डाको प्रयोजनको लागि अदालतद्वारा चुल्हो मानो छुट्टिएको मिति कायम गरेकोलाई वादी प्रतिवादीहरूबिच अंशबन्डा भइसकेको अर्थ गर्न मिल्दैन । कदमलालको वारेस भई शाआवतीले बयान गरेबाट निजलाई अंश मुद्दाबारे जानकारी नभएको भन्न मिलेन । अंश मुद्दा चल्दाचल्दैको अवस्थामा अंशियारको समेत हक लाग्ने सम्पत्ति निजहरूको मन्जुरी नलिई बिक्री गर्न पाइँदैन । विवादित जग्गा निजी आर्जनको सम्पत्ति हो भन्ने प्रमाण प्रतिवादीले पुर्‍याउन सकेको देखिँदैन । सो हुँदा, उक्त विवादित जग्गामा वादीहरूको हकको अंश हक लाग्ने नै देखियो । अंश हकको जग्गा हकवालाहरूको मन्जुरीबेगर बिक्री गरेको

अवस्थामा मन्जुरी नहुनेको चार भागको दुई भाग बदर हुन सक्ने नै अवस्था देखियो । सो हुँदा दाता प्रतिवादी शाआवती राजवंशीले आफ्नो हकभन्दा बढी बिक्री गरेको हदसम्म लिखत बदर हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसलालाई अन्यथा भन्न सक्ने नदेखिने ।

तसर्थ, विवादित कित्ता नं. ९६ को ०५६५ व. मि. जग्गामा वादीको दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेको सुरु मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७१/०८/०९ को फैसला उल्टी गरी उक्त जग्गाको चार भागमा दुई भाग लिखत बदर गरी सो लिखतको आधारमा भएको दर्तासमेत बदर गरी पुनरावेदक / वादीको नाममा कायम हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०७३/०३/२२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: निर्मलाकुमारी खड्का

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल चैत १८ गते रोज ४ शुभम् ।

४२

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७४-WO-०००२, उत्प्रेषण, केदार खत्री क्षेत्रीसमेत वि. कर्जा सूचना केन्द्र कमलादी, काठमाडौंसमेत

निवेदकहरूले बैंकलाई तिर्नु बुझाउनु पर्ने कर्जा समयमा नतिरे नबुझाएको कारण मिति २०७२।३।३० को कारोबार दैनिक एवं सोही मितिको जानकारी पत्रमा विपक्षी ऋणी तथा जमानीकर्ताको फोटोसहित तिनपुस्ते उल्लेख गरी कर्जा चुक्ता गर्न ३५ दिने सूचना दिनुका साथै सो समयमा कर्जा चुक्ता नगरेमा कालोसूचीमा समावेश गरिने बेहोरा जानकारी गराइएको र त्यसपश्चात् मिति २०७२।५।२, मिति २०७२।५।३० र मिति २०७३।३।१७ मा समेत कर्जा

चुक्ताको लागि उपस्थित हुन निवेदकहरूको नाउँमा पत्राचार भएको बेहोरा मिसिल संलग्न ती पत्र तथा सूचनाको फोटोकपीबाट देखिन्छ। ऋणी निवेदकहरूले ऋण चुक्ता गर्न दिएको म्यादभित्र उपस्थित नभई आफूले लिए खाएको कर्जा चुक्ता गर्न उदासिन भई बसेको अवस्थामा आफूहरूलाई कालोसूचीमा राख्नेसम्बन्धी कुनै जानकारी नै गराएन भन्ने निवेदन जिकिर तथ्यमा आधारित रहेको देखिन नआउने।

साबिक सिद्धार्थ डेभलपमेन्ट बैंक हालको जनता बैंकले निवेदकहरूलाई प्रतिवादी बनाई ऋण असुली न्यायाधिकरणमा दायर गरेको उजुरी नि.द.नं.१०१-०७१/५४ को ऋण असुलीसम्बन्धी मुद्दामा दाबीबमोजिम निवेदकहरूबाट बैंकले सावाँ ब्याज भराई लिन पाउने गरी मिति २०७३।१०।३ मा फैसलासमेत भएको देखिएबाट निवेदकहरूले आफूले लिएको कर्जा बैंक तथा वित्तीय संस्थालाई तोकिएको समयमा नबुझाएको भन्ने कुरा स्पष्ट हुन आउँछ। बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ५७(१०) मा "कुनै व्यक्ति, फर्म कम्पनी वा संस्थाले इजाजतपत्र प्राप्त संस्थासँग लिएको कर्जा सो कर्जाको लिखतको भाकाभित्र चुक्ता नगरी यस दफाबमोजिम कारबाही चलाउँदा सम्बन्धित इजाजतपत्र प्राप्त संस्थाले प्रचलित कानूनबमोजिम त्यस्तो व्यक्ति फर्म कम्पनी वा संस्थालाई कालोसूचीमा राख्न कर्जा सूचना केन्द्र लिमिटेडमा लेखी पठाउनुपर्ने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको परिप्रेक्ष्यमा लामो समयसम्म आफूले लिएको कर्जा चुक्ता नगरी बसेका निवेदकहरूलाई कालोसूचीमा राख्ने भनी प्रत्यर्थी बैंकहरूबाट भएको सिफारिस र सोबमोजिम कालोसूचीमा राख्ने गरी कर्जा सूचना केन्द्र लिमिटेडबाट भएको निर्णयलाई अन्यथा भन्न मिल्ने अवस्था नदेखिने।

निवेदकहरूले विपक्षी बैंकहरूबाट कर्जा

लिएको र तोकिएको समयभित्र ती कर्जाहरू चुक्ता गर्न नसकेको कारण विपक्षीबाट पटक पटक व्यक्तिगत र सार्वजनिक रूपमा सूचना जारी गर्दासमेत सम्पर्कमा नआई बसेको कारण धितो राखिएको सम्पत्ति लिलाम गरी कर्जा असुल गरेको र सोही कारणबाट कानूनबमोजिम कालो सूचीमा राखिएको देखिँदा निवेदकले माग गरेबमोजिमको आदेश जारी हुन सक्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: लालबहादुर कार्की

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

**इति संवत् २०७७ साल चैत १२ गते रोज ५ शुभम्।**

**४३**

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७४-WO-०५४७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, अध्यक्ष किशोर श्रेष्ठसमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत**

नेपाल सरकारबाट जारी भएको "सूचना तथा विज्ञापनको समानुपातिक वितरण प्रणालीसम्बन्धी निर्देशिका, २०६९" को विरुद्धमा यस अदालतमा कि. एडभरटाइजिड सर्भिस प्रा.लि.समेतको उत्प्रेषण (०६९-WO-०८८७) को मुद्दा परी उक्त रिटमा यस अदालतबाट तत्कालीन नेपाल सरकारले जारी गरेको उक्त निर्देशिकालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने भनी आदेश भएको रहेछ। यस अदालतमा एकपटक निर्देशिकाको विषयमा निर्णय भइसकेको र सो निर्णय अन्तिम भइरहेको विषयमा सो निर्णयमा कार्यान्वयन हुने स्वाभाविक अपेक्षा रहन्छ। यस स्थितिमा निवेदकहरूले उठाएको विषय नयाँ देखिँदा कुनै आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। रिट निवेदकहरूको वारेसले यस अदालतबाट तोकिएका तारेख गुजारी बसेको र कानूनबमोजिम थाम्ने, थमाउने म्यादसमेत व्यतीत गरी

बसेबाट निजहरूमा आफ्नो निवेदन जिकिरप्रति चासो रहेको नदेखिने।

अतः सूचना तथा विज्ञापनको समानुपातिक वितरण प्रणालीसम्बन्धी निर्देशिका, २०६९ मा व्यवस्था भएबमोजिम समानुपातिक रूपमा सबै सञ्चार माध्यमलाई विज्ञापन उपलब्ध नगराएको कार्य गैरकानूनी तथा समानताको हककोसमेत विपरीत भएकोले उक्त निर्देशिका कार्यान्वयन गर्नु गराउनु तथा समानुपातिक ढङ्गले विज्ञापन उपलब्ध गराउनु भनी परमादेशको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने रिट निवेदकहरूको निवेदन जिकिर स्वीकारयोग्य देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: करुणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल चैत्र ०६ गते रोज ६ शुभम्।

इजलास नं.७

४४

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-०२८३, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. गोपालबहादुर बुढाक्षेत्रीसमेत

फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तहरूउपरको कसुर वादीले निःसन्देह रूपमा प्रमाणित गर्नुपर्ने हुन्छ। प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ भन्ने व्यवस्था गरेको छ। वादीले प्रतिवादीउपर लगाएको अभियोग वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट शङ्कारहित तवरले प्रमाणित गर्नुपर्दछ। अन्यथा त्यसको सुविधा अभियुक्तले पाउने हुन्छ। नेपाल सरकारले कसैउपर अभियोग लगाउनु मात्र पर्याप्त हुँदैन, लगाएको अभियोग

वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट शङ्कारहित किसिमबाट समेत पुष्टि गर्न सक्नुपर्दछ। यसरी जाहेरवालाहरूले यी प्रतिवादीहरूलाई दिएको रकमको भर्पाई पेस गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरी अभियोग दाबी प्रमाणित गर्नुपर्नेमा बकपत्र गर्न नै उपस्थित भएको देखिएन। सुरुमा जाहेरी दिएको देखिन्छ तापनि आफ्नो जाहेरीअनुसारको रकम आफूले हालसम्म प्राप्त गर्न नसकेको भनी अदालतमा उपस्थित भई सो कुरालाई पुष्टि प्रमाणित गराउन सकेको देखिँदैन। जाहेरी अनुसारको रकम आफूले प्राप्त गर्न नसकेको भनी खुलाउन नसकेबाट अनुसन्धानको समयमा व्यक्त भएका कुरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ अनुसार थुनछेकको प्रयोजनको लागि सम्म प्रमाणयोग्य हुन जाने र कसुर कायम गर्ने गरी अदालतमा उपस्थित भई प्रमाणित गराउन नसकेको अवस्थामा अनुसन्धानको बेला व्यक्त गरेको भनाइ लेखाइ प्रमाणको रूपमा ग्राह्य हुन नसक्ने।

तसर्थ, वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष लिखत प्रमाण पेस गर्ने र उपस्थित भई बकपत्र गर्ने जाहेरवालाहरूको हकमा यी प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाहरूसँग लिएको रकम वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ बमोजिमको कसुर गरेको देखिएको हुँदा निज प्रतिवादीहरू गोपालबहादुर बुढा क्षेत्री र सुरेशना क्षेत्रीलाई ऐ. ऐनको दफा ४३ बमोजिम तजबीज १।६।० (एक वर्ष छ महिना) कैद र जनही रु.२,००,०००।- (दुई लाख रुपैयाँ) जरिवाना हुने र जाहेरवालाहरूको लिखत प्रमाणको बिगो र ५०% हर्जानासमेतको क्षतिपूर्ति प्रतिवादीहरूबाट जाहेरवालाहरूले भरिपाउने र सोबाहेकका जाहेरवालाहरू निरबहादुर गाहा, दलबहादुर थापा, आइन्द्रबिक्रम कुरुडबाड, सन्तोष राई, लालबहादुर

पुलामी, वेगबहादुर सुसेली मगर, देवेन्द्र थापा र नौविर भन्ने नववीर राइतर्फको अभियोग मागदाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई भएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७१।८।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालसिंह थापा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

**इति संवत् २०७७ साल साउन १५ गते रोज् ५ शुभम्।**

४५

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७३-CR-०७३८, जबरजस्ती चोरी, नेपाल सरकार वि. धनलाल थोकरसमेत**

वादी पक्षका साक्षीहरूले सुरु अदालतमा आई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीहरूको कसुर पुष्ट्याइँ हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरेको अवस्था पाइँदैन र सुनेर थाहा पाएको भन्ने श्रुतानुश्रुत कुराले ठोस प्रमाणको स्थान ग्रहण गर्न सक्ने अवस्था देखिन आएन। जाहेरी दरखास्त तथा जाहेरवालाको बकपत्रलाई मात्र आधार बनाएर अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट कसुर कायम हुने गरी समर्थित नभएको अवस्थामा यी प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार कायम गर्न मिल्ने नदेखिने।

चोरी भएको भनिएको सुनको रिङ्ग प्रतिवादीहरूको साथबाट बरामद हुन सकेको अवस्था छैन। वादीले शंकारहित तरिकाले ठोस प्रमाण पेस गरी यी प्रतिवादीहरूउपरको अभियोगदाबी पुष्टि गर्न सकेको अवस्थासमेत नदेखिँदा यी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने ठहर्‍याएको सुरु जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको फैसला फौजदारी न्यायको रोहमा कानूनसम्मत नै रहे भएको देखिएको।

तसर्थ, प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट

सफाइ दिने ठहर्‍याई चितवन जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।५।२४ मा भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको मिति २०७३।५।७ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालसिंह थापा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

**इति संवत् २०७७ साल साउन १५ गते रोज् ६ शुभम्।**

४६

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-१३६८, लागुऔषध (ब्राउन सुगर), नेपाल सरकार वि. शंकर पाण्डेसमेत**

प्रतिवादीहरूले आफूले सेवन गर्ने प्रयोजनको लागि २ ग्रामभन्दा पनि कम लागुऔषध ल्याएको र यी प्रतिवादीहरू केवल सेवनकर्तासम्म देखिएको, लागुऔषधको मात्रालाई समेत विचार गर्दा ज्यादै सानो मात्राको देखिएको र निजहरूले फाइदा लिने उद्देश्यले बिक्री व्यवहार ओसारपसार गरेको अवस्थासमेत देखिँदैन। निजहरूले को-कसलाई बिक्री गरेको, के-कस्तो ओसारपसार गरेका हुन्, को-कसले निजहरूबाट लागुऔषध खरिद गरेका हुन् मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट शंकारहित तवरले पुष्टि प्रमाणित हुन आएको देखिँदैन। सेवनकर्ताले सेवन गर्नको लागि पनि खरिद नै गरेर ल्याउनुपर्ने तर आफ्नो सेवन प्रयोजनलाई मात्र ल्याएको र मात्रासमेत ज्यादै न्यून रहेको देखिँदा लागुऔषध बिक्री वितरणको कसुर कायम हुन सक्ने अवस्था देखिँदैन। साथै यी प्रतिवादीहरू सङ्गठित रूपले अपराध गर्ने प्रकृतिका व्यक्ति हुन् भनी भन्ने आधारसमेत केही नदेखिँदा र सङ्गठित अपराधमा संलग्न रहेको अवस्थासमेत नदेखिँदा अभियोग दाबीअनुसारको कसुर कायम हुने अवस्था विद्यमान नदेखिने।

प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको नगद रु.२४,८३०।- जफत गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा प्रतिवादीहरूले अदालतमा बयान गर्दा आफूहरूबाट बरामद भएको नगद लागुऔषध कारोबारबाट जम्मा गरेको नभई आफ्नै हो भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। प्रतिवादीहरू लागुऔषध कारोबार गर्दाको अवस्थामा पक्राउ परेको भन्ने पनि देखिँदैन। वादी पक्षले प्रमाणका साक्षी उपस्थित गराई उक्त बरामदी रकम लागुऔषधको कारोबारबाट प्रतिवादीहरूले आर्जन गरेको रकम हो भनी पुष्टि गर्न नसकेबाट प्रतिवादी शंकर पाण्डेबाट बरामद भएको रु.२३,६१०।- र प्रतिवादी सचिन आचार्यबाट बरामद भएको रु.१,२२०।- निजहरूले लागुऔषधको कारोबारबाट आर्जन गरेको भन्ने देखिन नआएबाट उक्त रकम जफत गर्न नमिल्ने। प्रतिवादी शंकर पाण्डेले प्रतिबन्धित लागुऔषध ब्राउनसुगरको सेवन गरी लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) को कसुर गरेको देखिँदा सोही ऐनको दफा १४(१) (ड)बमोजिम दुई महिना कैद हुने र प्रतिवादी शंकर पाण्डेबाट बरामद भएको रु.२३,६१०।- र प्रतिवादी सचिन आचार्यबाट बरामद भएको रु.१,२२०।- निजहरूकै रकम भएकाले उक्त रकम जफत नहुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसला मिलेकै देखिँदा सो हदसम्म सदर हुने देखियो। तर प्रतिवादी सचिन आचार्यले लागुऔषधको कारोबार गरेको नदेखिएको निजले सेवनसम्म गरेको देखिन आएकोले निजले गरेको कार्य लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(घ)(ड) र (च)बमोजिमको कसुर गरेको देखिन नआई लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) बमोजिम लागुऔषध सेवनको कसुर गरेको देखिन आयो। साथै बरामद भएको लु.२५ ८७७७

नं. को मोटरसाइकल सो बरामद भएको लागुऔषध खरिद बिक्री गर्न प्रयोग गरेको नदेखिएकोले सो बरामद भएको मोटरसाइकल जफत हुने ठहर्‍याई भएको सुरु फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसला मिलेको नदेखिने।

तसर्थ, सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१।२४ मा भएको फैसलामा प्रतिवादी शंकर पाण्डेले लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) (ड) बमोजिम दुई महिना कैद हुने र प्रतिवादी शंकर पाण्डेबाट बरामद भएको रु.२३,६१०।- र प्रतिवादी सचिन आचार्यबाट बरामद भएको रु.१,२२०।- रकम जफत नहुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०७१।१।२२ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेकै देखिँदा सो हदसम्म सदर हुने र प्रतिवादी सचिन आचार्यलाई लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(घ)(ड) र (च) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१)(६)(१)बमोजिम ५ वर्ष कैद र रु.५,०००।- जरिवानाको सजाय गरेको हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई निज प्रतिवादी सचिन आचार्यले लागुऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) (ड)बमोजिम दुई महिना कैद सजाय हुने र बरामद भएको सो मोटरसाइकल जफत नहुने।

इजलास अधिकृत: लालसिंह थापा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

**इति संवत् २०७७ साल साउन १५ गते रोज ५ शुभम्।**

४७

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७३-CR-११९६, नकबजनी चोरी, नेपाल सरकार वि. दीपक नेपालीसमेत**

प्रतिवादीहरू शंकर नेपाली, अविनाश गुरुङ र सन्देश गुरुङ साबालक भएकोमा नाबालक कायम गरी आधा सजाय गरेको मिलेन भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा, यी प्रतिवादीहरू शंकर नेपालीको जन्ममिति २०५६।५।६ रहेको निजले पेस गरेको जन्म दर्ता प्रमाणपत्रको फोटोकपीबाट देखिन्छ । त्यसरी नै अविनाश गुरुङको जन्ममिति २०५६।३।२२, र सन्देश गुरुङको जन्ममिति २०५६।५।१ मा भएको निजहरूले पेस गरेको जन्म दर्ताको प्रमाणपत्रको फोटोकपी तथा सम्बन्धित स्कुलबाट उपलब्ध भएका रजिस्टरबाट देखिन्छ । सो जन्मदर्ताको प्रमाणपत्रहरूलाई वादी पक्षले प्रमाण पेस गरी खण्डन गर्न सकेको पनि देखिँदैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६ मा अदालतले अनुमान गर्ने कुराहरू सम्बन्धमा अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म भनी खण्ड (ग) मा, “कुनै अदालत वा सरकारी कार्यालयमा कानूनबमोजिम राख्नुपर्ने स्याहा, स्वेस्ता वा कागजमा उल्लिखित गरिएका कुराहरू सही रूपमा उल्लेख गरिएका हुन् भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ” भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । तसर्थ, यी प्रतिवादीहरूले पेस गरेको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रहरू अन्यथा प्रमाणित हुन नसकेकोले निजहरूले खुलाएको जन्ममितिलाई नै निजहरूको आधिकारिक जन्ममिति मान्नुपर्ने हुन्छ । निज प्रतिवादीहरूको जन्ममितिलाई आधार मान्दा कसुर भएको मिति २०७१।१०।३ मा निजहरूको उमेर १४ वर्षभन्दा माथि र १६ वर्षभन्दा मुनिको उमेर देखिन आयो । तत्कालीन बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) तथा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(३) मा १४ वर्ष वा सोभन्दा माथि १६ वर्ष नपुगेको हकमा आपराधिक दायित्व कायम गर्दा उमेर पुगेका व्यक्तिलाई हुने सजायको आधा सजाय हुने व्यवस्था गरेको देखिएकोले यी

प्रतिवादीहरूलाई उमेर पुगेका व्यक्तिसरह सजाय गर्नुपर्ने भन्ने पुनरावेदन जिकिर कानूनसङ्गत नदेखिने ।

प्रतिवादीमध्ये दिपक नेपालीलाई सफाइ दिएको भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा, निजको हकमा निजउपर किटानी जाहेरी पनि नभएको, निजले अदालत एवम् अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार रहेको, निजको साक्षीले पनि निजको बयान बेहोरालाई पुष्ट्याइँ हुने गरी बकपत्र गरिदिएको, सहप्रतिवादीहरूले पनि निजउपर पोल उजुर गरेको अवस्था नभएको, वारदात हुँदा घटनास्थल आसपास वा प्रतिवादीहरूको साथ नरहेको र केवल आफ्नो भाइ प्रतिवादी शंकर नेपालीले चोरी गरी कोठामा ल्याएको ल्यापटप निजले केहीबेर प्रयोग गरेकै कारण निजले आरोपित कसुर गरेको भनी सजाय गर्नु कानून र न्यायको रोहमा मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

यसरी सुरु कास्की जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।३।३० मा भएको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले बिगो रु.५,३२,५००।- चोरी गरेको पुष्टि हुन आएकोले चोरीको १४(१) नं.बमोजिम प्रतिवादी बिक्रम वि.क.लाई ११/२ महिना कैद र बिगोको डेढीले हुने रु.७,९८,७५०।- जरिवाना हुने र नाबालक प्रतिवादी शंकर नेपाली, सन्देश गुरुङ, अविनाश गुरुङका हकमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) अनुसार २२१/२ दिन कैद र रु.३,९९,३७५।- जरिवाना हुने र वादी नेपाल सरकारको अन्य पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन भन्ने बेहोराको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७३।५।२६ को फैसला कानून र न्यायको रोहमा मिलेकै देखिएको ।

तसर्थ, सुरु कास्की जिल्ला अदालतबाट

मिति २०७२।३।३० मा भएको फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादीहरूले बिगो रु.५,३२,५००।- चोरी गरेको पुष्टि हुन आएकोले चोरीको १४(१) नं. बमोजिम प्रतिवादी बिक्रम वि.क. लाई ११/२ महिना कैद र बिगोको डेढीले हुने रु.७,९८,७५०।- जरिवाना हुने र नाबालक प्रतिवादी शंकर नेपाली, सन्देश गुरुङ, अबिनाश गुरुङका हकमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) अनुसार २२<sup>१</sup>/<sub>२</sub> दिन कैद र रु.३,९९,३७५।- जरिवाना हुने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७३।५।२६ गतेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालसिंह थापा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७७ साल साउन १५ गते रोज ५ शुभम्।

४८

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७४-CR-१५४४, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. विशाल थापा

अदालतको आदेशानुसार पश्चिमाञ्चल क्षेत्रीय अस्पताल विकास समितिबाट मिति २०७३।४।५ मा प्राप्त पत्रसाथ विशेषज्ञ चिकित्सकले गरेको उमेर परीक्षण प्रतिवेदन अनुसार निजको उमेर १७ देखि १९ वर्षबिचको भनी प्रतिवेदन गरेको देखिन्छ। विशेषज्ञको वैज्ञानिक परीक्षणबाटसमेत पीडितको उमेर १६ वर्षभन्दा बढी रहेको तथ्यलाई प्रमाणित गरेको देखिन्छ। पीडित स्वयम्ले अदालतमा गरेको बकपत्रको स.ज. १ मा आफ्नो उमेर १७ वर्ष भनी लेखाएको देखिन्छ। यस अवस्थामा पीडितको शरीर परीक्षण, मुद्दा पर्नुअघि अभिलेखीकरण भएको जन्मदर्ता प्रमाण पत्र तथा पीडितको बकपत्रसमेतबाट पीडितको मिति २०५५।१०।१२ मा जन्म भएको देखिँदा निज पीडितको उमेर १६ वर्षभन्दा माथिको देखिन

आयो। सो हुँदा प्रतिवादी विशाल थापाले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. बमोजिमको कसुर गरेको तथ्य स्थापित हुन सक्ने नदेखिने।

प्रतिवादी विशाल थापालाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुने ठहर गरेको सुरु कास्की जिल्ला अदालतको मिति २०७४।२।१७ को फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याएको उच्च अदालत पोखराको मिति २०७४।५।२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: गेहेन्द्रराज रेग्मी

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७८ साल असार ४ गते रोज ६ शुभम्।

४९

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७५-CR-००७०, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. विमल विश्वकर्मा

जाहेरवालाहरूलाई विदेश पठाइदिने मानिस निर्मल साई र दर्शन श्रेष्ठसँग भेट गराइदिएको, सोक्रममा राजकुमार गुरुङबाट आठ लाख पचास हजार रुपैयाँ र प्रेमबहादुर थापाबाट आठ लाख रुपैयाँ बुझी निर्मल साई र दर्शन श्रेष्ठलाई रकम दिएको हुँ, वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी लिखतको सहीछाप आफ्नै हो भनी अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष बयान गरेका प्रतिवादी विमल विश्वकर्माले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा भने आफूले वैदेशिक रोजगारीका लागि नभई घरायसी लेनदेनका क्रममा जाहेरवाला राजकुमार गुरुङ र प्रेमबहादुर थापाबाट जनही छ लाख रुपैयाँका दरले रकम सापटी लिएकोमा राजकुमार गुरुङको दुई लाख रुपैयाँ फिर्ता गरिसकेको छु भनी बयान गरेको पाइन्छ। प्रतिवादी विमल विश्वकर्माले आफूले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय गर्ने इजाजत पत्र लिएको छैन भनी बयान

गरेकोसमेत देखियो । प्रतिवादी विमल विश्वकर्माको मौकाको र न्यायाधिकरणको बयान अलग अलग देखियो । प्रतिवादीले न्यायाधिकरणमा जाहेरवालाहरूबाट जनही छ लाख रुपैयाँ सापट लिएकोमा राजकुमार गुरूङ्गको २ लाख रुपैयाँ फिर्ता गरेको भनी जिकिर लिए तापनि सोकुरा पुष्टि हुने कुनै पनि प्रमाण पेस गर्नसकेको देखिँदैन । यस अवस्थामा २०७३।७।२२ को लिखतको अस्तित्वलाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन । दुवै जाहेरवालाहरूले जाहेरी बेहोरालाई पुष्टि हुने गरी बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ भने लिखत साक्षी किसान गुरूङ्गले समेत मौकामा उक्त लिखत बेहोरामा उल्लेख भएबमोजिम जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा टर्की मुलुकमा पठाइदिने भनी प्रतिवादीले रकम बुझिलिएको भनी लेखाइदिएको पाइन्छ । यसरी मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट प्रतिवादी विमल विश्वकर्माले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय गर्ने इजाजत पत्र नलिए पनि जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारीमा टर्की पठाइदिने भनी रकम बुझी अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको भनी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४/७/१२ मा भएको फैसला कानूनसम्मत मिलेकै देखिन्छ । वादी नेपाल सरकारले लिएको पुनरावेदन जिकिर हेर्दा, जाहेरवालाहरूलाई टर्की पठाइदिन्छु भनी इण्डियासम्म पुऱ्याई अलपत्र पारेको र १५ दिनपछि निजहरू आफ्नै खर्चले नेपाल फर्केको भन्ने निजहरूको बकपत्रको बेहोराले जाहेरवालाहरूलाई भारत पुऱ्याई अलपत्र पारेको भनी वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ मा विदेश पुऱ्याएकोमा दफा ४३ बमोजिम सजाय गर्नुपर्नेमा कम कैद र जरिवाना हुने गरी भएको फैसला नमिलेको भन्ने देखिन्छ ।

जाहेरवालाहरूलाई टर्की पठाउनेक्रममा

भारत पुऱ्याएको भनी जाहेरवालाहरूले बकपत्र गरे पनि निजहरूलाई भारत पुऱ्याएको भन्ने पुष्टि हुने टिकट वा अन्य कुनै पनि प्रमाण पेस हुन सकेको देखिँदैन । भारत पुऱ्याएको भनी बकपत्र गर्दैमा भारत पुऱ्याएको पुष्टि हुन नसक्ने हुँदा वादी नेपाल सरकारले लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । यस दृष्टिकोणबाट टर्की पठाउने क्रममा भारत पुऱ्याई अलपत्र पारेको भन्ने जिकिरसँग सम्बन्धित कानूनी व्यवस्थाबमोजिमको सजाय नगरेको हदसम्मको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादी विमल विश्वकर्माले अभियोग दाबीबमोजिम वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ बमोजिमको कसुर गरेको प्रमाणित हुन आएकोले निजलाई ऐ.ऐनको दफा ४३ बमोजिम १।६।० (एक वर्ष छ महिना ) कैद र रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार रुपैयाँ) जरिवाना हुने एवम् जाहेरवालाहरूले अभियोग दाबीबमोजिमको बिगो र हर्जाना प्रतिवादीबाट भरिपाउने ठहऱ्याएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरण, काठमाडौँको मिति २०७४/७/१२ को फैसला कानूनसम्मत मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सोनी श्रेष्ठ

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

**इति संवत् २०७८ साल असार १७ गते रोज ५ शुभम् ।**

५०

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या. श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७७-WH-०१६३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, क्षेत्रप्रताप रावत वि. उच्च अदालत सुर्खेत, जुम्ला इजलाससमेत

निवेदक प्रतिवादीलाई उच्च अदालत सुर्खेत जुम्ला इजलासबाट मुद्दा पुर्पक्षका लागि थुनामा

राख्ने गरी मिति २०७७।८।२६ मा भएको आदेश निजले निवेदनमा दाबी लिएजस्तो कानून र न्यायका आधारभूत मान्यता एवम् सिद्धान्त प्रतिकूल भएको देखिँदैन । उक्त आदेशमा अधिकारक्षेत्रात्मक त्रुटि भएको अवस्था पनि देखिँदैन । यी प्रतिवादीलाई थुनामा राख्ने गरी आदेश हुँदा मौजुदा कानूनको ठाडो उल्लङ्घन भएको, मौलिक अधिकारको प्रत्यक्ष अपहरण र मानव अधिकारको उपहास भएको अवस्था पनि छैन । मिसिल संलग्न तत्काल प्राप्त प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी क्षेत्रप्रताप रावत कसुरदार हुन् भन्ने विश्वास गर्ने मनासिब आधार रहेको अवस्थामा निजलाई हुनसक्ने सजायको रोहबाट समेत मुद्दा पुर्पक्षका लागि मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ६७ बमोजिम थुनामा राख्ने गरी आदेश भएको देखिन्छ । अतः यी प्रतिवादीले कसुर गर्दाको अवस्था, परिस्थिति, वारदातमा निजको भूमिका, पीडित एवम् जाहेरवालीलाई पर्न गएको क्षतिसमेतलाई ध्यानमा राखेर यी प्रतिवादीलाई कानूनले निर्धारण गरेको मार्ग अनुशरण गरी थुनामा पठाइएको देखिँदा निवेदकको थुनालाई गैरकानूनी भन्न नमिल्ने ।

तसर्थ, तत्काल प्राप्त प्रमाणको विवेचना गरी आधार र कारणसमेत खुलाई उच्च अदालत सुर्खेत, जुम्ला इजलासबाट मिति २०७७।८।२६ मा भएको आदेश र सो आदेशबमोजिम भएका कामकारबाही कानूनविपरीत रहेको भन्ने नदेखिँएको साथै सम्पूर्ण कानूनी रीत तथा प्रक्रिया पूरा गरी निवेदक प्रतिवादीलाई मुद्दा पुर्पक्षका लागि थुनामा राखिएको हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गरिरहनुपर्ने नदेखिने । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: भूमिप्रसाद शर्मा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७७ साल पौष २८ गते रोज ३ शुभम् ।

### इजलास नं.८

५१

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७६-WH-०३४८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, चक्रबहादुर खत्रीको हकमा प्रतिक चन्द वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, खोटाङसमेत

प्रस्तुत निवेदनमा निवेदक चक्रबहादुर खत्रीलाई मिति २०७६।१।२ देखि पटक पटक पक्राउ गरी निरन्तर थुनामा राखिएको र मिति २०७७।१।१४ मा तेस्रो पटक पक्राउ गर्ने विपक्षीहरूको कार्य विरुद्ध यस अदालतमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदन (०७६-WH-०३३९) दायर भई मिति २०७७।१।२८ मा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भएको अवस्थामेतलाई नजरअन्दाज गरी सोही दिन अभद्र व्यवहारसम्बन्धी कसुरमा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, खोटाङमा अभियोगपत्र पेस भई जिल्ला प्रशासन कार्यालय, खोटाङबाट थुनछेकको आदेशको क्रममा निजबाट रु. ५०,०००/- धरौट माग गर्नु नै यी निवेदकउपर फरक आस्था र विचार राखेकै आधारमा प्रवृत्त धारणा राखी मुद्दाको कारबाही अगाडि बढाएको भन्ने प्रस्ट देखियो । यसरी फरक विचार र आस्थाका कारण निवेदकलाई पटक पटक पक्राउ गरी औचित्यपूर्ण कारण र आधारबिना निवेदकप्रति प्रवृत्त धारणा राखी बन्दी बनाएको कार्य कानूनसम्मत नदेखिने ।

उल्लिखित कसुरमा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, खोटाङबाट यी निवेदक चक्रबहादुर खत्रीको हकमा अनुसन्धानको लागि म्याद थप गर्दाको औचित्यता पुष्टि गर्ने कारण र आधार उल्लेख गरेको देखिएन । यसभन्दा अघि पनि यी निवेदकलाई थुनामा राखेको सम्बन्धमा यस अदालतबाट मिति २०७७।०१।२८

मा विपक्षीहरूको नाममा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भएको देखिएको र निवेदकले फरक विचार र आस्था राखेकै आधारमा प्रवृत्त भावना लिई बिनाकारण र आधार निवेदकलाई पटक पटक पक्राउ गरी थुनामा राखेको देखिँदा निवेदकको थुनालाई कानूनसम्मत मान्न मिलेन । तसर्थ, निवेदकको थुना गैरकानूनी र प्रवृत्त भएको देखिएकाले नेपालको संविधानको धारा १६, १७, १८ द्वारा प्रदत्त मौलिक हकको सन्दर्भमा ऐ.को धारा १३३(२)(३) तथा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७(क)(ख) बमोजिम बन्दी निवेदक चक्रबहादुर खत्रीलाई थुनाबाट मुक्त गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: नरेन्द्रबहादुर बुढा

कम्प्युटर: सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७७ साल जेठ २ गते रोज ६ शुभम् ।

५२

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. श्री तेजबहादुर के.सी., ०७७-WH-०३४३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, कैलाश भन्ने हिरालाल पुनसमेत वि. ललितपुर जिल्ला अदालतसमेत

अदालतको फैसलाबमोजिम ठहरेको कैद निवेदकहरूबाट भुक्तान नभइसकेको अवस्थामा निवेदकहरूको थुनालाई गैरकानूनी मान्न नमिल्ने भएकाले निवेदन मागबमोजिमको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिए पनि ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।५।६ मा रु.१,००,०००।-(एक लाख रुपैयाँ) जरिवाना नतिरेमा ४ वर्ष कैद हुने गरी जारी कैदी पुर्जिसम्म उत्प्रेषणको आदेशले बदर भएको र सु.रु. फैसलाबाट ठहर भएको रु.१,००,०००।-(एक लाख) जरिवानाबापतको रकम निवेदकहरूबाट असुलउपर हुन नआएमा वा नभएको

अवस्थामा कैद गर्नु पर्दा हालको मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १६१(२) बमोजिम एक दिनको रु.३००।-(तीन सय रुपैयाँ) का दरले हिसाब गरी हुन आउने कैद अवधि कायम गर्नुपर्ने हुन आयो । तसर्थ, विपक्षी ललितपुर जिल्ला अदालतबाट फैसलाले ठहरेको रु.१,००,०००।-(एक लाख रुपैयाँ) जरिवाना नबुझाएमा ४ वर्ष कैद हुने गरी मिति २०६८।०५।०६ मा जारी भएको कैदी पुर्जी निवेदकहरू कैलाश भन्ने हिरालाल पुन, कपिल भन्ने विष्णु पुनमगर र मार्सल भन्ने मोहन बुढा मगरको हकमा संशोधन गरी संशोधित कैदी पुर्जी पुनः जारी गर्नु भनी विपक्षी ललितपुर जिल्ला अदालतको नाउँमा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: ताराप्रसाद जोशी

कम्प्युटर: सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७८ साल जेष्ठ २६ गते रोज ४ शुभम् ।

५३

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७६-CR-००५५, जबरजस्ती करणी, चुडादेव तामाङ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले पीडितलाई करणी गरेकोमा इन्कारी बयान गरे पनि पीडितले गरिदिएको कागज एवम् जाहेरवालीको किटानी जाहेरी र सोलाई समर्थन गरी अदालतमा गरेको बकपत्रबाट अभियोग दाबीबमोजिमको प्रतिवादीको कसुर समर्थित भइरहेको देखिनुको साथै पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनबाट Redness on both sides or vaginal intritus भनी उल्लेख भएबाट प्रतिवादीले जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको तथ्य पुष्टि हुन आएको ।

तसर्थ, प्रतिवादीले पीडित "०४-५-ऋ" लाई अभियोग दाबीबमोजिम जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको प्रमाणित भइरहेको अवस्थामा प्रतिवादीलाई

जबरजस्ती करणीको ३(२)नं. बमोजिम १० वर्ष कैद हुने र प्रतिवादीबाट पीडितले रु.५०,०००।- क्षतिपूर्ति पाउने ठहर गरी सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट भएको फैसला अन्यथा देखिन नआउने। अतः सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०३।२१ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७५।१।१२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: यज्ञमूर्ति ज्ञवाली

कम्प्युटर: सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७८ असार २० गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ९

५४

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७१-८।-०४५२, घर जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाऊँ, हरिराज सिंहसमेत वि. बलीभद्र भट्ट

खिचोला ठहरेको जग्गामा प्रतिवादीले बनाएको घरगोठका सम्बन्धमा फिराद दाबी छैन। फिराद दाबी नभएकै आधारमा प्रतिवादीको घरगोठ भएको वादीको उक्त जग्गा खिचोला नठहर्ने भनी जिल्ला अदालतबाट फैसला भएको छ भने त्यहाँ प्रतिवादीको भोगचलनको घरगोठ भए पनि वादीको उक्त जग्गा प्रतिवादीले खिचोला गरेको ठहर्ने भनी यस अदालतबाट फैसला भई मुद्दा अन्तिम भएको यस अवस्थामा त्यहाँ अवस्थित प्रतिवादीको भोगचलनको घरगोठ के हुने भन्ने विषयमा अदालतले नै निर्णय गरी

उपयुक्त निकास दिनुपर्ने अवस्था भयो। सो सम्बन्धमा विचार गर्दा मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ११ नं. अनुसारको म्यादभित्र जग्गाका हकवाला यी वादी उक्त घरगोठको विषयमा दाबी लिई कानूनी उपचारमा नगएको हुँदा फिराद दाबी पुग्न सक्तैन भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर रहेछ। मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ११ नं. मा जग्गा मिची घर बनाएकोमा घर तयार भएको मितिले १ वर्षभित्र नालिस नदिए लाग्न सक्तैन भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको पाइन्छ। वादीको जग्गामा प्रतिवादीले बनाएको घरगोठ प्रतिवादीले नै उपभोग प्रयोग गरिआएको भन्नेसम्म देखिन्छ तर घर गोठको सो संरचना आफ्नो स्वामित्वको हो भनी प्रतिवादीले प्रमाणित गर्न सकेको अवस्था छैन। यस्तो अवस्थामा उक्त घर प्रतिवादीले वादीको जग्गा खिचोला गरी बनाएको मान्नुपर्ने भयो। प्रतिवादीले खिचोला गरी निर्माण गरेको घरगोठमा ऐनका म्यादभित्र नालिस नदिएको भन्ने प्रतिवादीको जिकिरलाई वादीले अन्यथा भन्न नसकेको तथा मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ११ नं. मा भएको कानूनी व्यवस्थासमेतका आधारमा प्रतिवादीले वादीको जग्गा खिचोला गरी बनाएको उक्त घर गोठमा मात्र पाताल नहुन्जेल यिनै प्रतिवादीको भोगचलनको अधिकार रहन्छ। उक्त घरगोठको संरचनामा प्रतिवादीको भोगचलनको हक भए पनि स्वामित्वको हक स्थापित हुन नसक्ने भएकोले निज प्रतिवादीले निर्माण गरी चलन गरिआएका ती घरगोठमा वादीलाई मर्का पर्ने वा घरगोठको आयु लम्ब्याउने गरी कुनै पनि प्रकारको भौतिक संरचना थप गर्न र मर्मत सम्भारसमेत गर्न पाउँदैन। घरगोठ पाताल भई गएपछि प्रतिवादीको उक्त घरगोठमा रहेको भोगाधिकार पनि स्वतः समाप्त भई जाने।

मिसिल सङ्कलित प्रमाण, कानूनी

व्यवस्था तथा प्रतिपादित नजिर सिद्धान्तसमेतको आधारमा सुरु कञ्चनपुर जिल्ला अदालतको मिति २०६८।१।१२४ को फैसला केही उल्टी गरी नक्सानं. ५, ६, ७ र ८ मासमेत प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरको मिति २०७०।०५।११ को फैसला कानूनी रोहमा मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्‍छ । वादीको जग्गा खिचोला गरी प्रतिवादीले बनाएको घरगोठमा उक्त घरगोठ पाताल नहुन्जेल घरगोठ निर्माण गरी भोगचलन गरिआएका प्रतिवादीको उक्त घरगोठसम्ममा मात्र भोगाधिकार रहन्छ तर स्वामित्वको अधिकार नरहने । जग्गा खिचोला नभएको भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: ताराप्रसाद डाँगी

फैसला लेखनमा सहयोग गर्ने उपसचिव: धनसिंह गिरी  
कम्प्युटर: चन्द्रा तिमिल्सेना

**इति संवत् २०७६ साल भाद्र १९ गते रोज ५ शुभम् ।**

५५

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या. श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७७-WH-००३५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, होमबहादुर खड्काको हकमा सुरेसराज सेढाई वि. इलाका प्रहरी कार्यालय, गजुरी धादिङसमेत

निवेदकलाई मुद्दा पुर्पक्षका लागि जिल्ला प्रशासन कार्यालय, चितवनबाट मिति २०७७।५।३ मा धरौट माग भएकोमा निवेदकले धरौट दाखिला गरेपछि थुनामुक्त गर्नुपर्नेमा गरिएको देखिएन । पुनः सोही दिन साँझ धादिङ गजुरी ल्याई पक्राउ गरिएको देखिन्छ । मास्क किन्न नलगाएको जस्तो सामान्य विवादमा जरुरी पक्राउ पुर्जो दिएको आधार र कारण पनि देखिँदैन । यस्तो कार्यबाट प्रत्यर्थीहरूको रिट निवेदकप्रति प्रवृत्त

भावना देखिन्छ । राज्यले कुनै नागरिकप्रति प्रवृत्त धारणा राखेर व्यवहार गर्दैन भन्ने अपेक्षा राखिन्छ । लोकतान्त्रिक मूल्य मान्यता कानूनको शासन तथा संविधान एवम् कानूनद्वारा प्रत्याभूत हक अधिकारको संरक्षणसमेतका कुनै दृष्टिले हेर्दा पनि राज्यबाट नागरिकउपर बदनियत वा प्रवृत्त धारणा राखेर गरिएको कुनै पनि व्यवहारलाई उचित ठान्न नसकिने ।

राज्यद्वारा कुनै व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता अपहरण गरिन्छ भने पनि त्यसको प्रक्रिया न्यायिक, स्वच्छ र तर्कसङ्गत हुनुपर्दछ । कानूनको उचित प्रक्रिया अनुशरण नगरी व्यक्तिलाई बन्दी बनाउने कार्य अनुचित हुन्छ । अदालतबाट तथा मुद्दा हेर्ने अधिकारीबाट पटकपटक भएका आदेशअनुसार बन्दीलाई थुनामुक्त गरिएकोमा विभिन्न बहानामा पुनः पक्राउ गरी पटकपटक थुनामा राख्ने वा एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा लगी थुनाको निरन्तरता गर्ने जस्ता कार्य गर्नु बदनियत र प्रवृत्त भावनाबाट गरेको देखिने ।

अतः रिट निवेदक होमबहादुर खड्कासमेतलाई मिति २०७७।४।१२ मा पक्राउ गरिएकोमा ०७७-WH-००१९ को रिट निवेदन यस अदालतमा विचाराधीन रहेको अवस्थामा मिति २०७७।५।३ मा धरौटीमा छाडिएकोले उक्त रिटको औचित्यता समाप्त भएकोले आजै यस इजलासबाट रिट खारेज भएता पनि पुनः सोही मिति २०७७।५।३ मा अभद्र व्यवहारको कसुरमा अनुसन्धानको लागि थुनामा राखिएको भनिए तापनि मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ९९ विपरीत प्रस्तुत रिट निवेदनमा फरक विचार र आस्थाको आधारमा बारम्बार बिनाआधार प्रवृत्त भावना राखी निरन्तररूपमा निवेदक होमबहादुर खड्कालाई पक्राउ गरी थुनामा राखिएको देखिँदा उक्त थुना गैरकानूनी देखिएकोले सर्वोच्च

अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७(क) र (ख) बमोजिम निवेदक बन्दीलाई थुनामुक्त गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: प्रेमप्रकाश थापा

कम्प्युटर: सरस्वती दाहाल

**इति संवत् २०७७ साल भाद्र १८ गते रोज ५ शुभम्।**

- यसै प्रकृतिको ०७७-WH-००३६, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, रामलाल विश्वकर्माको हकमा सुरेसराज सेढाई वि. इलाका प्रहरी कार्यालय, गजुरी धादिङसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार आदेश भएको छ।

५६

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या. श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७७-WH-००१८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, रामलाल विश्वकर्माको हकमा सुदिप ढकाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनसमेत**

रिट निवेदक, रामलाल विश्वकर्मासमेत भएको अभद्र व्यवहारसम्बन्धी कसुर मुद्दामा पुर्षको क्रममा मिति २०७७।५।३ मा रू.१,०००।-धरौट माग भएपछि उक्त धरौट दाखल गरेको भन्ने यी रामलाल विश्वकर्मा निवेदक भएको रिट नं. ०७७-WH-००३६ को मिति २०७७।५।५ को रिट निवेदन बेहोरा र सोही रिट निवेदनउपर प्रत्यर्थीमध्येका जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनसमेतको लिखित जवाफबाटसमेत देखिन्छ। जिल्ला प्रशासन कार्यालय, चितवनबाट मिति २०७७।५।३ मा मुद्दा पुर्षका लागि धरौट माग भई यी निवेदकले धरौटसमेत दाखिला गरेको र उक्त मुद्दामा धरौटीमा छुटेतर्फबाट उक्त रिटको औचित्य नै समाप्त भएको भन्ने निवेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ता र विद्वान् अधिवक्ताहरूले बहसको क्रममा इजलासलाई जानकारी गराउनु भएबाट

निवेदन मागअनुसार बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन परेन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: प्रेमप्रकाश थापा

कम्प्युटर: सरस्वती दाहाल

**इति संवत् २०७७ भाद्र १८ गते रोज ५ शुभम्।**

- यसै प्रकृतिको ०७७-WH-००१९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, होमबहादुर खड्काको हकमा सुदिप ढकाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार आदेश भएको छ।

५७

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा, ०७८-WH-००४७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सरल रानामगरको हकमा बुद्धिमाया सुनारी राना मगर वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत कानूनबमोजिम सक्षम निकायबाट फौजदारी कसुरको अनुसन्धानको सिलसिलामा सक्षम अदालतबाट म्याद थपको अनुमतिसमेत लिई निवेदकलाई थुनामा राखेको अवस्थामा निज गैरकानूनी थुनामा रहेको भन्ने देखिएन। यसै सन्दर्भमा निवेदक रामदेव यादव विरुद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय भएको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनमा यस अदालतबाट (ने.का.प.२०६८, अड्क ८, निर्णय नं.८६६५ मा) “बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटबाट विवादको तथ्यभिन्न प्रवेश गरी थुनाको औचित्यको खोजी गर्ने कार्य गरिँदैन। बन्दीलाई थुनामा राखिएको कार्यको वैधतासम्म परीक्षण गरी गैरकानूनी तवरबाट थुनामा राखिएको देखिएमा बन्दीलाई त्यस्तो थुनाबाट मुक्त गर्न बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।” भन्ने सिद्धान्त प्रतिपादित भएको पाइन्छ। उक्त सिद्धान्तसमेतको परिप्रेक्ष्यमा यी निवेदकलाई ठगीको अपराध मुद्दामा अनुसन्धानको लागि अदालतको**

अनुमति लिई थुनामा राखेको र उक्त थुना कानूनसम्मत नै देखिँदा कानूनबमोजिम भएको कामकारबाहीबाट निवेदकको संविधान एवम् कानून प्रदत्त हकाधिकार हनन भएको स्थिति नदेखिने।

नेपालको संविधानको धारा १३३(२) र (३) अन्तर्गत यस अदालतलाई प्राप्त क्षेत्राधिकार साधारण क्षेत्राधिकारभन्दा पृथक् र विशिष्ट किसिमको असाधारण क्षेत्राधिकार हो। "यस अदालतको असाधारण क्षेत्राधिकार साधारण क्षेत्राधिकारको वैकल्पिक तथा परिपूरक क्षेत्राधिकार होइन। दुवै क्षेत्राधिकार परस्पर स्वतन्त्र क्षेत्राधिकार हुन्। साधारण क्षेत्राधिकार र असाधारण क्षेत्राधिकार समानान्तर क्षेत्राधिकार पनि होइनन् र असाधारण क्षेत्राधिकारले साधारण क्षेत्राधिकारलाई अनादर गर्ने, सीमित तुल्याउने, नियन्त्रण गर्ने, प्रतिस्थापन गर्ने वा कुनै किसिमबाट निस्तेज तुल्याउनेसमेत असाधारण क्षेत्राधिकारको मकसद हुन सक्दैन। साधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत उपचारको मार्ग प्रशस्त भएसम्म असाधारण क्षेत्राधिकार आकर्षित हुँदैन भन्ने रिट क्षेत्राधिकारसम्बन्धी अवधारणाको आधारभूत सिद्धान्तको रूपमा रहेको छ" भनी ने.का.प.२०६८, अड्क ८, निर्णय नं.८६६५ मा सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको अवस्थामा साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत मुद्दाको अनुसन्धानको लागि कानूनबमोजिम अदालतबाट म्यादथपको अनुमतिप्राप्त गरी Due Process को प्रक्रिया पूरा गरी निज निवेदकलाई अनुसन्धानको क्रममा थुनामा राखेको अवस्थालाई गैरकानूनी थुना भन्न नमिल्ने।

रिट निवेदक सरल राना मगरउपर ठगी मुद्दामा किटानी जाहेरी परी Due Process पूरा गरी निजलाई अनुसन्धानको लागि थुनामा राख्ने गरी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट म्याद थपको अनुमति भएबमोजिम रिट निवेदकलाई आवश्यक

अनुसन्धानका लागि थुनामा राखिएको अवस्थामा निजको थुना गैरकानूनी मान्न नमिल्ने भई निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: हिरा डंगोल

कम्प्युटर: सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७८ असोज १० गते रोज १ शुभम्।

५८

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा. श्री मनोजकुमार शर्मा, ०६७-८१-०८१२, जग्गा हक कायम खिचोला मेटाई दर्ता गरिपाउँ, मु.स. गर्ने जितेन्द्रमान सिंह भण्डारी वि. देवीमाया गुरुङ

नापी शाखा कास्कीको मिति २०५६।११।१७ को फिल्डबुक उतारको प्रमाणित प्रतिलिपिमा विवादित कि.नं.१०५६ अन्तर्गतको जग्गाको जग्गाधनीको महलमा वादी प्रतिवादी कसैको पनि नाम उल्लेख भएको नदेखिने। मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेशनको १ नं. मा भएको कानूनी व्यवस्था लाई हेर्दा उक्त ऐनमा भएको सातौँ संशोधन मिति २०३४।९।२६ पश्चात घरसारमा भएका अचल सम्पत्तिको हक हस्तान्तरणसम्बन्धी लिखतले कानूनी मान्यता नपाउने हुँदा प्रस्तुत मुद्दामा अचल सम्पत्तिको हक हस्तान्तरण सम्बन्धमा भएको घरसारको लिखतलाई प्रमाणको रूपमा लिई ग्रहण गर्न मिल्ने नदेखिने।

मालपोत कार्यालय कास्कीबाट छुट जग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी वादी प्रतिवादीहरूले दिएको निवेदनमा समेत उक्त जग्गामा हक दर्ता र तिरो भरोसम्बन्धी सुस्पष्ट प्रमाणको अभाव रही आफ्नो हकभोग कायम रहेको कुनै ठोस र वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरू पेस गर्न नसकेकोसमेतका आधार कारणबाट हकबेहकमा निर्णय गर्नका लागि नालेस गर्न जानु भनी सुनाउने गरी मिति २०६४।४।१६ मा मालपोत कार्यालय

कास्कीबाट भएको निर्णय कानूनअनुकूलको नदेखिँदा उक्त निर्णयसमेत कायम रहन नसक्ने भई विवादित जग्गामा वादी प्रतिवादी कसैको पनि हक कायम हुन नसक्ने भई फिराद दाबी नै खारेज गर्नुपर्नेमा मुद्दाको औचित्यभित्र प्रवेश गरी वादी देवीमाया गुरुङको हक कायम हुने ठहर गरी गरेको सुरु कास्की जिल्ला अदालतको मिति २०६३।११।२२ को फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०६६।८।२८ मा भएको फैसला त्रुटिपूर्ण देखिँदा सो उल्टी भई वादीदाबी नपुग्ने।

इजलास अधिकृत: नारायण सापकोटा

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

**इति संवत् २०७६ साल साउन १६ गते रोज ५ शुभम्।**

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०६७-CI-०८१३, टहरो पर्खाल हटाई चलन चलाइपाऊँ, मु.स.गर्ने जितेन्द्रमानसिंह भण्डारी वि. देवीमाया गुरुङ
- ०६७-CI-०८१४, खिचोला मेटाई हक कायम गरी दर्ता गरिपाऊँ, मु.स.गर्ने जितेन्द्रमानसिंह भण्डारी वि. देवीमाया गुरुङसमेत
- ०६७-CI-०८१५, जग्गा हक कायम खिचोला मेटाई दर्ता गरिपाऊँ, मु.स.गर्ने जितेन्द्रमानसिंह भण्डारी वि. लिलामणि भण्डारी
- ०६७-CI-०८१६, जग्गा हक कायम खिचोला मेटाई दर्ता गरिपाऊँ, लिलामणि भण्डारी वि. मु.स.गर्ने जितेन्द्रमानसिंह भण्डारी
- ०६७-CI-०८१८, घर टहरो (छाप्रो) हटाइपाऊँ, लिलामणि भण्डारी वि. देवीमाया गुरुङ

५९

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या. डा. श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७८-WH-०२६३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, धनबहादुर तामाङ वि. उच्च अदालत पाटनसमेत**

०७६-CR-११२६ को बैंकिङ कसुर मुद्दामा निवेदक प्रतिवादी धनबहादुर तामाङको नाममा गलत ठेगानामा म्याद तामेल भई रीतपूर्वक म्याद तामेल भएको नदेखिँदा गोरखापत्रमा मिति २०७६।१२।०३ मा प्रकाशन भएको निजको नामको सार्वजनिक सूचना, सो सूचनाबमोजिम प्रतिवादी उपस्थित नभएको भनी मुद्दाको कारबाही अगाडि बढाई प्रतिवादीलाई सुनुवाइको मौका नदिई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७७।०९।०७ मा भएको फैसला र सो फैसला अनुसार उच्च अदालत पाटनबाट चितवन जिल्ला अदालतका नाममा जारी गरिएको च.नं.३७४० मिति २०७८।०१।१५ को पत्राचार तथा सो पत्राचारबमोजिम चितवन जिल्ला अदालतबाट च.नं. १६९०८ मिति २०७९।०३।०६ मा जारी भएको कैदी पुर्जासमेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने। निवेदक प्रतिवादीउपर ०७६-CR-११२६ को उक्त बैंकिङ कसुर मुद्दामा पुनः कारबाही अगाडि बढाउनुपर्ने भएकाले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु नपर्ने। अब निवेदक प्रतिवादी कारागारमा रहेको हुँदा कारागार कार्यालय चितवनमा नै म्याद बुझाई उचित सुनुवाइको मौका दिई उच्च अदालत पाटनमा उपस्थित गराई थुनछेक आदेश गरी मुद्दाको कारबाही अगाडि बढाउनु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: विकाशकुमार रजक

**इति संवत् २०७९ साउन ११ गते रोज ४ शुभम्।**

६०

मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या. डा. श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७९-WH-०००१, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सुनिल थापाको हकमा कृष्ण तिमल्सीना वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत

फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा १५५ को सुविधा कस्तो अवस्थामा प्रदान गर्ने वा नगर्ने विषय सोही व्यवस्थामा हेर्दा, “कुनै कसुरमा पहिलो पटक कसुरदार ठहरी एक वर्ष वा एक वर्षभन्दा कम कैदको सजाय भएको मुद्दामा कसुरदारको उमेर, कसुरको गम्भीरता, कसुर गरेको तरिका, आचरणसमेतलाई विचार गर्दा कारागारमा राख्नु उपयुक्त नदेखिएमा तथा निजलाई छोड्दा सार्वजनिक शान्ति, कानून र व्यवस्थामा खतरा पुग्नेसमेत नदेखिएमा त्यसको कारण खुलाई अदालतले निजलाई कैदमा राख्नुको सट्टा त्यसबापत रकम लिई कैदबाट छाडिदिन उपयुक्त ठहर्‍याएमा कैदबापतको रकम तिरी कैद बस्नु नपर्ने गरी आदेश दिन सक्ने छ” भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ। फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ ले वैकल्पिक सजाय प्रणाली (alternative sentencing policy) लाई प्रवर्द्धन गरेको देखिन्छ। जसमा १ वर्ष वा सोभन्दा कम कैद सजाय भएको कसुरमा कैदबापत रकम तिर्न सकिने व्यवस्था गरेको छ। फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा १५५ को सुविधा दिने वा नदिने भन्ने विषय पहिलो पटकको कसुरमा कसुरदारको उमेर, कसुरको गम्भीरता, कसुरको तरिका, कसुरदारको आचरण, सार्वजनिक शान्ति, कानून र व्यवस्थामा पर्न सक्ने खतरासमेतलाई विचार गरी निर्णय गर्न सक्ने अदालतको स्वविवेकीय अधिकार रहेको देखिन्छ। उचित आधार कारण खुलाई अदालतले कैदबापतको रकम तिरी थुनामुक्त

गर्ने निर्णय गर्न सक्ने नै देखिन्छ। सोही अधिकारको प्रयोग गरी काठमाडौं जिल्ला अदालतले सोही ऐनको दफा १५५ को सुविधा दिन नमिल्ने आदेश भई फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा रिट निवेदक थुनामा रहेको देखिन्छ। यसरी फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा रिट निवेदक थुनामा रहेकोमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिल्ने नदेखिने।

दुई फरक मितिका वारदात भएका मुद्दाहरूमा एकै दिन कसुरदार ठहर गरी फैसला भएको आधारमा निवेदक प्रतिवादीलाई पटके कसुरदारको अर्थ गरी फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा १५५ को व्यवस्था आकर्षित नहुने भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७९।०३।२८ मा भएको आदेशको आधार र कारण मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्म उक्त आदेश उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने। अब निवेदक प्रतिवादी सुनिल थापाले मिति २०७९।०३।१६ मा दायर गरेको निवेदनमा कानूनबमोजिम ऐनको दफा १५५ को सुविधा दिने वा नदिने सम्बन्धमा उचित निर्णय गर्नु भनी विपक्षी काठमाडौं जिल्ला अदालतको नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत: विकाशकुमार रजक

इति संवत् २०७९ साउन ११ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. १०

६१

मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-CR-११०४, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. खुमबहादुर के.सी.

जाहेरवाला दिपेन्द्रप्रसाद जोशी र भरतबहादुर ऐरले जाहेरी दिँदा आफूहरूलाई प्रतिवादीले साउथ

अफ्रिका पठाइदिन्छु भनी रकम लिएको भन्नेसम्म लेखाएको र वैदेशिक रोजगारीमा पठाउनका लागि रकम लिनु दिनु भएको बेहोराको मिति २०७४।०४।०२ को लिखत कागजात हेर्दासमेत यी जाहेरवालाहरूलाई साउथ अफ्रिका पठाउने कुरा उल्लेख भएको पाइन्छ । जाहेरी कथन तथा कारोबार भएको लिखत एवम् मिसिल संलग्न समग्र प्रमाणबाट यी प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारीका लागि साउथ अफ्रिका पठाइदिने भनी रकम लिएको देखिने ।

वैदेशिक रोजगारीका लागि साउथ अफ्रिका लैजानका लागि भारतसम्म पुऱ्याएको भनी जाहेरवालाहरू र बुझिएका साक्षी प्रकाश ऐरले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको भए तापनि सो कुराको जिकिर जाहेरी दरखास्तमा नदेखिएको र अभियोग दाबीमा समेत उल्लेख भएको देखिँदैन । साथै जाहेरवालाहरू भारत बसेको तथ्य प्रमाणित हुने कुनै प्रमाण कागजातहरू वादी पक्षले पेस गर्नसकेकोसमेत देखिएन यसरी वादी पक्षबाट जाहेरवालाहरूलाई प्रतिवादीले विदेश पठाएको भन्ने तथ्य ठोस र शंकारहित प्रमाण पेस गरी प्रमाणित गर्न नसकेकोले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र दफा ४३ विपरीतको कसुर ठहर गरी सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम पूरै सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, प्रतिवादी खुमबहादुर के.सी.ले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय गर्ने अनुमति नलिई जाहेरवालाहरू दिपेन्द्रप्रसाद जोशी र भरतबहादुर ऐरलाई वैदेशिक रोजगारमा साउथ अफ्रिका पठाइदिन्छु भनी प्रलोभनमा पारी रकम बुझिलिई भनेबमोजिम वैदेशिक रोजगारीमा साउथ अफ्रिका नपठाएको उक्त कार्य वैदेशिक रोजगार

ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुर देखिन आएकोले प्रतिवादी खुमबहादुर के.सी.लाई सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम १ वर्ष ६ महिना कैद र रु.१,५०,०००।- जरिवाना हुने ठहर गरी र बिगोको हकमा अभियोग माग दाबीबमोजिम हर्जानासहितको बिगो प्रतिवादीबाट जाहेरवालाहरूले भरिपाउने ठहऱ्याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७५।०२।०१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : अनु याकामी

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

**इति संवत् २०७८ साल असार ११ गते रोज ६ शुभम् ।**

६२

**मा.न्या. श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-CR-११३८, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. खुमबहादुर के.सी.**

जाहेरवाला अजयदिप वली र शेरबहादुर ऐरले जाहेरी दिँदा आफूहरूलाई प्रतिवादीले साउथ अफ्रिका पठाइदिन्छु भनी रकम लिएको भन्नेसम्म लेखाएको र वैदेशिक रोजगारीमा पठाउनका लागि रकम लिनु दिनु भएको बेहोराको मिति २०७४।०४।०२ को लिखत कागजात हेर्दासमेत यी जाहेरवालाहरूलाई साउथ अफ्रिका पठाउने कुरा उल्लेख भएको पाइन्छ । जाहेरी कथन तथा कारोबार भएको लिखत एवम् मिसिल संलग्न समग्र प्रमाणबाट यी प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारीका लागि साउथ अफ्रिका पठाइदिने भनी रकम लिएको देखिने ।

वैदेशिक रोजगारीका लागि साउथ अफ्रिका लैजानका लागि भारतसम्म पुऱ्याएको भनी जाहेरवालाहरू र बुझिएका साक्षी प्रकाश ऐरले

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको भए तापनि सो कुराको जिकिर जाहेरी दरखास्तमा नदेखिएको र अभियोग दाबीसमेत उल्लेख भएको देखिँदैन । साथै जाहेरवालाहरू भारत बसेको तथ्य प्रमाणित हुने कुनै प्रमाण कागजातहरू वादी पक्षले पेस गर्न सकेकोसमेत देखिएन । यसरी वादी पक्षबाट जाहेरवालाहरूलाई प्रतिवादीले विदेश पठाएको भन्ने तथ्य ठोस र शंकारहित प्रमाण पेस गरी प्रमाणित गर्न नसकेकोले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र दफा ४३ विपरीतको कसुर ठहर गरी सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम पूरै सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, प्रतिवादी खुमबहादुर के.सी. ले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय गर्ने अनुमति नलिई जाहेरवालाहरू अजयदीप वली र शेरबहादुर ऐरलाई वैदेशिक रोजगारमा साउथ अफ्रिका पठाइदिन्छु भनी प्रलोभनमा पारी रकम बुझिलिई भनेबमोजिम वैदेशिक रोजगारीमा साउथ अफ्रिका नपठाएको कार्य वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुर देखिन आएकोले प्रतिवादी खुमबाहादुर के.सी. लाई सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम १ वर्ष ६ महिना कैद र रु.१,५०,०००।- जरिवाना हुने ठहर गरी र बिगोको हकमा अभियोग मागदाबीबमोजिम हर्जानासहितको बिगो प्रतिवादीबाट जाहेरवालाहरूले भरिपाउने ठहर्नाई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७५।०२।०१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : अनु याकामी

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७८ साल असार ११ गते रोज ६ शुभम् ।

६३

मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-CR-११७५, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. कुमार थापासमेत प्रतिवादी कुमार थापाले वैदेशिक रोजगारमा जापान पठाइदिने प्रलोभनमा पारी जाहेरवालाहरूबाट जम्मा रु.१०,४५,०००।- बुझिलिई कि प्वाइन्ट एजुकेसन कन्सल्टेन्सी प्रा. लि. को रसिद दिएकोमा वैदेशिक रोजगारमा नपठाई रकमसमेत फिर्ता नगरेकोले निज प्रतिवादीहरूलाई कारबाही गरिपाउँ भनी जाहेरवालाहरूले संयुक्त जाहेरी दिएकोमा जाहेरवालाहरू कोही पनि वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिँदैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ मा “कुनै काम, घटना वा अवस्थाका सम्बन्धमा भएको अनुसन्धान वा जाँचबुझको सिलसिलामा प्रचलित नेपाल कानूनबमोजिम तयार भएको कुनै लिखतमा उल्लेख भएको कुनै कुरा व्यक्त गर्ने व्यक्ति साक्षीको रूपमा अदालत उपस्थित भई बयान गरेमा प्रमाणमा लिन हुन्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको पाइन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा जाहेरवालाहरू न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई जाहेरी बेहोरा समर्थन हुने गरी बकपत्र गर्न सकेको देखिँदैन । जाहेरी दरखास्त घटनाको प्रथम सूचनासम्म हो । जाहेरीमा लेखिएको बेहोरा निजले न्यायाधिकरणमा आई सोहीबमोजिम बकपत्र गरेको अवस्थामा मात्र खम्बिर प्रमाणको रूपमा लिन मिल्ने हुन्छ । निजहरूले बकपत्र गरी जाहेरी समर्थन नगरेको अवस्थामा निजहरूको मौकाको जाहेरी दरखास्तलाई उक्त कानूनी व्यवस्थाको आधारमा प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने देखिएन । यसै गरी मिसिल संलग्न रहेका कि प्वाइन्ट एजुकेसन कन्सल्टेन्सी प्रा.लि.को नौ थान रसिदहरू प्रमाणको रूपमा पेस भएको देखिए

पनि उक्त रसिदहरूमा प्रयोजन खुलेको देखिँदैन । सो कम्पनी शैक्षिक परामर्श दिनेसमेत उद्देश्यले दर्ता भएको देखिन्छ । ती रसिदहरू वैदेशिक रोजगार प्रयोजनकै लागि रकम लिनु दिनु गरी काटिएको भनी केवल अनुमानको भरमा उक्त रसिदलाई प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्ने नदेखिने ।

प्रमाणको रूपमा पेस गरिएको ३ थान सम्झौतापत्रको लिखतहरूमध्ये विक्रम महतो र नारायण महतो यो मुद्दाको जाहेरवाला नभएकाले त्यसमा विवेचना गरिरहनुपर्ने देखिएन । जाहेरवाला सुरेश श्रेष्ठ र प्रतिवादी कुमार थापाबिच भएको भनिएको लिखतको बेहोरा हेर्दा कि प्वाइन्ट एजुकेसन कन्सल्टेन्सीका प्रबन्ध निर्देशक कुमार थापाले सुरेश श्रेष्ठलाई जापान (Agricultural Program) को लागि भनेर रु. १,००,०००/- हस्ते प्रेमकुमार श्रेष्ठबाट बुझ्निएँ भन्ने उल्लेख भए पनि उक्त लिखतमा कसैले सहीछाप गरेको पाइएन । उक्त लिखतको रकम लिएको प्रयोजनमा Agricultural Program भनी उल्लेख भएको र कसैको सहीछाप नभएबाट उक्त लिखतहरूबाट यी प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगारमा पठाउने प्रयोजनका लागि नै रकम लिएको भन्ने तथ्यगत रूपमा पुष्टि हुन सकेको नदेखिने ।

फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीहरूउपर अभियोग लगाउन मात्र पर्याप्त हुँदैन प्रमाण ऐन, २०३१को दफा २५ बमोजिम वादी पक्षमाथि अभियोग दाबी शंकारहित तवरबाट प्रमाणित गर्ने दायित्व पनि रहन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदक/वादी नेपाल सरकारले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा आफ्नो साक्षी उपस्थित गराई बकपत्र गराउन नसकेको, पेस गरिएको सम्झौतापत्रको लिखतमा प्रतिवादीहरूको सहीछाप परेको नदेखिएको, उक्त रकम प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगारमा पठाउने प्रयोजनकै लागि लिएको भन्ने पनि नदेखिएको समेतका

आधार प्रमाणबाट यी प्रतिवादीहरू कुमार थापा, श्रीपाल उंगोल र मनिता श्रेष्ठलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिने ।

तसर्थ, यी प्रतिवादीहरूउपरको अभियोग दाबी पुष्टि हुने प्रमाण वादी नेपाल सरकारले पेस गर्न सकेको नदेखिँदा वादी दाबी नपुग्ने ठहर गरी यी प्रतिवादीहरू कुमार थापा, श्रीपाल उंगोल र मनिता श्रेष्ठले अभियोग दाबीबाट सफाइ दिएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरण काठमाडौंको मिति २०७५।०५।०३ को फैसला मिलेको नै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक/वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : अनु याकामी

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

**इति संवत् २०७८ साल असार ११ गते रोज ६ शुभम् ।**

६४

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७७-CR-०३३२, लागु औषध (ब्राउन सुगर), नेपाल सरकार वि. युदिन भन्ने दुर्गा भट्टराई**

प्रतिवादीको साथबाट २ ग्राम ५ मिलिग्राम लागु औषध बरामद भई यी प्रतिवादीले लागु औषध कारोबार गरेकोमा इन्कार रही सेवनकर्ता भएकोमा मौका तथा अदालतमा साबित रही निजले सेवन गर्ने प्रयोजनका लागि भारत सुनौलीबाट खरिद गरी ल्याई नोटमा बेरी राखेको अवस्थामा बरामद भएको हो भनी स्वीकार गरेको तथ्यलाई अभियोजन पक्षबाट निज लागु औषधको कारोबारी हुन, कारोबारमा यी प्रतिवादीको यस्तो भूमिका थियो वा निज प्रतिवादीले यस यससँग यति कारोबार गरेका छन् भन्ने कुनै वस्तुनिष्ठ, विश्वासिलो प्रमाण पेस गर्न सकेको मिसिलबाट देखिन नआउने ।

अभियोग पत्र आफैँमा फौजदारी कसुर प्रमाणित गर्ने अकाट्य प्रमाण हुन सक्दैन । अभियोग पत्रमा प्रतिवादीउपर लगाइएको कसुरस्वतन्त्र प्रमाणबाट पनि पुष्टि हुनुपर्दछ । कसुरदारको संलग्नतालाई अन्य वस्तुनिष्ठ स्वतन्त्र प्रमाणले पुष्टि नगरेको अवस्थामा केवल अभियोगपत्रमा कसुर कायम गरी सजाय मागदाबी भएकै आधारमा अदालतले पनि शंका र अनुमानको भरमा कसैलाई पनि सजाय गर्न मिल्दैन । फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीउपरको अभियोग शंकारहित तवरबाट पुष्टि हुनुपर्दछ र प्रमाणको भार वादी पक्षमाथि रहन्छ भन्ने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्त तथा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा "फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुनेछ ।" भन्ने व्यवस्थासमेतको परिप्रेक्ष्यमा यी प्रतिवादी स्वयमले आफू लागु औषधको कारोबार गर्ने नभई विगत दुई वर्षदेखि सेवन गर्दै आएको लागु औषधको सेवनकर्ता भएको र आफैँले सेवन गर्न उक्त लागु औषध खरिद गरी साथै राखेको अवस्थामा बरामद भएको हो भनी सेवनकर्ता रहेकोमा साबिती रही गरेको बयान बेहोरालाई अभियोजन पक्षले अन्यथा हो भनी पुष्टि गर्न नसकेको अवस्थामा यी प्रतिवादीबाट बरामद भएको परिमाणसमेतलाई विचार गर्दा अभियोजनकै आधारमा लागु औषधको कारोबारी रहेछन् भनी मान्न मिल्ने अवस्था नदेखिएकाले कारोबारी हुन् भनी सजाय गर्नु न्यायोचित नहुने देखिँदा सुरु अभियोग दाबीबमोजिम कारोबारतर्फ पनि सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन र पुनरावेदनलाई समर्थन गर्दै विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताले गर्नुभएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, यी प्रतिवादी युदिन भन्ने दुर्गा भट्टराईले अभियोग दाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) को कसुरसम्म गरेको देखिँदा

सोही ऐन दफा ४(ड) र (च) को कसुरमा दफा १४(१) (छ)(१) बमोजिम ५ वर्ष कैद र रु.५,०००।- जरिवाना गर्ने गरेको सुरु पाल्पा जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी सोही ऐनको दफा ४(छ) को कसुरमा ऐ. ४(१)(ड) बमोजिम एक वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७५।१।२१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्‍छ । पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): माधव भण्डारी

कम्प्युटर: प्रेम थापामगर

**इति संवत् २०७८ साल असार २७ गते रोज १ शुभम् ।**

६५

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७७-CR-०६१५, लागु औषध (ब्राउन सुगर), नेपाल सरकार वि. जेनराज भन्ने जंगली शाही**

प्रतिवादीबाट बरामद भएको लागु औषधको परिमाण हेर्दा बिक्री वितरणको प्रयोजनका लागि हुनसक्छ भनी वादी पक्षले अनुमान गरे पनि त्यस्तो अनुमानलाई तथ्यमा परिणत गर्ने सो वस्तु बिक्रीको उद्देश्य रहेको थियो भनी अन्य स्वतन्त्र परिस्थितिजन्य प्रमाणद्वारा पनि पुष्टि भएको हुनुपर्छ । लागु औषध त्यसको कारोबारीबाट मात्र बरामद हुने नभई त्यसको सेवनकर्ताबाट पनि बरामद हुनसक्छ भन्ने आधारमा कानूनमा सेवन र कारोबार भनी अलग अलग व्यवस्था गरेको पाइन्छ । यसै सन्दर्भमा पुनरावेदक प्रतिवादी सागर कार्की विरुद्ध प्रत्यर्थी वादी प्र.स.नि. रुद्रप्रसाद न्यौपानेसमेतको प्रतिवेदनले नेपाल सरकार भएको लागु औषध खैरो हेरोइन मुद्दामा यसै अदालतबाट ने.का.प., २०७६, अड्क २, नि. नं. १०२०२ मा "लागु औषधको सेवन तथा ओसारपसार एउटै अपराध नभई भिन्न प्रकृतिका अपराध हुन् । सेवन गर्ने गरेको

तथ्य स्थापित भएको भन्ने आधारमा ओसारपसार, बिक्री वितरणको कसुर स्थापित हुने होइन। व्यापारिक कारोबार प्रकृतिको बिक्री वितरणको उद्देश्य प्रमाणित हुन आवश्यक हुने।" भन्ने प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको परिप्रेक्ष्यमा प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीबाट बरामद वस्तु कसलाई के-कति मूल्यमा, के कति मात्रा र कहाँ बिक्री गर्ने उद्देश्य राखेका थिए र त्यसका लागि नापतौल गर्ने साधन के थियो, सेवनबाहेक अन्य प्रयोजनको लागि प्रतिवादीको समन्वय रहनुका साथै खरिद बिक्री गरेको भन्ने तथ्य शंकारहित तवरले पुष्टि हुने किसिमका प्रमाणका कडीहरू मिसिल संलग्न रहे भएको नदेखिएको अवस्थामा कुनै व्यक्तिबाट जतिसुकै मात्रामा लागु औषध बरामद भएकै मात्र आधारमा बिक्री वितरणको कारोबारी हुन भनी कसुरदार कायम गर्नु न्यायसङ्गत हुने नदेखिँदा यी प्रतिवादीलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत

हुन नसकिने।

तसर्थ, यी प्रतिवादी जेनराज भन्ने जंगली शाहीलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ)(१) बमोजिम ५ वर्ष कैद र रु.५०००१- जरिवाना गर्ने गरेको सुरु जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला उल्टी गरी यी प्रतिवादीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(छ) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) (ड) बमोजिम १ (एक) वर्ष कैद र रु.१०,०००१- (दश हजार) जरिवाना हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत सुर्खेत, जुम्ला इजलासबाट मिति २०७७।३।२ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): माधव भण्डारी  
कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

**इति संवत् २०७८ साल असार २७ गते रोज १ शुभम्।**